कुलटा

राजेन्द्र यादव की लम्बी कहानी

उपन्यास :

प्रेत बोलते हैं

उखड़े हुए लोग

शह और मात (प्रेस में)

कहानी संग्रह :

रेखाएँ, लहरें और परछाइयाँ

देवताओं की मूर्तियाँ

खेल खिलौने

जहाँ लक्ष्मी क़ैद है

प्रश्नवाचक पेड़

संस्मरण :

चैखव : एक इण्टरव्यू

अनुवाद :

प्रथम प्रेम—तुर्गनेव

वसन्त प्लावन—तुर्गनेव

चैखव के तीन नाटक

कुलटा

राजेन्द्र यादव

विश्व साहित्य
राजामण्डी आगरा

मूल्य : दो रुपये पच्चीस नये पैसे

प्रकाशक : विश्व साहित्य
५।२६१, राजामण्डी, आगरा
मुद्रक : भार्गव प्रेस, बाई का बाग, इलाहाबाद

सर्वाधिकार लेखक के अधीन

नरेन्द्र सहगल को

स्वर्गीय श्री आर० सहगल की पुण्य-स्मृति में

विश्वास करो, आत्मीयता के एकांत क्षणों को कभी मैंने धोखा नहीं दिया।

""मजबूरी के लिए थोड़ी ढिलाई क्या तुम्हारे मन में नहीं है ?

....

५-ए ग्रीक चर्च रो — रा० या०

कलकत्ता—२६ — होली : ७-३-५८

कुलटा

मिसेज़ तेजपाल कुलटा थीं।

बीनू के मुँह से जब मैंने यह सुना कि मिसेज़ तेजपाल कुलटा हैं तो सचमुच दिल को बड़ा धक्का लगा। मैं तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि ऐसी सुन्दर, हँसमुख और सौम्य-शिष्ट महिला भी 'कुलटा' हो सकती है। कैसी मस्त थीं, कैसी अच्छी तरह मिलतीं, कितनी आत्मीयता से गप्पें लड़ाती थीं वे। मुझे क्या पता था कि वे वास्तव में हैं क्या ? दाँतों में अगर-मिस्सी लगी होती, काजल की लम्बी-लम्बी लकीरें आँखों से बाहर खिंची होतीं, पाउडर पुते गालों पर रूज़ लगा होता, पान से होंठ और खासतौर से मुँह के कोने रंगे होते, पत्तीदार बालों के नीचे ईयरिंग झूल रहे होते और भौहें मटका-मटका कर बातें करतीं—तब तो कोई बात ही नहीं थी। पहली मुलाक़ात में ही मैं भाँप जाता कि वे कुलटा हैं। लेकिन अब बीनू की बात से मुझे दुख कम,

आश्चर्य ही अधिक था। मानना पड़ता है कि मिसेज़ तेजपाल ग़ज़ब की अभिनेत्री रही होंगी (कालेज के नाटकों में वे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री मानी जाती थीं, यह उन्होंने खुद बताया था) तभी तो उन्होंने मुझे क़तई ऐसा सन्देह नहीं होने दिया। उन दिनों उन्हें लेकर जो-जो बातें मेरे दिमाग़ में आया करती थीं, वे बिल्कुल ही दूसरी तरह की थीं।

फिर भी बीनू ने मुझे जो कुछ बताया उसे मान लेने के सिवा कोई चारा नहीं है....वह अलसेशियन कुतिया, वह गोलियों का फूल, वह गाने की आवाज़....वे सब झूठे थे; असली बात का पता तो अब चला है....

साल भर बाद ही जब कम्पनी ने दुबारा सैशल-ट्रेनिंग के लिए कलकत्ता भेज दिया तो क़दम खुद-बखुद कॉफ़ी-हाउस की तरफ़ उठ गये। पिछले दिनों कलकत्ते के अलग-अलग हिस्सों में चार साल रहा था। उन दिनों कोई भी दिन नहीं गया जब कॉफ़ी-हाउस जाना न हुआ हो। अभ्यास ही कुछ ऐसा हो गया था कि शहर के चाहे जिस हिस्से में रहूँ, रोम की तरह सारे रास्ते मुझे कॉफ़ी-हाउस ही ले जाते। यह 'मिलन-मन्दिर' था।

घुसते ही निगाह मेजर तेजपाल पर गई। हाँ, वे ही तो थे। आइनों-जड़े खम्भे की तरफ़ मुँह और दरवाज़े की तरफ़ पीठ किये वे ही बैठे थे। लेकिन कपड़े साधारण नागरिकों के थे। दोनों हाथ पंजों तक अपनी पैण्ट की जेबों में अटकाये, कुहनियाँ इधर-उधर निकाले, वे शीशे में देख-देखकर इस तरह हँस रहे थे जैसे कोई उनकी बग़ल में गुदगुदी कर रहा हो। एक क्षण को मैं झिझका—शायद वे न हों, लेकिन सामने शीशे में मुझे अपनी परछाईं के साथ-साथ उनकी

परछाईं भी दिखाई दे रही थी। हाँ, तेजपाल ही तो हैं। मगर वे और कॉफ़ी-हाउस में! सो भी ऐसे ढीले-ढाले बैठकर यों हँसते हुए। जैसे अपने मन से यही बात हटाने के लिए मैंने गर्दन ऊँची करके सारी मेज़-कुर्सियों पर निगाह डाली। इसे तो वे दुनिया भर के आवारा और लफंगों का अड्डा कहा करते थे।

मैं पास जाकर खड़ा हो गया और वे उसी तरह शीशे में अपने आपको देख-देखकर हँसते रहे। सामने मेज़ की काली सतह पर आधा कप कॉफ़ी और खाली प्लेट रक्खी थी। पास से देखा—हाँ, वही जहाँगीरी ढंग की कुछ-कुछ सफ़ेदी लिये नीची-नीची क़लमें और टेलिफ़ोन के चोंगे जैसी भारी-भारी मूँछें। और इस सब काले रंग के बीच से झकझकाता लाल-सुर्ख़ रंग। मेरा खयाल था कि वे उछलकर खड़े हो जायेंगे और अपनी उसी भव्य अदा से हाथ मिलायेंगे, और हाल-चाल पूछेंगे। लेकिन जब वे यों ही बैठे रहे तो मैंने पूछा: "मैं यहाँ बैठ जाऊँ?"

वे उसी अलमस्त भाव से हँसते रहे। दूर औंधी थाली को छाती से चिपकाये अँगुलियों से उन पर बहुत हल्के-हल्के ताल देता, लालपेटी-वाला बैरा उन्हें देख-देखकर मुस्करा रहा था। हो सकता है यह तेजपाल की शक्ल से मिलती-जुलती शक्ल के कोई और साहब हों। मैंने फिर पूछा: "यह कुर्सी क्या खाली है?"

उन्होंने बिना सिर घुमाये ही, मानो मुझे शीशे में देखकर कहा: "बैठो!" उनकी आवाज़ ऐसी थी जैसे वे बैरे से कह रहे हों—पानी लाओ। मुझे बुरा लगा। मन हुआ कहीं और बैठ जाऊँ। लेकिन हॉल भरा था। मेज़ पर किताब रखते हुए मैंने फिर उन्हें ग़ौर से देखा कि शायद वे अभी भी पहचान लें। वे यों ही बेख़बर शीशे में कुछ देख-देखकर मुस्कराते रहे। नहीं, ये मेजर तेजपाल नहीं हैं। मैंने कॉफ़ी

मँगाई। शक्ल की समानता पर ऐसे भ्रम कई बार हो जाते हैं। अचानक उन्होंने मेरी किताब उठा ली और उसे आँखों के बिल्कुल पास ले जाकर उलट-पलटकर इस तरह देखने लगे जैसे सूँघकर किताब की क़िस्म का पता लगा रहे हों। मुझे हँसी आ गई। जाने कैसे उन्होंने जान लिया कि मैं हँस रहा हूँ। झटके से मेरी ओर देखा और आँखें मिलते ही हम दोनों मुस्कराये। बीयर के अन्दाज़ में गिलास के पानी को पीते हुए मैंने पूछा: "आप क्या इस शहर में नये आये हैं?"

उन्होंने किताब जहाँ से उठाई थी वहीं रख दी और फिर ठोड़ी उठा-उठाकर शीशे में इस तरह देखने लगे मानो सोच रहे हों कि शेव करा डाली जाय या नहीं। मेरी बात से बिना चौंके बोले: "यह खयाल आपको कैसे हुआ?"

"यों ही, मुझे ऐसा लगा।" इस प्रश्न का जवाब और क्या हो सकता था।

"आखिर लगने की वजह?" इस बार जब उन्होंने सख़्ती से पूछा तो मैंने चौंककर उनकी ओर देखा। आँखें मुझ पर टिकी थीं। उनकी आँखों के डोरों में एक ऐसी अजब क़िस्म की चमक कौंधी कि मेरी नस-नस सिहर उठी। घबरा कर मैंने सहायता के लिए इधर-उधर देखा।

"कोई खास वजह तो नहीं।" मुश्किल से हकलाकर मैं बोला।

"आपको मुझ में ऐसी क्या खास बात लगी कि मैं नया हूँ।" इस बार उनकी आँखों का व्यास फैल गया था और आवाज़ में एक ऐसी कड़क थी कि अगर मैंने जवाब नहीं दिया तो वे उछलकर मेरा टेंटुआ पकड़ लेंगे। मैंने चुपचाप किताब उठाई और एक नई खाली हुई कुर्सी पर चला गया। जैसे कुछ हुआ ही न हो, ऐसी तटस्थता से वे बड़े अर्थ-भरे ढंग से मुस्कराते रहे—मानो कह रहे हों: 'हुँह, कैसे-कैसे बेवकूफ़ आ टकराते हैं।'

....हुगली के किनारे दौड़ती सरदारजी की बस से भागती रेलिंग के पार जहाज़ों को देखता हुआ मैं अपने आप से बोला : "थे तो ये मेजर तेजपाल ही, लेकिन इन्होंने मुझे पहचाना क्यों नहीं ? इस साल में मैं आखिर कितना बदल गया होऊँगा ?" इस प्रश्न के साथ ही मन में ऐसी बेचैनी हुई कि वहीं मैंने उन्हें अपना नाम क्यों नहीं बता दिया। कम से कम मुझे अपना चेहरा तो शीशे में देख ही लेना चाहिए था। शीशे की खोज में इधर-उधर आँखें घुमाईं, और उतरते समय उस तस्वीर—जिसमें गुरु गोविन्दसिंह हाथ पर बाज़ बैठाये थे—के नीचे लगे शीशे में अपनी शक्ल पर निगाह पड़ी तो मैं ठिठक गया। नहीं, बदला तो शायद नहीं हूँ! मैंने बालों पर हाथ फेरा और मुस्कराया, फिर अपने पीछे एक और चेहरा देखकर याद आया कि मेरी यह हरकत भी तो मेजर तेजपाल जैसी ही है।

बात मन में कोंचती रही। घर आया तो बीनू देखते ही बोली : "मैं जाने कब से बैठी राह देख रही हूँ। अपना पुलोवर ज़रा पहनकर देख ले। पता चले, कितना घटाना-बढ़ाना है।" बिना मुझे साँस लेने का अवसर दिये उसने झट मेज़ के नीचे रक्खी प्लास्टिक की डोलची से पुलोवर निकालकर मुझे पहनाना शुरू कर दिया। बोली : "हाथ ऊपर कर ...."

हैण्ड्स-अप किये मैं सोचता खड़ा रहा और बीनू सलाई समेत कभी मेरी पीठ और कभी छाती पर पुलोवर नापते हुए खींच-खोंचकर मुग्ध आँखों से उसकी डिज़ाइन देखती रही। पूछा : "बड़ा खुश है। कोई मिल गया था क्या ? किस-किस से मिल आया ?"

मैंने एक दम उमँगकर कहा : "बीनू, आज काफ़ी-हाउस में मेजर-तेजपाल मिल गये थे।"

"हैं, मेजर तेजपाल ?" बीनू अपना पुलोवर भूल गई : "ये तो

कहते थे कि वे राँची में हैं।"

"राँची! राँची में क्यों?"

"तुझे नहीं मालूम?.अरे, उनका तो दिमाग़ ख़राब हो गया था न!"

"दिमाग़!" मुझे फिर कॉफ़ी-हाउस की याद हो आई। ऐसे में भी बीनू से चुहल किये बिना मुझ से नहीं रहा गया : "मिलिटरी वालों का भी दिमाग़ होता है क्या? अच्छा, क्यों....कैसे हो गया?"

बीनू ने मज़ाक़ पर ध्यान न देकर कमरे से बाहर बरामदे में देखते हुए कहा : "लोग कहते हैं भई, हमें तो ठीक-ठीक पता नहीं। मिसेज़-तेजपाल की वजह से ही उनका दिमाग़ बड़ा डिस्टर्ब्ड रहता था।" फिर चौंककर उसने पूछा : "अच्छा, क्या कह रहे थे? ठहरे कहाँ हैं? मैं इनसे कहूँगी, वो हमसे मिलने नहीं आये तो क्या है, हम ही देख आयें। कैसे हो गये हैं।"

अब मैंने बताया कि उन्होंने तो मुझे पहचाना भी नहीं, लेकिन मिसेज़ तेजपाल ने ऐसा क्या कर डाला था कि उनका दिमाग़ ख़राब हो गया तो बीनू उदास हो गई। घुटने पर बुनाई को रखकर उसे एक जगह दबा-दबाकर कुछ सोचती रही, फिर बड़े बेमालूम ढंग से गहरी साँस लेकर ज़रा ओंठ सिकोड़ती हुई उपेक्षा से बोली : "अरे, ऐसी ही थीं वो भी।"

"तू तो उनकी भक्त थी पहले, और अब कहती है कि ऐसी ही थीं!" मेरे आगे वह कंधों से कटे बालों वाला गोरा-गोरा गोल चेहरा घूम गया। बीनू के नाराज़ होने की बात मैं भाँप गया, लगा तभी वह कतरा रही है। मन और भी बेचैन हो उठा।

जैसे मैंने उसकी कोई कमज़ोर नस पकड़ ली हो, कुछ इस तरह तड़पकर वह बोली : "अब मुझे क्या पता था कि भीतर से वो कैसी

है ? कुलटा कहीं की !"

अत्यन्त नये फ़ैशन के ड्राइंगरूम में नाईलोन की बैंगनी साड़ी पहने कर्नल की पत्नी बीनू के मुँह से यह ठेठ निम्न-मध्यवर्गीय शब्द सुनकर मुझ से मुस्कराये बिना नहीं रहा गया।

बैरे ने पूछा : "साहब, चाय यहीं लगेगा ?"

उसे टाला : "हाँ, यहीं ले आओ।" फिर बीनू से बोला : "तुम भी जब कोर्ट-मार्शल करती हो तो सीधी गोली ही मारती हो। बीच का कोई रास्ता ही नहीं छोड़तीं ? हमें तो उनमें कुछ कुलटापन दीखा नहीं।"

बीनू नाराज़ हो गई। ऊन के गोले के चारों ओर सलाई समेत पुलोवर लपेटकर थैले में ठूँसती बोली : "तुम्हें क्यों दीखता ? तुमसे घुल-घुलकर बातें जो करती थी, हुगली पर जाकर।"

"तुम औरतें बस, एक जैसी ही होती हो।" मैंने अंग्रेज़ी में कहा। महिलाएँ शब्द कठिन हो जाता और औरतें बाज़ारू। "तुम्हारी राय क्या ठीक है ?"

"अच्छा, नहीं ठीक है बस।" उसने सिर झटक कर गाल फुला लिये।

यह बीनू की पुरानी आदत है। विरोध की कोई भी बात सुनकर इसी तरह कहकर सिर मोड़कर बैठ जाती है, कोने में देखती रहती है, देखती रहती है। तभी अचानक उसे कोई ऐसी बात याद आ जाती है कि उसे कहने के लिए झटककर घूम पड़ती है। उसे ध्यान ही नहीं रहता कि वह अभी-अभी गुस्सा थी। मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि अभी घूमकर वह फिर मेजर तेजपाल की बात पूछेगी, यह बात अभी पूरी कहाँ हुई। तभी बरामदे में घण्टी बजी—घनन्-घनन्।

और मुझे सहसा ऐसा लगा जैसे अभी गोमेज़ के दरवाज़ा खोलते

ही मिसेज़ तेजपाल खिलखिलाती हुई, अपने बाल झटकतीं इस तरह झपटती चली आयेंगी जैसे उन्हें किसी ने धकेल दिया हो। वहीं से कहती आयेंगी : "आज तो मज़ा आगया मिसेज़ धीर!" और फिर सारा फ्लैट एक अजब चहचहाहट से भर उठेगा। वे झूम-झूमकर आज मिलनेवाले दिलफेंकों की हरकतें बयान करेंगी।

लेकिन वह नीचे के फ्लैट का बैरा था। "मेम सा'ब, को कर्नल सा'ब, नीचू में बुलाता है। बोला है, छोटा सा'ब होगा तो उसकू बी लायेगा। सब लोग नीचू है।"

मैंने बीनू से मना कर दिया : "आज बहुत थक गया हूँ, सफ़र की थकान है। तू जा।"

असल में मेरा दिमाग़ बुरी तरह बौखला उठा था। मुझे रह-रहकर मिसेज़ तेजपाल की याद आ रही थी। सचमुच, उन्हें मैं कैसे यों एकदम भूल गया? मैं चुपचाप चाय पीता रहा। पता नहीं क्या कहकर बीनू नीचे चली गई थी। विश्वास नहीं होता कि मैं कहीं एक साल बाहर रहा हूँ। आज भी मिसेज़ तेजपाल का चेहरा उभर-उभर कर सामने आरहा है। उनके नाम के साथ ही मुझे याद आता है—लाल नम्दे के चौकोर टुकड़े पर बना 'गोलियों का फूल' और कलाई में चमड़े का फ़ीता लपेटे अपनी कमर से ऊँची अलसेशियन कुतिया के पीछे कमान बनी खिंचती-सी भागती जाती मिसेज़ तेजपाल की गुनगुनाती मूर्ति.... वह रह-रहकर अपने बालों को पीछे झटकना....बीनू की बात मानने को भी मन नहीं करता और दिल के भीतर यह भी मैं जानता हूँ कि कहीं उसकी बात में वज़न है....मुझे लगा जैसे वही फ्लैट है, वही लोग हैं और वही दिन हैं....इस कम्बख़्त बीनू ने यह फ्लैट भी तो उसी तरह का लिया है, सब कुछ उसी तरह सजा रक्खा है।

यों तो सारे ब्लॉकों के फ्लैटों की डिज़ाइनें एक जैसी हैं लेकिन पहली बार जब मैं मेजर तेजपाल के फ्लैट में गया था तो कितना फ़र्क़ लगा था कि दीवारें, बरामदा, कमरे, एक डिज़ाइन के होकर भी, सब कुछ वे ही नहीं हैं जो नीचेवाले हमारे फ्लैट के हैं।

....उनके यहाँ हमारा खाना था।

हमने घण्टी बजाई। मैं, बीनू और रणधीर—तीनों सीढ़ियों पर खड़े थे। इंतज़ार था कि दरवाज़े के धुँधले बूँदोंवाले काँच के पीछे छाया दिखाई दे और किवाड़ खुलें। कोई नहीं आया। बैरा व्यस्त होगा। वैसे भी यहाँ का यह क़ायदा है। नीचे दूर से देख लेने पर भी दो-तीन बार घण्टी बजानी पड़ सकती है। क्योंकि किवाड़ बैरा ही खोलता है। दूसरी बार घण्टी बजाई तो बैरे ने झपटते हुए किवाड़ खोले। मैं नवीं बार नेम-प्लेट को पढ़ रहा था। पूछा : "हैं?"

"हाँ सा'ब !" रणधीर के लिए उसने एड़ियाँ ठोक कर सैल्यूट झाड़ा और अदब से एक ओर हट गया। हमलोग बरामदे में आगये। ड्राइंग-रूम में घुसते हुए जिस चीज़ पर मेरी निगाह सबसे पहले पड़ी थी, वह थी दो दरवाज़ों के बीच की जगह में ऊपर लगा हुआ फूल। दोनों दरवाज़ों के ठीक ऊपर बारहसिंघों के दो बड़े सिर लगे थे। बीच के फूल को देखते ही जैसे बिजली का धक्का लगा और मन एक अजीब दहशत से भर उठा। फिर भी मैं उसे कुछ क्षण देखता रहा। छः इंच से लेकर आधे इंच लम्बी, बन्दूकों और पिस्तौलों की गोलियों को नम्दे के सुर्ख़ टुकड़े पर जमाकर यह डिज़ाइन बनाई गई थी। पीले-पीले पीतल के शरीर और सिलेटी जस्ते की चोंचें। गोलियों पर पालिश भी होती होगी, तभी तो चमक रही थीं....गोलियों का फूल....एकदम कौंधा, कहीं कोई

इनमें पलीता न लगादे....अँधेरे में आतिशबाज़ी के अनार की तरह यह फूल मेरे सामने फूटता हुआ नाचने लगा ....फ्लावर आफ़ बुलेट्स....

मेजर तेजपाल लपककर कमरे से निकल आये थे। वही लहीम-शहीम शरीर और कुछ-कुछ सफ़ेदी लिये जहाँगीरी क़लमें, टेलिफ़ोन के चोंगे जैसी मूँछें। खिल कर बोले: "हल्लो, मैं सोच ही रहा था कि बैरे को भेजूँ। रुद्रा नहीं आया अभी।"

"हमें देर तो नहीं हुई?" बीनू ने घड़ी देखी। यों हमलोग ठीक टाइम देखकर ही चले थे।

"नहीं, नहीं।" फिर बरामदे में पड़ी बेंत की कुर्सियों की ओर इशारा करके कहा: "यहाँ बैठेंगे या भीतर...., अच्छा चलिए भीतर ही बैठें...."

बीनू ने भीतर झाँकते हुए कहा: "जहाँ चाहें, मिसेज़ तेजपाल किधर गईं?"

"जी, वो किचिन में हैं, अभी आती हैं।" पर्दा एक ओर हटाकर वे खड़े होगये। मैंने ध्यान दिया, दोनों हथेलियों को मिलाकर हाथ जकड़े खड़े रहना उनकी आदत थी, मानों ठण्ड लग रही हो, या हथेलियों के बीच में दबाकर कुछ तोड़ रहे हों। मुझे ऐसा लगा जैसे यह आदत मैंने किसी और की भी देखी है। दिमाग़ टटोलता रहा, लेकिन वहाँ तो 'गोलियों का फूल' घूम रहा था।

भीतर क़दम रखते ही किसी चीज़ से मेरा पाँव टकराया। देखा तो सकपका गया। घड़े के बराबर के आकार का शेर का सिर मुँह फाड़, आँखें चमकाता रक्खा था और उसकी गहरी कत्थई धारियों वाली सुनहरी खाल ग़लीचे पर बिछी थी—मानों हाथ-पाँव फैलाये लेटी हो। उसके चारों ओर लाल-ग़लीचे पर चाकलेटी सोफ़ा-सेट रक्खा था। कोने में मेज़ पर निकिल के चमचमाते फ़ोल्डिंग-फ्रेम में एक ओर

कैडेट तेजपाल और दूसरी ओर डिग्री हाथ में लेकर गाउन ओढ़े मिसेज़-तेजपाल की फ़ोटो थी। तेजपाल की मूँछें ऐसी तनी थीं जैसे किसी ने नाक के नीचे सीधी पेंसिल रखदी हो। रेडियोग्राम हल्के-हल्के कोई साज़ बजा रहा था।

ड्राइंग-रूम में बैठे-बैठे बड़ी बेचैनी हो रही थी। यहाँ कुछ ऐसा तनाव था कि इच्छा होती थी, उठकर बाहर बरामदे में जाकर खुली साँस लूँ लेकिन वहाँ वह 'गोलियों का फूल' था, जिसे देखने की व्यग्रता भी होती थी और देखकर डर भी लगता था। मेजर तेजपाल ने एक टाँग सीधी तानकर मानो बड़े परिश्रम से सख्त फ़ौजी पतलून की जेब से सिगरेट-केस निकाला और हमें बारी-बारी से ऑफर करते हुए शिष्टता-पूर्वक बीनू से कहा : "विद् योर परमीशन !"

"जी हाँ, जी हाँ !" बीनू बोली। कन्धे और कुहनी पर साड़ी का पल्ला लेती वह उठ खड़ी हुई : "मैं अभी आरही हूँ। ज़रा मिसेज़ तेजपाल की मदद करूँ।"

"नहीं जी, बैठिए। काम तो खत्म हो गया सब।" तेजपाल बोले। उनके हाथों और अँगुलियों पर मोटे-मोटे बाल थे।

लेकिन बीनू चली गई। रह-रहकर मन में सवाल उठता रहा। नीचे से हम जो गाने निरन्तर सुनते रहते हैं वे क्या सचमुच इसी फ़्लैट में रहनेवाला कोई गाता है? कौन गा सकता है ऐसे में....यह शेर, यह गोलियों का फूल....

"कैसा लग रहा है कलकत्ता आपको?" तेजपाल ने एक ओर होंठ सिकोड़े और धुएँ की धारी छोड़ी। मैंने देखा, उनका चेहरा सचमुच ऐसा है जिसे 'रौबीला चेहरा' कहते हैं।

"ठीक ही है जी। मुझे तो यहाँ अभी कोई ऐसा खास काम है नहीं। रिपोर्ट बनानी होती हैं, सो यहाँ बैठकर टाइप करलो या वहाँ।"

"और शायरी ?" इस बार तेजपाल मुस्कराये।

"वह भी कभी-कभी चल जाती है। फ़ुरसत की चीज़ है वह तो।" मैं उनके पूछने के ढंग पर मन-ही-मन हँसा, मानो पूछ रहे हों, वह जो कभी-कभी तुम्हारे सिर में दर्द हो जाता है उसका क्या हाल है ?

"अरे हाँ, मेजर तेजपाल, क्या होगया था दोपहर को ? बड़ा शोर था !" रणधीर ने सहसा पूछा।

"ओः....वह ! कुछ नहीं यार...." इस बार उनकी आँखें चमक उठीं। वे सीधे बैठ गये। घुटनों पर कुहनियाँ रखकर बोले : "हमारे यहाँ फ़र्श-वर्श पोंछने के लिए जो नौकरानी आती है न, उन मेमसाहिबा का इश्क होगया हमारे खानसामे से। साला अपने हिस्से का सारा खाना उसे खिला देता था। उनमें कुछ है, यह मार्क तो मैं बहुत दिनों से कर रहा था। वह साहब उसके जाने से पहले किसी न किसी बहाने आगे निकल जाते और सड़क पर बाहर उसकी राह देखा करते। आते हुए मैंने एकाध-बार देखा, लेकिन गाड़ी खड़ी करके रुकना ठीक नहीं समझा। बरामदे के सामने कोनेवाला जो कमरा है न, बाई द वे, मैंने आते हुए उधर जो सिर उठाया तो देखा आप उसे किस कर रहे हैं...."

"तो क्या हो गया ?" मैंने ज़रा दिलचस्पी से पूछा : "इन लोगों की ज़िन्दगी में भी तो कहीं रोमांस होना चाहिए न।" तभी दिल में जैसे कुछ खटक गया और ज़बान रुक गई। अभी-अभी जब कि मैं कुछ 'भयानक' और 'रहस्यमय' देख आया हूँ तो किस तरह ये परिहास की बातें कर पारहा हूँ।

"अरे राजेन साहब, आप समझते नहीं हैं। फ़ील्ड पर तो हम खुद इस तरह की छूट देते हैं, लेकिन यह तो फ़ील्ड नहीं है। और फिर...." अफ़सोस से तेजपाल बोले : "दिस चैप....यह खानसामा मेरे पास

बड़ा पुराना है। बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के यहाँ नौकरी करके इसका बाप हमारे फ़ादर के पास आया, और वहाँ कुछ ऐसा जम गया कि कहीं आने-जाने का उसने नाम ही नहीं लिया। मुझे जब कमीशन मिला तो फ़ादर ने इसे मेरे साथ कर दिया। घर का आदमी था, इसलिए मेरी ज़रूरत समझता था। दस-बारह साल से मेरे यहाँ है यह....आखिर कुछ तो लिहाज़ करना चाहिए इसे...."

रणधीर कुछ बोलने को था कि मैं बीच में ही बोल उठा : "मेजर साहब, उसकी भी तो अपनी ज़रूरतें हैं, दिल है, जवानी है।"

"नो! मैं ये सब बरदाश्त नहीं कर सकता।" सिर झटककर तेजपाल भिड़कने के ढंग पर बोले : "उसे ज़रूरत हो तो मुझसे आकर कहे। मैं कराता हूँ शादी। ये सारी बदतमीज़ी मेरे यहाँ नहीं चलेगी। वह तो मैंने उसे कान पकड़कर ही निकाल दिया; आई सैड, गेटआऊट! वर्ना मैं तो उसे शूट कर देता....यह रोमांस करने की जगह नहीं, रहने की है।" फिर एकदम आवाज़ नीची करके मुस्कराये : "देख लीजिए, कल-परसों आकर माफ़ी-वाफ़ी माँगेगा और फिर काम करने लगेगा। जायेगा कहाँ साला!"

"अरे यार, कभी-कभी तो इन बेचारों की ज़िन्दगी में भी कोई रस आ जाने दिया करो।" रणधीर टालता-सा बोला।

"तुम भी औरतों जैसी बातें करते हो धीर। ये भी कहती थीं कि 'क्या बुरा किया? मान लो वह इसी से शादी कर ले?' आई सैड, शटाप! तुम समझते नहीं हो दोस्त, इन सस्ती पिक्चरों ने इनके दिमाग़ खराब कर दिये हैं।"

"ओ: तभी आज मिसेज़ तेजपाल किचिन में हैं।" रणधीर ने रेडियोग्राम पर रक्खी ऐश-ट्रे में सिगरेट ठूँस कर कहा।

"नहीं जी, अभी आई।" भीतर से आवाज़ आई—वही कुहकता-

सा स्वर।

बीनू के भी बोलने का स्वर आ रहा था। कुहकता-स्वर और गोलियों का फूल....मैंने मन-ही-मन दुहराया। वे लोग शायद मेज़ पर नौकर की मदद से प्लेटें लगा रही थीं।

"हाँ, मैं क्या कहती थी?" सीधे आकर उन्होंने तेजपाल की ओर देखते हुए अपनी झुँझलाहट को मुस्कराहट में छिपाकर कहा। फिर रणधीर से बोली: "मेजर धीर, इनकी बात सच मत मानिए। खुद ही तो निकाल दिया। मान लो, वह उससे शादी ही कर ले?"

एक क्षण को लगा, तेजपाल सकपका उठे। शायद इस तरह उनके आ पूछने की उन्हें आशा नहीं थी। सँभल कर बोले: "तो हमसे कहे!"

मुँह बिगाड़ कर अँगुलियाँ नचाती-सी वे बोलीं: "हमसे कहे! जी, वह आप से कहे कि मुझे शादी करनी है?"

"अच्छा, मारो गोली!" यह बात तेजपाल ने जिस ढंग से कही उससे लगा कि अगर हम न होते तो वे दहाड़ कर कहते: "चुप हो जाओ!"

बात एक दम समाप्त हो गई। मुझे देखकर शिष्टता से हाथ जोड़कर वे बोलीं: "मैंने देर कर दी, माफ़ कीजिए।"

उनके आने पर हम लोग उठ खड़े हुए थे: "हमारी वजह से आपको बड़ी तकलीफ़...."

"खाना तो शायद हम लोग भी खाते ही हैं।" वे हँसकर बोलीं, और एक ओर अपने कटे बाल झटक कर भरपूर मुझे देखती रहीं। वे निगाहें जैसे मुझसे सही नहीं जा रही थीं। मन बेचैन था और समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। उनकी बात पर हम सब खिलखिला कर हँस पड़े।

"बैठिए न।" मिसेज़ तेजपाल बोलीं : "अभी कैप्टेन रुद्रा को आ लेने दें।"

"बड़ी देर कर दी, यह हमेशा देर से पहुँचता है, आई सैड, फ़ौज में भी जब तुम ऐसे हो तो टाइम की क़ीमत कहाँ सीखोगे।"

हम लोग बैठ गये। मैंने देखा, मिसेज़ तेजपाल के चेहरे पर एक अजब तरह की चमक है। इस चमक का सम्बन्ध मैं हमेशा अभिनेत्रियों से जोड़ता रहा हूँ, क्योंकि बहुत अधिक मेक-अप करने से उनकी खाल अस्वाभाविक रूप से चमकने लगती है। मुझे यह चमक कभी अच्छी नहीं लगी। वे शायद चौके से आई थीं, और वहाँ गर्मी थी। फिर भी बाल-बाल जिस सफ़ाई से बने थे और होठों पर जैसी सावधानी से लिप्स्टिक का स्पर्श किया गया था, उससे लगता नहीं था कि वे चौके से आ रही हैं। वे आसमानी शलवार और कुर्ते में थीं। पैरों में सफ़ेद कामदार हल्की जूतियाँ थीं।

तेजपाल ने मिसेज़ की ओर देखकर कहा : "तब तक एक रबर हो जाये?"

"नहीं।" वे सख़्ती से बोलीं : "वक्त हो, न हो, आपको अपनी ब्रिज की धुन। मेज़ पर खाना लगा है और ब्रिज लेकर बैठेंगे...."

ऐसे रोबीले आदमी का विरोध करना भी सचमुच एक साहस का काम है। उनकी फुफकारती-सी निगाहों और फुंकारती-सी साँसों से मुझे हमेशा ऐसा लगता था जैसे अभी वे उठकर किसी को गोली मार देंगे। मैं सोच ही रहा था कि फिर घण्टी बजी, और बग़ल के कमरे से नौकर पीछे, दूसरी ओर का चक्कर लगाता हुआ दौड़ा। इस बार कैप्टेन-रुद्रा और मिसेज़ रुद्रा थे। हम लोग फिर उठ खड़े हुए। देर से आने पर क्षमा का आदान-प्रदान हुआ।

"गुड्डी को नहीं लाईं आप?" ललक कर मिसेज़ तेजपाल ने पूछा।

"वो सो गई थी जी।" मिसेज़ रुद्रा बोलीं। दो चोटियाँ और बंगलौरी सिल्क की धूप-छाहीं साड़ी। शरीर भरा था और दो ठोड़ियाँ बनती थीं। चेहरे पर उदारता-पूर्वक पाउडर लगाया गया था। तीनों महिलाएँ सोफ़े पर बैठ गईं।

"अरे, बड़ी जल्दी सुला दिया आप ने।" मिसेज़ तेजपाल एकदम सुस्त पड़ गईं: "मुझे ऐसा लगा जैसे वह अभी-अभी नीचे रो रही हो...."

नाइट-सूट में कपड़ों के प्रति अत्यधिक सजग कैप्टेन रुद्रा पतलून की क्रीज़ घुटनों से उठाकर सोफ़े के सिरे पर बैठ गये थे। टाई की गाँठ को गर्दन हिलाकर ठीक करते हुए बोले: "नहीं जी, सोई-वोई नहीं है। नीचे तक तो आई थी। शाम से ही ज़िद कर रही थी, "हम आण्टी के यहाँ चलेंगे, हम आण्टी के यहाँ चलेंगे। गाना सुनेंगे, डान्स सीखेंगे।"

"तब फिर क्यों छोड़ आये?" भोलेपन से मुँह खुला रखकर वे बोलीं।

"हम तो लाये थे जी। साथ रुमाल में बाँध कर वह खुद अपने घुँघरू लाई थी। फिर नीचे पहली सीढ़ी पर ही रोने लगी।" मिसेज़ रुद्रा ने कहा: "हम नहीं जायेंगे....बहुत मचल गई तो फिर लौट के जाना पड़ा। इसीलिए ज़रा देर हो गई। बच्चों की ज़िद का कोई टाइम थोड़े ही होता है।"

"लौटकर क्यों जाना पड़ा? मैं ही छोड़कर आया। ये तो बोलीं, ज्यादा चढ़ने-उतरने से हमारी साड़ी में सलवटें पड़ जाती हैं। मैं इन्हें समझाता हूँ कि इन बंगालिनों से सीखो न, सीधी सड़क पर चलते वक्त भी साड़ी की पटली पकड़ कर उठाये रहती हैं।" और वे झेंपती मिसेज़ को चिढ़ाने से खुद ही हँसने लगे। मैंने देखा, उनकी छोटी-

छोटी घनी भौहें बटरफ्लाई मूँछों के ऊपर इस तरह थिरकती थीं जैसे वे अभी-अभी कोई गहरा मज़ाक़ करने वाले हों। उनकी चिकनी कनपटी की हड्डी इस तरह खाल के भीतर चलती थी जैसे वहाँ लहरें उठ रही हों। मुस्कराकर बोले : "हमारी इनके साथ शादी थोड़े ही हुई है! हमें तो इनके फ़ादर ने इनका नौकर बना कर भेजा है कि बेटा, कमाओ और मालकिन की सेवा करो!"

वातावरण कुछ हल्का हुआ। सब लोग मिसेज़ रुद्रा की ओर देखकर हँस पड़े। वे लाल पड़ गई थीं। लगता था जैसे अपने पति के हँसमुख स्वभाव और उनके प्रभाव पर उन्हें गर्व ज़रूर था लेकिन शिकायत भी थी कि वे अक्सर बहुत हल्के और बेलगाम हो जाते हैं। शायद मेजर तेजपाल की उपस्थिति में यह हल्कापन उन्हें पसन्द नहीं आ रहा था। उनकी भौहें खिंच गईं। "करते होंगे सेवा....अपनी बेटी की करते होंगे, हमारा क्या है? हम नहीं रखते उसे दिन भर? और वह तो सच्चो ऐसी शैतान है कि सारे दिन....एक तो जब देखो तब आण्टी की धुन...."

"देखिए जी।" रुद्रा ने मिसेज़ तेजपाल की ओर देखकर कहा : "यह बात निहायत ग़लत है। आपने हमारी लड़की को बहका लिया है। एक वह मेजर धीर का लड़का है, आते ही साहब बहादुर उसके गले में बाँह डालकर इधर-से-उधर घुमाते फिरेंगे। दुनिया भर का रोब छाँटेंगे।" और वे मुड़कर बीनू से पूछने लगे कि किशोर अगली बार कब आ रहा है, छुट्टियों में।

तरस खाकर ललकते-से स्वर में मिसेज़ तेजपाल ने कहा : "हाय, ले आतीं न। नीचे से ले गईं, आप भी मिसेज़ रुद्रा ग़ज़ब करती हैं। मैं उसे ज़रा देर में चुप कर लेती।"

"आपके पास तो वह आ ही रही थी जी।" मिसेज़ रुद्रा ने अपनी

पुत्री के प्रति उनके स्नेह से गद्गद् होकर कहा : "पर यहाँ आते डरती है जी।" उन्होंने एक बार मेजर तेजपाल को देखा। फिर कुछ डरते-डरते बोलीं : "कहती थी, ऊपर छेल होगा।"

"छेल क्या ?" मैंने पूछा।

"शेर भाई।" बीनू ने समझाया : "लेकिन किटी से बिल्कुल नहीं डरती। उसके तो गले से लिपट जाती है।" किटी तेजपाल की अलसेशियन कुतिया थी।

"ओह !" और फिर सब लोग ड्राइंग-रूम में हाथ-पाँव फैलाकर लेटे शेर को देखकर हँस पड़े। मैंने देखा मिसेज़ तेजपाल की सहमी-सहमी-सी निगाहें मेजर तेजपाल पर जा पड़ीं, जैसे प्रतिक्रिया भाँप रही हों। धीरे से बोलीं : "अच्छा, मैं ही जाऊँगी कल उसे मनाने।"

"उफ़, बड़ा ख़ूँख़ार जानवर था यह भी।" मेजर तेजपाल ने गहरी साँस लेकर कहा। जाने क्यों उन्हें ऐसा लगा जैसे अनजाने ही सारा मज़ाक उन पर आकर टिक गया है। एक बार तो वे हत-प्रभ हो उठे। फिर बोले : "बड़ा तूफ़ान मचा रक्खा था कम्बख़्त ने। आज इसकी भैंस को मार गया, कल उसकी गाय का पता नहीं है। फिर दिन-दहाड़े एक आदमी को उठा ले गया। मैं फ़र्लो पर था। हाँका किया गया....साले ने सात दिन परेशान किया। आई सैड, कुछ हो जाय इसे तो मारना ही है...." उन्होंने बात सँभाल ली थी।

मैंने देखा कि बात करते समय मेजर तेजपाल का शरीर ऐसा रहता था जैसे हर जोड़ के पेंच ढीले हो गये हों—यों फ़ौजी स्वभाव के अनुसार रीढ़ की हड्डी तो तनी ही रहती थी, लेकिन इस बार उनमें जान आ गई। वे हाँके का सविस्तार वर्णन करते रहे। कैसी चालाकी से शेर बकरी को उठा ले गया था। मचान पर जब दाँव नहीं लग पाया तो मेजर तेजपाल नीचे उतर आये थे....मना करने पर भी खिसटने के

निशानों का पीछा करते चले गये, फिर कैसे अचानक शेर ने नाले से उछलकर उन पर हमला किया। वे भी तैयार थे। दो-तीन गज़ के फ़ासले से ही गोली चलाई—एक के बाद एक, तीन गोलियाँ। एक हाँकेवाले को एक ही पंजे में ख़त्म करता हुआ शेर भागा। उन्होंने फिर दो गोलियाँ चलाईं। इसके बाद तेजपाल ने उठकर अपने मगर की खाल के जूते की टो से वे जगहें दिखाईं जहाँ गोलियाँ लगी थीं। वे भीतर डाइनिंग-रूम से एक फ़ोटो उतार लाये, जिसमें सामने शेर लेटा था और कैप्टेन तेजपाल उस पर राइफ़िल टिकाये निहायत निश्चित शान से एक पाँव रक्खे खड़े थे। किस्सा ठीक वैसा ही था जैसा हर शेर के शिकार का होता है, लेकिन सब इस तरह सुन रहे थे जैसे पहली बार ऐसी अघटनीय घटना का आँखों देखा हाल सुन रहे हों। महिलाओं के चेहरे पर ऐसी तन्मयता और आतंक था मानो उनके सामने अभी-अभी शेर का शिकार हो रहा है। वीनू की तो आँखें निकली आ रही थीं और मिसेज़ रुद्रा के माथे पर भाफ-सी जम गई थी। बस, मिसेज़ तेजपाल तटस्थ भाव से अपनी कलाई की घड़ी की चाबी को व्यर्थ घुमाती रहीं। इसके बाद सब लोग उस शेर का सिर इस खूबी और सफ़ाई से तैयार करनेवाले की तारीफ़ें करते रहे। आँखें, दाँत, मूँछें—सभी कुछ असली शेर जैसा था। तेजपाल ने बताया कि कभी-कभी उसे देखकर किटी कितनी जोर से भूँकने लगती है। अपने एक मित्र के शिकार का किस्सा मुझे भी याद आ रहा था और इच्छा हो रही थी कि सुना दूँ। फिर सभी के चेहरों से ऐसा लगा जैसे हरेक के पास ऐसा ही एक-एक किस्सा कुलबुला रहा है....मुझे रह-रह कर लगता जैसे हर बेकार की बात के प्रति आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी दिखाकर वे अपना समय काट रहे हैं। ज़रा-ज़रा-सी बातों को ये लोग कितनी देर तक करते रह सकते हैं।

तभी बैरे ने खाना तैयार होने की सूचना दी। बात बीच में ही छूट गई।

"देखिए, खाना अच्छा न बना हो तो शिकायत न कीजिए।" मिसेज़ तेजपाल ने सजी हुई मेज़ के एक ओर खड़े होकर आतिथेय की औपचारिकता के साथ कहा : "आज तो उलटा-सीधा बना लिया है। फिर किसी दिन बाक़ायदा आपको खिलाया जायेगा।" उन्होंने तेजपाल की ओर बिना देखे कहा।

कुर्सियाँ खिसकीं, साड़ियाँ सरसराईं, कलफ़ लगे तह किये हुए नैपकिन फड़के और चम्मच, काँटे-छुरी बज उठे। 'आप को यह अच्छा नहीं लगा' 'यह थोड़ा और लीजिए।' के विराम, अर्ध-विरामों के साथ-साथ महिलाओं ने अपने पास-पड़ोस, और खाने-बनाने के बारे में बातें करना शुरू कर दिया और पुरुष लोग अपनी डिवीज़न का कोई किस्सा ले बैठे। किसी जे० सी० ओ० की बद्तमीज़ियों का वर्णन करते हुए मेजर तेजपाल का स्वर कुछ ऊँचा उठ गया और नथुने फूल उठे। इसी गुस्से में एक बोटी को उन्होंने इतनी ज़ोर से चबा डाला कि उसकी हड्डियाँ कड़कड़ा उठीं। मिसेज़ तेजपाल रोशनदान की ओर देखने लगीं। हम सभी का ध्यान इस ओर जाये बिना नहीं रहा। अभी-अभी मिसेज़ तेजपाल ने जब कोई चीज़ काटी थी तो छुरी प्लेट से लगकर खट से बज उठी थी। उस समय उनकी अँगुलियों को तेजपाल ने जिन आँखों से घूरा था वे अब भी मुझे याद थीं।

मैंने इधर-उधर सिर घुमा कर देखा, दीवारें पीली पुती थीं और चमड़े के खोल और पेटियों में बन्दूक-पिस्तौलें टँगी थीं। जब-जब मेरी निगाह उधर गई, मुझे गोलियों के फूल का ध्यान हो आया। बैरा जल्दी-जल्दी रोटियाँ ला रहा था, लेकिन अकेला होने की वजह से पहले खुद ही सेकता और फिर खुद ही लाता। सब्ज़ियों के डोंगे लगातार

इधर से उधर घूम रहे थे। कभी-कभी मिसेज़ तेजपाल का प्लेट पर झुका मोती जैसे दाँतों से रोटी कुतरता चेहरा मुझसे आँखें मिलते ही इस तरह मुस्करा उठता जैसे मुझे सान्त्वना दे रहा हो। वे रह-रहकर बाल झटकने के बहाने मुझे देखतीं। उनके कान में जड़ा आसमानी शेड का नग बड़ा खूबसूरत लगता था। वे महसूस कर रही थीं कि मैं अकेला पड़ गया हूँ। और जैसे इसी बेचैन अनुभूति से वें रह-रहकर मुझ से कुछ न कुछ लेने का आग्रह करतीं। उनकी इस मनस्थिति को मैं समझता था और उनके देखते ही मुस्करा उठता, जैसे कहता, 'चलाइए, चलाइए, मैं ठीक हूँ।' लेकिन जब-जब ऐसा हुआ, मेरी निगाहें हर बार तेजपाल की ओर उठ गईं।

यों ऊपर से देखने में कहीं कुछ नहीं था और सब बड़ी स्वाभाविकता से चल रहा था। खाने की बड़ी तारीफें हुईं, किसी ने किसी डिश की तारीफ़ की, किसी ने किसी की। एक दूसरे को निमंत्रण दिये गये। और फिर बाहर ड्राइंग-रूम में बैठकर अंग्रेज़ी-अमेरिकन पत्रिकाओं के घिसे-पिटे मज़ाक़ दुहराये गये। सुनानेवाले के सम्मान की खातिर शेष लोगों को हँसना पड़ता था। बैरा कॉफ़ी ले आया, तो एक ही मेज़ पर सारे प्याले तैयार करके मिसेज़ तेजपाल ने सबको एक-एक कप दिया। सिगरेट और काफ़ी के बीच मैं बैठा एक अलबम के पन्ने पलटता रहा। मुझे हर क्षण आशंका होती कि अभी किसी ओर से ब्रिज का प्रस्ताव उठेगा और मेरी रिपोर्ट कल भी तैयार नहीं हो पायेगी। हुआ भी यही। मैं उठ खड़ा हुआ। सबकी गर्दनें मेरी ओर उठ गईं। कल रिपोर्ट तैयार करनी है के आधार में माफ़ी माँग कर चला आया। रुद्रा ने तो कहा भी: "अमाँ रिपोर्ट कहीं भागी जाती है। तैयार कर लेना।" बाक़ी लोगों ने केवल खड़े होकर विदा दी। बीनू और मिसेज़ तेजपाल सीढ़ी तक छोड़ने आयीं।

"तू तो बहुत बोर हुआ न !" बीनू ने पूछा ।

"हाँ सच, आप तो बिल्कुल ही अकेले पड़ गये ।" क्षमा याचना के स्वर में मिसेज़ तेजपाल बड़े आत्मीय आग्रह से बोलीं । "फिर किसी दिन आइए न ।" उन्होंने इस ढंग से भरपूर मुझे देखकर सिर झटका कि उनके कानों के दोनों आसमानी नग दिल के किसी कुहरिल अँधेरे के पार तारों की तरह टिमटिमाते रह गये । वे दरवाज़े को एक हाथ से पकड़े खड़ी थीं । निगाह उनके सिर के ऊपर से पीछे दीवार पर टँगे बारहसिंघों के सिर और गोलियों के फूल पर चली गई तो जैसे मुँह का स्वाद खराब हो गया । मैं कोई बात पूछना चाहता था, वह एक दम इस तरह उड़ गई कि फिर याद ही नहीं आयी ।

मन-ही-मन मैंने निश्चय कर लिया था कि इस फ्लैट में नहीं आना है । उनके आग्रह के सामने जैसे यह निश्चय एकदम घुल गया । मैंने आने का आश्वासन दिया । गोलियों के फूल जैसी महत्वपूर्ण चीज़ को मैं भूल कैसे गया था । सिर झुकाकर सीढ़ियाँ गिनता नीचे उतर रहा था कि मिसेज़ तेजपाल ने कहा : "हमारे लिए शेर आपने अभी तक नहीं लिखे न । इस बार ज़रूर लिख रखिए ।" उनका स्वर सुनकर मुझे फिर याद आया कि मैं दरवाज़े पर कहनेवाला था : "मिसेज़ तेजपाल, आप दिनभर गाती रहती हैं, लेकिन यहाँ आपने गाना ही नहीं सुनाया !" किसी और ने भी उनसे गाने के लिए नहीं कहा था ।

अपने फ्लैट में आकर मैंने मुक्ति की गहरी साँस ली । जैसे कोई बहुत थकान का काम करके आया होऊँ, जिसने मेरे तन और मन को एक अस्वाभाविक तनाव की स्थिति में रक्खा हो । ड्राइंग-रूम में सोफ़े पर लेटे-लेटे पंखे को लगातार घूरते हुए मैं सुन्न-सा सोचता रहा । यह कमरा भी तो ऊपर के कमरे जैसा ही है, लेकिन जैसे दो अलग दुनियाँ हों । ऊपर से कैप्टेन रुद्रा के क़हक़हों की आवाज़ आ रही थी, नीचे मेजर टर्नर के

यहाँ पियानो की धुन के साथ-साथ कैप्टेन दिलजीत के फ़्लैट में रेडियो फ़ैज़ की ग़ज़ल, 'तेरी दुनिया में सभी कुछ है मगर प्यार नहीं।' गा रहा था....बाहर पर्दे की फाँक से सड़क की ग़ैस बत्तियाँ पेड़ों के घूँघट से झाँकती दिखाई दे रही थीं। रह-रह करके ज़ूँ-ज़ूँ करती कारें और सामान लादे ट्रक घों-घों करते गुज़र जाते थे....मन में किसी ने कहा—"आज दाना बड़ा सुस्त था।" यह रणधीर की भावनाओं को मैं अपने शब्द दे रहा था। उसको 'दाना' शब्द जैसे ही याद आया तो खुद अपना मुस्कराता चेहरा आँखों में नाच गया....

आज उन बातों को एक साल होगया। बीनू नीचे शायद बिलियर्ड का खेल देखने गयी थी। मुझे ऐसा कुछ आभास था। चाय पीते हुए मुझे याद आया, सचमुच उस फ़्लैट में कुछ अजब बात ज़रूर थी—जहाँ के रहनेवालों में कुछ विलक्षण निश्चितरूप मे था। आज की कही बीनू की बात की पृष्ठभूमि के रूप में देखता हूँ तो लगता है कि मिसेज़ और मेजर तेजपाल के बीच उन दिनों जो कुछ देखा था, वह सिर्फ़ तनाव ही नहीं, बल्कि रस्साकशी जैसी कोई चीज़ थी। बीनू से मैं अक्सर सुना करता था कि मिसेज़ तेजपाल बड़ी मस्त हैं, बड़ी लापरवाह हैं। हमेशा जरूरत-ग़ैर ज़रूरत हँसती रहती हैं और दिनभर गाती रहती हैं। लेकिन मैंने ध्यान दिया कि मेजर तेजपाल की उपस्थित उन्हें जैसे ढँके रही। रणधीर और तेजपाल का रैंक एक था। मगर रणधीर के बारे में मुझे आज, जब वह कर्नल है, कभी यह भी ख़याल तक नहीं हुआ कि वह क्या है; जब इस बात को मैं स्वीकार करता हूँ कि तेजपाल की हर बात बोल-बोल कर कहती थी कि वह मिलिटरी के एक ऊँचे अफ़सर हैं। एक आतंक, एक रौब या एक अदृश्य दबाव था जो सारे वातावरण

पर छा जाता था और रणधीर तक से उनका व्यवहार ऐसा लगता था, जैसे किसी खास ऊँचाई से झुककर मिल रहे हैं। मुझे यह ऊँचाई सह्य नहीं थी, इसलिए मैंने कभी उन्हें दिल से पसन्द नहीं किया। यों एक शिष्टाचार तो चलता ही रहा। मिसेज़ तेजपाल पर भी इस आतंक का जादू है; यह मैंने लक्ष्य किया, लेकिन साथ ही ऐसा भी लगा जैसे उनकी इच्छा-शक्ति इस जादू के विरुद्ध विद्रोह करती है। उनकी उपस्थिति में वे चाहे जितनी बुझी रहती हों मगर जब भी तेजपाल कुछ कहते, वे कुछ ऐसी उपेक्षा से देखती रहतीं मानो कोई नितान्त अपरिचित, निहायत की बेकार बातें कर रहा हो....इस बात की पहली झलक मुझे उसी समय मिली जब मैंने पहली बार उस 'दाने' अर्थात मिसेज़-तेजपाल को देखा था....

हमलोग अभी-अभी सिनेमा देखकर आये थे। हाथ फैलाये थके-से बैठे ड्राइंग-रूम में इन्तज़ार कर रहे थे कि गोमेज़ जल्दी खाने को बुलाये। सोफ़े पर पाँव फैलाकर रणधीर अपनी त्रिकुटी को चुटकी में पकड़े आँख बन्द किये पड़ा था। अर्दली नीचे बैठा जल्दी-जल्दी उसके जूतों के फ़ीते खोल रहा था, बीनू कपड़े बदलने गयी थी। सहसा घण्टी बजी और साथ ही तेजपाल और मिसेज़ तेजपाल धड़धड़ाते भीतर दाखिल हुए। किवाड़ शायद खुले रह गये थे। तेजपाल सफ़ेद पतलून, खुले क़ालर की कमीज़ और सफ़ेद स्वेड के नागरा पहने थे। उन्होंने बैठते ही अपने आने की सफ़ाई दी: "आज तो चैप, स्काश कुछ जमा नहीं। एक तो तुम नहीं थे, दूसरे अइयर ने बड़ा बोर किया। आई सेड, जब लोगों में स्पोर्ट्समैन स्पिरिट नहीं है तो खेलते ही क्यों हैं, डाक्टर ने तो बताया नहीं है कि स्काश ही खेलो। कौन-सा सिनेमा था ?" दोनों

रैकेटें उन्होंने लापरवाही से फ़र्श पर डाल दिये।

रणधीर पाँव समेट कर सीधा बैठ गया। आज या तो तेजपाल बहुत खुश थे या बहुत झुँझलाये हुए, क्योंकि उसने ही बताया कि इस प्रकार वे कभी नहीं आये, न सँभलने का अवसर दिये बिना। रणधीर ने मेरा परिचय कराया : "आप मेजर तेजपाल। हमारे ठीक ऊपर के फ्लैट में रहते हैं। और आप रिश्ते में बीनू के भाई, अर्थात् सालारजंग।"

वे कुर्सी से उठ आये, 'वैरी ग्लैड टु सी यू' का विनियम हुआ।

मिसेज़ तेजपाल की ओर मेरा ध्यान विशेषरूप से इसलिए आकर्षित हुआ कि उनके बाल बाब्ड थे और इन्हें वे हर दूसरे मिनट कानों पर हाथ लगा कर इस तरह सँवारती थीं मानो किसी छूटी लट को सँवार रही हों! जब मैंने उन्हें नमस्कार किया तो नज़र भरकर देख लेने की इच्छा को बड़ी मुश्किल से अंकुश लगाकर रोके रक्खा। हल्के क्रीम कलर की क्रेप की साड़ी, उसी रंग का शार्ट-ब्लाउज़ और कंधों पर हल्का काम किया हुआ ढीला-ढाला पश्मीने का केप और कानों के ऊपर खुँसा हुआ नरगिस का एक छोटा-सा सफ़ेद फूल। नाखूनों पर नेलपालिश। दोनों हाथ मोटी-मोटी बँटी हुई रेशमी डोरियों के फुँदनों से खेल रहे थे और छोटा-सा पीले चमकदार मखमल का पर्स घुटनों के बीच में पीले सैंडिलों तक लटका था। पहली निगाह में तो ऐसा लगा जैसे वे उन लोगों में हैं जो मन ही मन किसी गीत की धुन गुनगुनाते हुए अक्सर अपने आप में ही व्यस्त रहते हैं।

अपनी तलवार छाप मूँछों से बीनू की ओर दुष्टता से देखता हुआ रणधीर कह रहा था : 'जोरू का भाई है साला! सिनेमा वग़ैरा दिखाकर खुश रखना पड़ता है! वर्ना कल ही सुनने को मिले कि हमारे भाई की खातिर ही नहीं की...."

लाइटर जलाते-जलाते तेजपाल रुक गये। होठों में लगी सिगरेट

से ही बोले : "जोरू हो या जोरू का भाई, हमलोगों की क़िस्मत में तो दबना ही बदा है !" और वे सिगरेट अँगुलियों में लेकर खुलकर हँस पड़े।

एक ज़ोर का क़हक़हा लगा। बीनू लाल होगई। उन दोनों की आँखें मिलीं और एक क्षण को—मुझे आज भी साफ़ दिखाई देता है—मिसेज़ तेजपाल की आँखों में एक वाइल्ड चमक ममकी। लगा जैसे उसे तेजपाल सह नहीं पाये और झट आँखें झुकाकर व्यस्त भाव से सिगरेट जलाने के बाद लाइटर को इस तरह हिलाकर बुझाने लगे जैसे वह दियासलाई हो। मिसेज़ तेजपाल की वह निगाह घूमती हुई मुझ पर आई तो मैं अव्यवस्थित-सा हो उठा। उसी दिन रणधीर ने ऐसी बात कही, जिसकी उस जैसे व्यक्ति से कतई उम्मीद नहीं थी, और वह उसकी ऐतिहासिक बात कहकर याद की गई। उसे याद करके आज भी हम लोग खूब हँसते हैं। बोला : "और इन लोगों के लिए अगर साकार खुदा कहीं है तो वह इनके भाई के रूप में है।" फिर मेरी ओर देखा : "आप डी० जी० हैं।"

सभी की निगाहें उधर उठ गईं। डी० जी० क्या ? रणधीर इत्मीनान से कश खींच कर बोला : "यानी डिप्टी-गॉड। एच० जी० अर्थात् हेड गॉड, बड़े गम्भीर हैं वे, कहीं आते जाते ही नहीं। अपने घर ही जमे रहते हैं।" इसके बाद जो क़हक़हे लगे कि पन्द्रह-बीस मिनट तक रुकने का नाम ही नहीं लिया। रणधीर ने और जोड़ा : "बस बीनू जी के लिए इन गॉडों का एक-एक वाक्य आयते-हदीस से कम इम्पार्टेंट नहीं है।"

'डी० जी०' कहकर सभी मेरी ओर देखते और फिर हँसी का फौवारा बेतहाशा छूट पड़ता। उन्मुक्त पहाड़ी झरने की तरह मिसेज़ तेजपाल खिलखिलाये जा रही थीं। अब उनके पेट में शायद दर्द होने लगा

था, वे एक हाथ पेट पर रखकर बुरी तरह हाँफ रही थीं। और उ
के बाद अक्सर मज़ाक़ में मुझे लोग डी० जी० कहने लगे थे।

लम्बी-लम्बी बरौनियाँ, सुती हुई नुकीली नाक और चाकू से तराशे हुए-से पतले-पतले कसे ओंठ और उभरे हुए गाल—जिन्होंने उनके चेहरे को ऐसी अभिव्यंजना देदी थी मानों वे मुस्करा रही हों, माथे पर छोटी-सी बिन्दी और कटे हुए बाल। इस मज़ाक़ से बीनू को लगा कि मैं कहीं बुरा न मान जाऊँ, इसलिए हँसते हुए भी उसने आँखें तरेर कर रणधीर की ओर देखा। हँसी रुक जाने के बाद जैसी एक स्थिर-जड़ता आजाती है, वैसी ही इस समय छा गई। मिसेज़ तेजपाल ने एक पाँव दूसरे घुटने पर रख लिया था। इस पाँव के घुटने पर हाथ के पंजों को आपस में फँसाये, कुहनियों को गोद में रक्खे वे धीरे-धीरे चप्पल में अँगूठों को उठा गिरा रही थीं। हाथों को इस तरह रखने में कलाइयाँ सामने आगई थीं। उन्होंने घड़ी पर जब-जब भी बड़े बेमालूम तरीके से निगाह डाली, मुझ से छिपा नहीं रहा। उनकी पतली-पतली सुन्दर अँगुलियों, रंगे हुए नाखूनों और अगूँठी पर निगाह जमाये रहा।

"हमारे डी० जी० साहब कभी शेर कहा करते थे।" रणधीर बोला। फिर मुझसे मुड़कर सहसा पूछा : "हाँ भई, तुम्हारी उस शेर और शायरी का क्या हुआ?"

"कहाँ शेर और शायरी! स्टुडेण्ट-लाईफ़ की चीजें थीं, सब खत्म होगईं।" मैंने टालने के ढंग से कहा : अब तो रिपोर्टें टाइप करते हैं कम्पनी की।"

"लो सुनलो।" रणधीर बीनू को चिढ़ाता-सा बोला : "मैं तो खुद ही कहता था कि उसने लिखना-लिखाना ज़ाने कब का बन्द कर दिया, लेकिन नहीं साहब, दुनियाँ की कोई खुसूसियत क्यों हो जो हमारे डी०-जी० में न हो। दिन रात बस यही, यह ग़ज़ल हमारे भाई ने लिखी थी,

फ़लाने सिनेमा में है, फ़लां ने इसे गाया है।"

इससे पहले कि बीनू मेरे नाराज़ हो जाने के डर से चिनचिनाकर कोई बात कहे, मिसेज़ तेजपाल बड़े ललककर बोल उठीं : "आपके पास कुछ अच्छे शेर हों तो हमें दीजिए।"

"क्यों, सिनेमा के गीतों का स्टाक खत्म ?" तेजपाल ने मुँह खोलकर एक खास अन्दाज़ से धुआँ निकालते हुए कहा। उनकी निगाहें व्यंग्य से हँस रहीं थी। कुर्सी के हत्थे पर रक्खे हाथ में सिगरेट थी और उसपर आँखें टिकाये वे उसे तर्जनी और अँगूठे के बीच में घुमा रहे थे। फिर खुद ही हँसकर बोले : "उफ़, इनके पास सिनेमा के गीतों का बेइन्तिहा ज़खीरा है। कौन-सा वक्त है जब यह गीत न गाती हों ! आइ सेड, आई'म सिक आफ़ दैम।"

"क्या है मेजर तेजपाल, आप हमेशा बेचारी के गीतों को ही टोकते रहते हैं।" मेरे प्रति बीनू की जो सहानुभूति अप्रकट रह गई थी वह मानो मिसेज़ तेजपाल के लिए उफन पड़ी। "आप ही देखिए, यहाँ की मनहूसी में यही तो एक ले-देकर ऐसी हैं जो सबको खुश रखती हैं, वर्ना यहाँ तो सभी अपने-अपने दर्बों में बन्द रहते हैं। पहले जरूर ज़रा ऑड (अजब) लगा था, लेकिन अब तो ऊपर से आवाज़ न सुनाई दे तो बड़ी बेचैनी रहती है।"

तेजपाल जाने क्यों उठ खड़े हुए और एक तस्वीर के बिल्कुल नीचे खड़े होकर उसे देखते हुए बोले : "आप ही तो शायद बता रही थीं कि नीचे वालों ने इनका नाम रेडियोग्राम रख रक्खा है। ऑटो-चेन्जर।"

इस बार मिसेज़ तेजपाल पर हँसने का नम्बर था। लेकिन उनका चेहरा सहसा तमतमा आया और भीतर की घुटन जैसे आँसुओं के रूप में उमड़ पड़ने को मचलने लगी। लगा यह उन लोगों के बीच का

काफ़ी कोमल बिन्दु है। वे जल्दी-जल्दी पलक झपकती हुई, निचले ओंठ को दाँतों से दबाये एरियल के जालीदार फीते को देखती रहीं।

"अच्छा डार्लिंग, इन्हें कोई एक अच्छी-सी चीज सुना दो तो चलें।" जैसे इस सारी बात को मज़ाक में लेते, परिस्थिति सँभालते हुए तेजपाल ने एड़ी पर घूमते हुए प्यार से कहा।

हम सबने कहा : "हाँ, मिसेज़ तेजपाल।"

कॉफ़ी आ गई थी। बीनू ने एक बार उनका चेहरा देखा और चुपचाप प्यालों में कॉफ़ी तैयार करती रही।

"नहीं जी, मेरी तबियत अच्छी नहीं है।" घुटे गले से वे कातर भाव से बोलीं। मान से उनकी आँखें नम हो आई थीं और सामने की ओर निकले पाँव का छोटा-सा खूबसूरत अँगूठा जल्दी-जल्दी उठ-गिर रहा था।

मुझे लगा एकदम परिस्थिति बड़ी विकट हो गई है। उनका कहना क्यों नहीं माना जा रहा, इस भाव से तेजपाल के चेहरे पर सख़्ती आ रही थी और मिसेज़ तेजपाल को देखकर लगता था जैसे किसी ने एक बार भी अगर अनुरोध कर दिया तो वे रो पड़ेंगी। बीनू ने सबसे पहले प्याला उन्हीं की ओर बढ़ा कर कहा : "लीजिए, आप पहले कॉफ़ी पीजिए।" खड़े-खड़े तेजपाल पीछे से उनके सिर की माँग को बड़ी अजब निगाहों से घूर रहे थे....बीनू ने उन्हें प्याला ऑफ़र किया तो हठात् चौंक पड़े। थैंक्स कहकर वे आराम की मुद्रा में खड़े-खड़े ही कॉफ़ी पीते रहे।

सहसा बड़े नाटकीय अन्दाज़ से कप को साइड-टेबिल पर रखकर रणधीर बोला : "कम से कम डिप्टी-गॉड का तो अनुरोध रख लेतीं।"

हम सब लोग फिर बड़े ज़ोर से हँसे। "अच्छा छोड़िए, फिर कभी सही।" कह कर बात टाल दी गई। और फिर सब लोग अपने आसामिया

बैरा गोमेज़ की बात करते रहे। वह हिन्दी नहीं जानता था। एक बार जब घड़ी बन्द हो गई तो उसे बीनू के पास लाकर बोला : "मेम साहब, यह घड़ी तो मर गिया।" बाबी-आबी दूर, बीनू बुरी तरह हँसती रही। वातावरण का तनाव हटाने के लिए बीनू उसी की बातें बता-बता कर हँसती रही। तेजपाल ने भी हँसी में योग दिया।

फिर एक घूँट में सारा कप ख़त्म करके मेजर तेजपाल उठ खड़े हुए : "अच्छा मिसेज़ बीर, अब हम चलेंगे। आप भी खाना-वाना खाइए। घूम-फिर कर आयेंगे।" उन्होंने अपना विशाल पंजा मेरी ओर बढ़ाकर कहा : "आप तो अभी यहीं हैं न ! फिर मुलाक़ात होगी। एक ही तो सीढ़ी है। कभी ऊपर आइए न।" उनकी अँगुलियों के पोरों के ऊपर भी बालों के गुच्छे थे।

उनके इस प्रकार उठ खड़े होने से सभी चौंक पड़े। मिसेज़ तेजपाल ने अभी एक घूँट से ज़्यादा नहीं लिया था। उन्होंने एक बार उठते तेजपाल और एक बार प्याले को देखा। मैं उस समय तेजपाल को जवाब दे रहा था : "आऊँगा ज़रूर, लेकिन आपके बराबर ऊँचा उठते डर लगता है।"

"मान गये भाई, आपके डी० जी० शब्दों के खिलाड़ी हैं। ज़रूर शायरी कर लेते होंगे।" तेजपाल ख़ुश हो गये। पता नहीं क्यों उनका चेहरा देखकर मुझे अलेक्ज़ैण्डर ड्यूमा का चेहरा याद आ गया। उनकी तुलना के लिए फिर मिसेज़ तेजपाल की ओर देखा और जाने क्यों मुझे ऐसा लगा जैसे एक बार उनके मन में यह आया हो कि तेज-पाल को खड़ा रहने दें और ख़ूब आराम से कप खाली करके ही उठें। उनकी भौंहें खिच गई थीं, लेकिन बड़ी मुश्किल से कप के हैण्डिल से उलझी अँगुली निकालकर वे उठ खड़ी हुईं, सख़्ती से गर्दन को झटका देकर उन्होंने बालों को एक झोंका दिया और दोनों हाथ उठाकर

कानों के ऊपर उन्हें पीछे करने लगीं। उनकी खुली कमर और सुडौल शरीर ने सभी की निगाहें खींचीं। इसे उन्होंने भी भाँप लिया और यह प्रशंसा शायद उनके आहत अहं को थोड़ा सहला सकी....

कमरे से बाहर निकलते समय तक उनके चेहरे की सारी दीनता और निरीहता के पार कोई उद्धत क़िस्म की चीज़ उभरती चली आ रही थी; शायद लापरवाही, शायद मस्ती....शायद चुनौती। उन्होंने कमर पर दोनों हाथ इस तरह रख लिये कि कुहनियाँ पीछे की ओर निकल आईं और उन पर केप छाते की तरह तन गया। ऐसा लगा जैसे उन्होंने जान-बूझकर अपने शरीर को ऐसा लचीला, गदरीला और त्वचा को ऐसा स्निग्ध-पारदर्शी बना लिया है कि खाँमख्वाह उसे छूकर देखने की इच्छा मन में जागती थी....शायद तेजपाल के उस हिस्स को चिढ़ाने के लिए उन्होंने सीधे मेरी ओर देखते हुए इस बार साधिकार कहा : "मिसेज़ धीर, आप लेकर आइए न !" और मुझे लगा, उनकी निगाहों का जादू नस-नस में तैरता चला गया।

"आपके कैम्प जाने का क्या हुआ मेजर तेजपाल ?" बाहर की ओर चलते हुए रणधीर ने पूछा।

तेजपाल ने ठोड़ी सहलाते हुए कहा : "इसी परेशानी में तो हूँ चैप ! अगले महीने ही शायद तीन महीने को जाना पड़े।"

"जगह का पता चल गया ?"

"अभी कोच्छ पता नहीं।" तेजपाल दोनों कन्धे 'क्या पता' के अंग्रेज़ी ढंग से झटककर ओंठ सिकोड़ते बोले : "पाँच-छः दिनों में तो एन० सी० सी० के लड़कों को लेकर जाना है, यहाँ कहीं पास के गाँव में सोशल-सर्विस के लिए। यह एक साली और मुसीबत लगी है जान को। फावड़े लेकर सड़कें बनाओ। शायद एक हफ़्ते का कैम्प रहे।"

"हमारा अभी कुछ पता ही नहीं...." पतलून की जेब में हाथ डाल-

कर रणधीर चिन्तित हो आया।

"आइए, ज़रूर आइए।" कहकर बड़ी अपनत्वभरी मुस्कान के साथ उन्होंने अपनी सफ़ेद हथेली उठाकर 'बाई' के ढंग पर नमस्कार किया। तेजपाल के हाथ में रैकेट थे। हमलोग उन्हें सीढ़ियों पर चढ़ता देखते रहे : स्लिम शरीर, भरी देह, सीढ़ियों पर उठते क़दम, लहराते केश के फूल और ऊपर झूमते बाल....सीढ़ियों के मोड़ पर एक बार फिर बाई-बाई हुआ।

"सरकार अब चलिए।" बीनू ने याद दिलाया तो रणधीर झेंप कर मुस्कराया और बीनू के कन्धे पर हाथ रखकर लौट पड़ा : "मेजर तेजपाल की फैमिली बड़ी ऊँची है। देहरादून के प्रिंस ऑफ़ वेल्स कॉलेज में देखे थे मैंने इसके ठाठ। बाप शायद एच० एच० का कज़िन है। खुद छोटा-मोटा राजा है। हज़ारों एकड़ की ज़मींदारी है। देखा नहीं, हर बात में एक अजब शान है—चेहरे-मोहरे सभी से राजसी रौब टपकता है।" फिर मानो मेरी आदतों को लक्ष्य करके कहा : "कभी आपको ढीला-ढाला नहीं दीखेगा। बड़ा स्मार्ट (चुस्त) चैप है।"

मैंने लापरवाही से कहा : "यार, हमें तो तुम्हारी मिसेज़ तेजपाल बड़ी अच्छी लगीं।"

रणधीर का हाथ धीरे से हटाकर बीनू ने रेडियो ऑन कर दिया था और उसके ऊपर झुकी, बिल्कुल उससे मुँह सटाये स्टेशन मिला रही थी। एकदम खिलकर हमारी ओर देखती बोली: "अच्छी हैं न! सचमुच कितनी स्वीट हैं....दिल की बड़ी अच्छी है बिचारी। कोई भी बात बतानी-कहनी होगी, खुद बीस बार चली आयेंगी। और आफ़ीसर्स की बीवियों की तरह घमण्ड नहीं है कि वह तो हमारे यहाँ एक ही बार आई हैं, हम दूसरी बार कैसे जायें। आलस्य तो छू नहीं गया। उनका बस चले तो दिन भर गाती हुई किटी को सीढ़ियों पर ही चढ़ाती

उतारती रहें...." सहसा खट् से स्विच बन्द करके कुछ सुनती हुई वह बोली : "लो, ऊपर पहुँचते ही गाने लगीं। दिन भर गाती हैं....दिन भर बरामदे में स्वेटर बुनेंगी तो गायेंगी, किचिन में होंगी तो गायेंगी...."

"शी'ज़ फुल ऑफ़ म्यूज़िक।" रणधीर ने कहा।

सचमुच मैं आश्चर्य से स्तब्ध रह गया। इतनी स्नायविक घुटन के वातावरण के बाद ही सहसा कोई यों गा भी सकता है यह मेरी कल्पना में भी नहीं था....पहले तो मुझे ऊपर बजते रेडियो का भ्रम हुआ, लेकिन स्वर के साथ न कोई साज-संगीत था न रेडियो की खरखराहट....आवाज़ बस एक मधुर गुनगुनाहट-सी थी।

"लेकिन इन लोगों में...."

"है अपनी कोई पर्सनल चीज़।" रणधीर टाल गया : "दूसरों के व्यक्तिगत मामलों से हमें क्या मतलब ? बट यू सी हर....क्या ब्यूटी है, क्या शरीर है। बिल्कुल जैसे मक्खन का बनाकर खड़ा कर दिया हो। एकदम निन्नानवे नम्बर का दाना है।" वह पुलककर बोला।

"दाना क्या ?" मैंने जिज्ञासा से पूछा।

बीनू नाराज़ हो गई। भौंहें तरेर कर बोली : "शर्म नहीं आती दूसरों की बीवियों की बातें करते ? कोई आपकी बीवी को लेकर यों उलटी-सीधी बातें करे तो ?"

रणधीर ने टाई खोलकर बीनू के कन्धे पर रखदी और लापरवाही से बोला : "करे तो करे। हमारी बीवी क्या किसी से कम दाना है !"

बीनू लाल हो उठी : "हिश्ट।" रणधीर की पीठ पर प्यार से टाई फटकार कर बोली : "इसका तो ध्यान करो।"

"यही कौन हमारा, ख़याल कर रहा था। देखा नहीं, कैसा आँखें फाड़े दाने को खाये जा रहा था।" रणधीर अपनी लड़कपन की मस्ती पर उतर आया।

मेरे कान खड़े हो उठे। पूछा : "दाना क्या?"

झेंपकर जैसे बड़ी मुश्किल से बीनू ने बताया : "अरे भाई, हर खूबसूरत लड़की को ये लोग दाना कहते हैं। मतलब आँखों का भोजन। बड़े खराब हैं ये। इस बार विण्टर वैकेशन्स में किशोर आया था सो उसे भी सिखा दिया। रम्स या टेनिस याद करते-करते अचानक बोल उठता था—ममी, ममी! पापा का दाना गा रहा है। इसे उतरते-चढ़ते या किसी भी लड़की को आते-जाते देखता तो कहता—पापा का दाना जा रहा ... बोलो, वहाँ वापस स्कूल में जाकर क्या नाम रखायेगा? क्या कहेंगी सिस्टर्स भी कि अच्छे मैनर्स सिखाये हैं तेरे पेरेण्ट्स ने।"

'दाना' शब्द पर मुझे हँसी आये बिना न रही। बात चूँकि उसके बेटे पर आगई थी इसलिए बीनू एकदम भूल गई कि किस चीज़ के बारे में बता रही थी। उसने अपने बेटे के मैनर्स और आदतों पर बोलना शुरू कर दिया था। इसलिए मैं बीच में बोला : "है तो सचमुच दाना ही! बेशक निन्नानवे नम्बर का! उसे देखते तो मुझे पच्चीस भी मुश्किल से मिलेंगे।"

"ए माइण्ड इट," बनावटी क्रोध से रणधीर बोला : "यों हमारे शब्दों को मत खराब करो। गुड सैकिण्ड क्लास से कम नम्बर की चीज़ दाना नहीं कहलाती।"

"सॉरी" हमने फिर एक साथ बीनू को देखा। ऊपर से गुनगुनाहट अब भी आरही थी। मैं बोला : "यों साड़ी के साथ बाब्ड हेयर बहुत देखे हैं लेकिन किसी पर इतने अच्छे भी खिल सकते हैं, इससे पहले इसका अन्दाजा नहीं था!" सचमुच मुझे अब याद आया कि कटे बाल, लिपिस्टिक-पाउडर और पेट दिखाता ब्लाउज़, यह सब मुझे बड़ी ओछी मनोवृत्ति की चीज़ें लगती रही हैं। फिर भी मुझे उनसे घृणा नहीं हो पाई।

"च्च्...अये हये।" बीनू मेरा मज़ाक बनाती बोली : "बहुत

भा गई क्या ? कहो सन्देशा पहुँचवा दें ? लेकिन याद रखना, मेजर-तेजपाल गोली मार देंगे, मुझे तो देखते ही डर लगता है। राक्षस जैसी तो आँखें हैं।" आँखें बन्द करके वीनू ने भय की एक फुरहरी ली। फिर करुणा से बोली : "बाल इसके अब नहीं, दो महीने पहले देखते। रेशम जैसे बाल और ऐसे घने और लंबे कि पिंडलियों पर लहराया करते थे। शोर हो गया था सारी जुबली-लाइन्स में। इसी डर के मारे बेचारी जूड़ा बाँधती थी। राह चलते रुक जाते थे। सिर के बराबर का जूड़ा होता था। कम्बख्त चुपचाप गई और कटा ... । लेकिन ज़िन्दगी भर की आदत अभी गई थोड़े ही है। देखा नहीं तूने, हाथ बार-बार बाल सँवारने को उठ जाता है।"

"क्यों, कटवा क्यों आई ?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"अरे, ऐसी कोई बात भी नहीं थी। हमारे सामने की तो बात थी। यों ही सब लोग बैठे थे। ये गा रही थी ! गला तो अच्छा है ही, लोगों ने जी खोलकर तारीफ़ की। तेजपाल बोले : 'इसका गाना सुनते-सुनते तो मैं आजिज़ आ गया हूँ, लेकिन मुझे इसके बाल बड़े खूबसूरत लगते हैं। इन्हीं पर मरता हूँ।' उस वक्त तो कुछ नहीं बोली। दूसरे दिन ही जाकर सारे बाल कटवा आई और खुद उनकी याद करके रोती रही। है बड़ी सनकी।"

मैं जैसे धक् से रह गया....गुनगुनाहट अब भी सुनाई दे रही थी। आज जब सोचता हूँ तो फिर ध्यान आता है 'गोलियों का फूल और कुहकता स्वर।' उस क्षण पहली बार मेरी इच्छा हुई कि घुँघराले बालों के ज्योतिर्मण्डल से घिरे उस मुख-मण्डल को पास से देखूँ, दोनों कनपटियों को हथेलियों में दबाकर देखूँ....देखूँ उन आँखों में कौन-सी गहराइयों की तरल कालिमा मचल रही है....

बरामदे में बेंत की कुर्सियों से बचकर इस सिरे से उस सिरे तक टहलते हुए बाहर देखा; हवा सील गई थी और हल्की-हल्की बूँदें गिर रही थीं। आकाश गुम था। यहाँ-वहाँ लगे बल्बों की रोशनियों में गिरती बूँदें साफ़ दिखाई दे रही थीं। लॉन सोये पड़े थे और बच्चों के खेलने-फिसलने के लिए बने हुए लोहे के झूले जन्तर-मन्तर से दिखाई देते थे। आइसक्रीम और बिस्कुट के काग़ज़ इधर-उधर बिखरे थे। लॉन के किनारों पर क्यारियों में लगे सुर्ख़ और पीले डेलिया के फूल धुँधले-धुँधले दीखते थे; दूर किले के मैदान की ढालू सड़क से आती किसी मोटर की हैडलाइटों की हल्की परछाईं आँखों पर कौंध जाती और बरामदा हल्की रोशनी से भासमान हो उठता। सामने के ब्लॉक में हमारे फ़्लैट के साथ जो फ़्लैट पड़ता था, उसके पीछे की ओर वाला बरामदा इधर ही था। भीतर कमरे की हल्की-सी रोशनी में बनियान और खाकी नेकर पहने एक अर्दली दौड़-दौड़ कर मसहरी लगा रहा था। सामने ही वह कोना दिखाई दे रहा था, जिसमें बैठकर मैं अक्सर टाइप किया करता था और ऊपर वाले बरामदे में कभी-कभी किटी इतने ज़ोर से भौंकती थी कि सारा ब्लॉक गूँज उठता था। गाने का स्वर और किटी का भौंकना, कितनी विरोधी चीज़ें थीं, लेकिन लगता है जैसे इनमें कहीं गहरा साम्य है। हाँ, टाइप करते हुए, बरामदे में ही तो शायद पहली बार मैंने मिसेज़ तेजपाल के एक दूसरे रूप को निकटता से देखा था....

मेज़ पर चारों ओर काग़ज़ बिखरे थे और मैं टाइप कर रहा था। फलवाला आया था सो किवाड़ खुले ही थे....तभी डुबकी लगानेवाले हवाई जहाज़ की तरह गीत की गुनगुनाहट ऊपर से उतरती चली आई और मड़ से किवाड़ खुल गये....

"ओ सॉरी, मैंने सोचा मिसेज़ धीर बैठी-बैठी बिन रही होंगी, किवाड़ खुले होंगे तो अचानक जाकर उन्हें चौंका दूँगी।" दोनों हाथों से किवाड़ पकड़े वे खड़ी रहीं। आँखों पर काला चश्मा, हल्की गुलाबी क्रेप की साड़ी, वैसा ही ब्लाउज़, नाखूनों पर हल्के गुलाबी शेड की नेलपालिश, हाथ में बेंत की चपटी डोलची, जिसके दोनों ओर प्लास्टिक के फूल कढ़े पर्दे लगे थे। कन्धे पर सुनहरी काम का बिल्कुल सफ़ेद पर्स। मैं सचमुच चौंक पड़ा। हड़बड़ाकर उठा: "आइए, आइए।"

वे दरवाज़े को हल्का-सा भेड़कर उसी निश्चिन्त लापरवाही से एक-एक कदम पर ज़ोर देतीं बड़ी भीनी खुशबू के झोंके के साथ भीतर चली आईं।

"बीनू बाथरूम में है। अभी आती है। बैठिए आप तब तक।" मैं अपने टाइप किये पृष्ठों पर निगाह डालता बोला। रणधीर का शब्द दिमाग में टकराया: 'निन्नानवे नम्बर का दाना है!' जब मुस्कराहट किसी तरह नहीं रुकी तो सिर मोड़कर कागज़ समेटने लगा।

"अरे, मुझसे तो बोली थी कि दो बजे तैयार मिलूँगी। ये कोई नहाने का टाइम है? मरेगी।" वे बेंत की कुर्सी पर एक घुटने पर दूसरा चढ़ाकर बैठ गई थीं और सैण्डल पर अपलक निगाहें टिकाये धीरे-धीरे पाँव हिला रही थीं।

"कहीं बाहर जाना है क्या?" मैंने देखा, आज वे काफ़ी हल्के मूड में थीं। वे मिसेज़ धीर की जगह बीनू कह रही थीं।

"न्यू मार्केट की बात थी, शायद कुछ खरीदना था। कहती थी चार बजे से पहले आ जाना है न, वर्ना मेजर धीर वेट करेंगे। शायद कुछ पर्दे-वर्दे लेने हैं।" फिर झटके से मुड़कर बरामदे में लटके छोटे-छोटे हरे गमलों की तरफ़ निगाह डालकर बोलीं: "मुझे तो ये गमले और फूल बड़े अच्छे लगते हैं। बीनू बोली, मैं दिला लाऊँगी। मैं अपने

कमरे के साइडवाले बराण्डे में लटकाऊँगी। रात में कभी आँख खुल जाय, बराण्डे में चाँदनी के टुकड़े बिखरे हों....गमलों में लटके फूल कुनमुना रहे हों, बाहर ओस पड़ रही हो तब धीरे-धीरे टहलने में कैसा अच्छा लगता है। है न?"

अरे, ये तो बाक़ायदा कविता करने लगीं। मैंने चौंककर उनकी ओर देखा! काला चश्मा उन्होंने उतार लिया था और दोनों कमानियों को धीरे-धीरे दाँतों पर ठोकतीं वे बाहर की ओर निगाहें टिकाये कह रही थीं। उन्हें निर्भय होकर देख लेने का अवसर था। मैं उनकी कनपटी और कन्धों को छूते रेशमी बाल देख रहा था। शायद अभी-अभी उन्होंने सिर धोया था, शैम्पू की हल्की-हल्की गंध आ रही थी। कान का रिंग टूटे चाँद-सा लटका था ...कुहनी तक गुलाबी चुस्त ब्लाउज़ में बँधा हाथ कुर्सी की बाँह पर टिका था....घड़ी की काली डोरी कलाई पर बड़ी खूबसूरत लग रही थी।

तभी झटके से घूमकर वे बोलीं: "अरे लो, मैंने तो आपको डिस्टर्ब कर दिया। बैठकर गप्पें लड़ाने लगी। यह मेरी बड़ी बुरी आदत है, जहाँ भी बैठ गई कि गप्पें। अच्छा ऐसा है कि मैं ऊपर चली जाती हूँ, अपनी किटी से दो-एक बातें करूँगी, या नीचे गुड्डी से गाना सुनूँगी। जब मिसेज़ धी....बीनू नहा ले तो मुझे कहलवा दीजिए। आप काम करें...."

"नहीं, नहीं....मैं तो यहाँ खुद ही नींद से लड़ रहा था।" मैंने जानबूझ कर हाथ मुँह के सामने लगाकर जँभाई ली। वैसे उनके रंग-ढंग से भी उठने की कोई बात नहीं लगती थी। जैसे यह बात कहनी थी, इसलिए कह दी। धीरे से हँस कर कहा: "यहाँ आकर तो खाने से मैं परेशान हूँ। एक तो यह सीली-सीली हवा, दूसरे हर अगले घण्टे बाद ब्रेकफ़ास्ट, लंच, टी या डिनर में से किसी न किसी का वक्त हो

जाता है। बीच-बीच में फल-बिस्कुट तो चलते ही रहते हैं।....पहले खाने की खुमारी उतरी नहीं कि दूसरे का वक्त आ गया। सबके ऊपर यह जहाज़ों का सूट (कालिख)....आप क्या कर आईं?"

वे फिर बाहर देख रही थीं; झटके से मेरी ओर सिर घुमाया तो बालों ने झकोला लिया। "मैं!" फिर जैसे दर्द से हँसी, "मुझे क्या करना है? वही सुबह उठो, ब्रेकफ़ास्ट तैयार कराके दो, ये परेड से आयें तो साथ बैठकर खाओ और दोपहर भर बैठे-बैठे मक्खियाँ मारो। शाम को कहीं सिनेमा या वही आर्डिनेन्स-क्लब, या इस-उस के यहाँ रिटर्न-विज़िट।....मन नहीं लगता तो बीनू के साथ मार्केटिंग-वार्केटिंग पर चले गये, नहीं तो गुड्डी से गप्पें लड़ाते रहे....अपनी किटी के साथ थोड़ा-बहुत घूम आये, स्वेटर बुनते रहे। वही बँधी-बँधाई ज़िन्दगी....वही बँधे-बँधाये लोग....बस अपनी तो यहाँ बीनू से पटती है।" वे गोदी में रक्खे चश्मे की कमानियाँ उठाती-गिराती रहीं।

"और बीनू आपके गुण गाते नहीं थकती।" मैं देख रहा था, इस समय उनके ऊपर उस छाया का कोई नामोनिशान नहीं था जो मेजर तेजपाल की उपस्थिति में उनकी आँखों में मँडराया करती थी। वे ऐसी खुलकर बैठी थीं जैसे न जाने कब की परिचित हों। पता नहीं यह काल्पनिक इच्छा-पूर्ति होती है या कुछ और कि कुछ चीज़ें हमें इतनी अच्छी लग जाती हैं, और हम उनमें अपनापन झलकता देखने लगते हैं।

वे कह रही थीं: "बीनू से ही क्या होता है, यहाँ तो सभी लोग नाराज़ हैं।" सहसा चुप होकर वे कुछ सोचने लगीं। मैंने सोचा, शास्त्रानुसार आकर्षक न होते हुए भी ये आँखें कम सुन्दर नहीं हैं। 'सभी लोग' में कहीं न कहीं निश्चय ही तेजपाल होंगे, लेकिन यह विषय इतना कोमल था कि छूने की हिम्मत नहीं होती थी। उत्सुकता के

मारे मेरा मन बेचैन हो उठा। मैंने बड़े आग्रह से कहा : "आपने हमें गाना नहीं सुनाया मिसेज़ तेजपाल !"

मेरी बात पर गौर से उन्होंने मुझे देखा और सहसा खिलखिला कर हँस पड़ीं : "गाना !" उनके गालों के भँवर और गहरे हो आये। हँसते-हँसते वे दो-तीन बार आगे-पीछे झुकीं और दाँतों की बिजली से चौंधियाकर मैंने आँखें दूसरी ओर घुमा लीं। "दिन भर तो गाती रहती हूँ। अब अलग से ही गाने में क्या रक्खा है ?"

मुझे उनके हँसने का कारण समझ में नहीं आया। लगा यह हँसी बड़ी नपी-तुली और नाप मिलाकर नकली है। फिर जैसे मुझे बड़े कान्फिडेन्स में लेकर बोलीं : "कभी खूब जी भर कर सुना दूँगी, इतना कि आप ख़ुद मना करने लगें।"

"अब सुनाइए न।" मैंने फिर उसी आग्रह से कहा। सोचा शायद और गानेवालों की तरह दो-एक बार कहे बिना वे न गाती हों। "अपने मन से जब गायेंगी, तभी गायेंगी ?"

हठात् वे उठ खड़ी हुईं। चश्मे की कमानी पकड़कर घुमाती हुई बोलीं : "तो ज़िन्दगी भर दूसरों के मन से ही गाती रहूँ ? नो, आई सिम्प्ली कान्ट। अकबर का वो कौन सा शेर है ?—भरते हैं मेरी आह को वे ग्रामोफ़ोन में, कहते हैं दाम लीजिए और आह कीजिए।" फिर सहसा बात तोड़कर कहा : "अरे बड़ी देर लगादी बीनू ने।" वे एक-एक क़दम रखतीं; चश्मे की कमानी से घुमातीं बरामदे के दूसरे सिरे अर्थात् बाहर के दरवाज़े के पास तक गईं और बुँदकियों-दार धुँधले काँच के पार देखने की कोशिश करती रहीं।

मेरा मुँह तमतमा आया। स्तब्ध बैठा देखता रहा। वे मुझ से अचानक इतनी सख़्त बात कह बैठेंगी, इसके लिए मैं तैयार नहीं था। मैंने क्यों कहा उनसे गाने को। रेडियो-सिनेमा में मैंने उनसे अच्छे

गाने सुने हैं। ऐसी कोई खास जन्नत की हूर भी नहीं हैं। हम लोगों ने अपने को गिरा-गिराकर इन औरतों के दिमाग़ सचमुच बहुत बढ़ा दिये हैं। बैठी रहतीं चुपचाप। वह तो शिष्टाचार के नाते बोलने लगा था। उनके चेहरे की मुस्कराती छवि देखकर जाने कैसे मुझे ऐसा विश्वास हो गया था कि मैं उनसे चाहे जैसी बात कहूँ, वे बुरा नहीं मानेंगी और मेरी बात रक्खेंगी। और झूठ नहीं बोलूँगा, अपने को मैं विशिष्ट-व्यक्ति भी समझता था, इसलिए चाहता भी था—उन्हें मेरी बात रखनी ही चाहिए। शायद इस वक्त उनका रंग-ढंग भी इतना कुछ उन्मुक्त था। मैं उन्हें पीछे से ग़ौर से देखता रहा—सुडौल तो उनका शरीर है ही। गुलाबी साड़ी का फॉल और पटलियाँ। झीनी साड़ी से झाँकती बालिश्त भर, चौड़ी कमर की पट्टी। जाने क्यों मुझे उन पर क्रोध ही नहीं करते बन रहा था, लगता था कहीं वे बहुत निरीह हैं। वे अब लौटेंगी, सोचकर मैं अपने काग़ज़-पत्तर घूरने लगा।

"और बताइए, आपकी शायरी कैसी है?" मुड़ते ही उन्होंने ऐसी स्निग्धता और अपनत्व से पूछा जैसे कोई बात ही नहीं हुई हो। दोनों पंजे फैलाये मुझे टाइप करने को तैयार देखकर वे सहसा खिलखिलाकर हँस पड़ीं: "एक ही बात से सारी सुस्ती दूर हो गई न! सचमुच, आप आदमी लोग भी बड़े अजब होते हैं। आप चाहते हैं इसीलिए फूल खिलें, इसीलिए कोयल बोले, इसीलिए झरने बहें, बादल भटकें! मैं देखती हूँ कि रूप-रंग चाहे जितने अलग हों, मिट्टी सब एक है।"

नहीं, मैंने सोच लिया था कि मैं इनकी किसी बात पर आश्चर्य नहीं करूँगा। ऐसा नहीं लगता कि वे अपनी स्वाभाविक स्थिति से गुज़र रही हों। मैं चुपचाप व्यर्थ ही टाइप करता रहा। एक बार मन में आया कि कोई सख़्त बात कह दूँ, फिर चुप रह गया। फिर वे एकदम स्वाभाविक स्वर में बड़े अनुरोध से बोलीं: "हमारा एक काम कर

दीजिए न, कुछ अपने और दूसरों के अच्छे-अच्छे शेर लिख दीजिए।"

मैंने सिर हिलाया और व्यस्तता से अनमने भाव से कहा : "जी।" [illegible] कते हुए मुझे देखा और दो चक्कर लगाये, हुँ, आप से तो ज़रा-सा गाने को कहा सो नहीं हुआ और दूसरे से आप उम्मीद करेंगी कि दुनिया भर की वेगार करेगा। वे मुस्करा कर बोलीं : "आपको अभी कहीं फाँसी-वाँसी नहीं मिली।"

मैंने सिर उठाकर प्रश्नवाचक मुद्रा [illegible] देखा, अर्थात् क्या मतलब ?

"नहीं समझे ?" वे इस तरह हँसीं जैसे बहुत बड़ा मज़ाक़ करने जा रही हों। "कोई फ्यांसी-व्यांसी नहीं है ?"— मानो गाने का अनुरोध करने का मेरी प्रेमिका से कोई सम्बन्ध हो। "अच्छा आप तो बताएँगे नहीं, वीनू से पूछती हूँ।" फिर सुना वे गुसलखाने के पास जाकर वीनू से बातें कर रही हैं। उनकी डोलची अभी तक कुर्सी के पास रक्खी थी। मन हुआ कि उठाकर नीचे फेंक दूँ, फिर अपने बचपन पर ख़ुद ही हँसी आई। कार्बन को मुट्ठी में गोल-मोल करके फेंकने से पहले एक बार फिर इच्छा हुई कि उसे उनकी डोलची में रख दूँ। तभी दूसरी ओर के बरामदे से सुनाई दिया। "ऊँची-ऊँची दुनियाँ की दीवारें सैयाँ तोड़के....हाँ तोड़के....मैं आई रे, तेरे लिए सारा जग छोड़ के...."

अरे, वे तो गाने लगीं। मैं मुस्करा उठा। नीचे का पेड़ हमारे फ़्लैट के बराबर उठा था। इस कुहुक को सुनकर पेड़ पर बोलती कोयल सहसा चुप हो गई....

लेकिन आखिर मिसेज़ तेजपाल ने ऐसा क्या कर डाला कि तेजपाल पागल हो गये, यह बात अभी तक मेरी समझ में नहीं आ रही

थी। और जब किसी तरह मन नहीं लगा तो मैं [illegible]
आया। मेजर अइयर के फ़्लैट में रणधीर के खि[illegible] से हाँफते
आ रही थी। किसी के यहाँ टेलीफ़ोन घन[illegible]
मुझे बेचैनी-सी हुई कि कोई इसे उठा क्यों नहीं लेता। ग्राउण्ड फ़्लोर के बरामदों या भीतर के कमरों की रोशनियाँ बाहर सड़क तक फैली थीं। पर्दे के लिए नीचेवालों ने रेलवे-क्रीपर और बेगम-बेलिया की घनी बेलें सामने की तरफ़ लगा ली [illegible]। बेगम-बेलिया के सुर्ख़ रेशमी कतरनों जैसे फूलों के बीच-बीच से ग्रा[illegible]फ़ोन के भोंपू से झाँकते रेलवे-क्रीपर के बैंगनी फूल बड़े अजब और [illegible]रे लगते थे। बिलियर्ड ज़ोरों से जम रहा होगा। गेंदों और मार्कर की खटर-पटर के साथ बीच-बीच में एक साँस-रोक सन्नाटा छा जाता होगा। मेरा मन किसी तरह वहाँ नहीं लगेगा, मैं जानता था। यों ही हुगली के किनारे तक घूमने के इरादे से मैं सड़क पर निकल आया। पानी बरस चुका था। आती-जाती मोटरें अपने पहियों से सड़क के पानी को चर्र करके रगड़ती हुई चली जाती थीं और हैडलाइटों से सड़कों की भीगी हुई काली सतह चकाचौंध हो उठती थी। किले के मैदान की हरी घास सीलन सोख रही थी। सड़क की नियोन-बत्तियाँ चिड़ियों की तरह पेड़ों के गीले पत्तों के पीछे छिपी झाँक रही थीं। सड़क के एक ओर जुबली-लाइन्स के ये ब्लॉक अँधेरे और उजाले के चार-खानों से बने हुए लगते थे। अब तो किले की बग़ल में भी रहने के लिए क्वार्टर बन गये थे। पहले मुझे अच्छी तरह याद है, उधर क्वार्टर बनने की कोई बात ही नहीं थी। इसी सड़क पर तो मैंने अक्सर मिसेज़ तेजपाल को किटी की जंजीर पकड़कर धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए उसे घुमाकर लाते देखा था। उनके एक हाथ में एक पतली सी बेंत रहती थी और दूसरे में कलाई पर चमड़े का फीता लिपटा रहता था। वह अलसेशियन कुतिया किटी

दीजिए न, कुछ ऐसे कमान की तरह झुकी पीछे-पीछे....उनकी जो .. मैंनेमि. के साथ ही मेरे सामने कौंध जाती है वह यही कि वह तगड़ी ताकतवर कुतिया जैसे उन्हें खींचे लिये चली जा रही है और वे पीछे-पीछे मजबूर-सी खिंचती चली जा रही हैं....डर है कि ज़रा-सी ठोकर लगी या सन्तुलन बिगड़ा और वे लुढ़कीं, वे थीं कि गुनगुनाती थीं। शायद मन पर पड़ी इस छाप का कारण यह हो कि मैंने पहले-पहल उन्हें इसी रूप में देखा हो....

मैं बस से उतर कर हाथ में किताब लिये क्वार्टर की तरफ़ चला आ रहा था कि देखा—सामने किटी मिसेज़ तेजपाल को खींचती हुई फाटक से निकल रही है। किटी के साथ-साथ उन्हें भागते हुए चलना पड़ता था। एक बार तो मेरे मन में आया कि अन-देखा कर जाऊँ। लेकिन उन्होंने भी देख लिया था। साथ ही मुझे उनकी कुहनी में बँधी सफ़ेद पट्टी दिखाई दी। अब उनसे उस पट्टी के बारे में न पूछना मुझे अशिष्टता लग रह थी। उस दिन की बात अभी भूला नहीं था। फाँसी—मैंने शब्द मन-ही-मन दुहराया और मनाने के जिस अन्दाज़ में वह मुझसे कहा गया गया था, उसका ध्यान आते ही हँसी आई। निगाहें मिलते ही दोनों मुस्कराये।

"अपनी किटी को घुमाने ले जा रही हैं!" दोनों कान जोड़े खड़ी अपनी ओर ताकती उनकी कमर से ऊँची उस कुतिया को सहमी नज़रों से देखते हुए मैंने हँसकर पूछा। चमड़े की पेटी से उसका पेट भी बँधा था।

"हाँ जी, इस वक्त इसका मन ही नहीं लगता। मार परेशान कर रक्खा था जब से। मैंने कहा, चल पहले तुझे ही घुमा लाऊँ।

उनके बाल अस्त-व्यस्त हो गये थे। बड़े बेमालूम तरीक़े से हाँफते हुए उन्होंने छड़ी वाले हाथ से कानों के ऊपर के बाल हटाये। पूछा : "आज टाइप नहीं करेंगे ?"

"अब !" मैंने घिरते अँधेरे और छिपते दिन की ओर इशारा करके कहा : "ये भी कोई वक्त है टाइप करने का ? मुझे तो आज तक याद नहीं कि मैं कभी इस वक्त कमरे में बंद होकर बैठा होऊँ। कहीं इधर-उधर टहलूँगा, इसके बाद टाइप करने बठूँगा। आज तो काफ़ी काम करना है।" तब मुझे फिर परसों की बात याद हो आई। कुछ ठण्डे ढंग से पूछा : "आज क्लब वग़ैरा नहीं गईं ?"

"मेजर तेजपाल एन० सी० सी० कैम्प में गये हैं न ?" कुतिया उन्हें एक तरफ़ खींच रही थी। भूरा मटमैला रंग और जगह-जगह काले रोएँ। छाती पर पीले पीले से मुलायम बाल और अजब ख़ूँख़ार ढंग की बादामी आँखें। उस कुतिया की आँखों में देखने में मुझे डर लगता था। उसकी आँखों में देखते ही उसकी पुतलियों के सुनहले तिल एक अजब वहशियाना भूख के साथ सिकुड़ने-फैलने लगते थे। कुतिया उनकी कमर से ऊँची थी। अगर यह चाहे तो उन्हें तिनके की तरह खींच कर ले जा सकती है। न यह फ़ैशनेबुल ढंग की बेंत मदद करेगी और न यह संगीतमय गला उन्हें रोक पायेगा। मैंने ऊपर से कहना चाहा, 'अच्छा यह बात है। तभी आजकल गाने-बाने की आवाज़ें कम आ रही हैं।' मैं भुनभुना कर रह गया, लेकिन हिम्मत नहीं पड़ी। जाने क्या जवाब दे दें।

कुतिया से खींचातानी की व्यस्तता में उन्हें मेरी बात सुनने की फ़ुर्सत नहीं मिली। एक दम बोलीं : "चलेंगे, ज़रा हुगली तक इसको घुमा लाएँ....काम तो नहीं है कुछ ?"

"चलिए।" मैंने किताब गेट पर खड़े दरबान को दी और हम

दोनों हुगली की तरफ़ चल दिये। आज मुझे मिसेज़ तेजपाल में कुछ अजब-अजब बात लग रही थी, लग रहा था जैसे मुझे उनसे कोई बात कहनी थी जो याद नहीं आ रही है। कनखियों से देखा तो सहसा चौंक उठा : "अरे ये आपके हाथ में क्या हो गया?" मुझे याद आया कि यही बात तो मैं पहले पूछना चाहता था।

लापरवाही से ठोड़ी झटक कर ये बोलीं : "यों ही ज़रा बाथरूम में फिसल गई थी। ध्यान रहा नहीं तो मैट से पाँव फिसल गया।"

"ज़्यादा चोट तो नहीं आई।" मैंने चिन्ताकुल स्वर में पूछा। उनकी ओर देखा तो मन हुआ पूछूँ कि आपने मुझे खुद क्यों नहीं बताया। लेकिन यह निहायत अनधिकार बात थी।

"नहीं।" उन्होंने ऐसे टालने के ढंग से कहा कि मुझे चुप हो जाना पड़ा। मुझे ऐसा लगा जैसे यह बाथरूम में फिसलने की बात सही नहीं है और इसे मैं पहले भी कहीं, किसी और मुँह से सुन चुका हूँ—शायद एकाधिक बार।

हम लोग चुपचाप चलते रहे। अँधेरा घना हो गया था और गैस की बत्तियाँ जलाने वाला दौड़-दौड़कर बत्तियाँ जलाता चला जा रहा था। सेण्ट ज्यार्जेज़ गेट के सामने वाली सड़क के बीच बने हरी घास के लॉन वाले द्वीपों को पार करके अब हम लोग चुपचाप हुगली के किनारे जाती पटरी की रेलिंग के सहारे-सहारे चलने लगे थे। मिसेज़-तेजपाल के साथ चलने में बड़ी झिझक लग रही थी : कोई परिचित देख ले तो क्या सोचे? कल ही कोई कहेगा—'आप उस वक्त ज़रा 'ऊँचाई' पर थे इसलिए टोका नहीं।' लेकिन उनके साथ चलने में ऐसा कुछ आकर्षण था कि मन-ही-मन बड़ा गर्वमय सन्तोष हो रहा था। भीतर भय था कि कहीं सामने से रणधीर या मेजर तेजपाल ही न आ जायें। तेजपाल के चेहरे की कल्पना करके मानो मेरा दिल

आतंक से भर उठा। रह-रहकर मैं सिर मोड़कर उनकी ओर देख लेता और पकड़ा न जाऊँ इसलिए दूर बादलों, गुज़रते कार्गो (लद्दू जहाज़ों) और स्टीमरों पर निगाहें टिकाये रखता। वे धीरे-धीरे गुनगुनाती हुई व्यर्थ ही हाथ की बेंत को ऊपर-नीचे झटकार रही थीं। कुतिया चुपचाप चल रही थी। एक खुली जगह से रेल की पटरियाँ पार करते हुए हम लोग जब नदी के ठीक किनारे वाली सड़क पर आये तो वे धीरे से हँसीं।

मैंने इधर-उधर देखकर कि शायद कहीं कोई मज़ाक की चीज़ हो, पूछा : "क्यों, क्या हो गया?" लेकिन कहीं कोई ऐसी चीज़ नहीं दिखाई दी।

"मुझे इन हुगली के किनारे घूमने वालों पर हँसी आती है।" उन्होंने सड़क के किनारे खड़ी कारों की लाइन की ओर इशारा करके कहा : "मछलियों की बदबू और जहाज़ों के मथे गन्दे पानी वाली इस नदी के किनारे आकर ये लोग शायद अपने को चौपाटी या ट्रिप्लिकेन-बीच पर खड़ा समझते होंगे।"

"इसमें हँसने की क्या बात है?" मैंने व्यर्थ ही झुककर एक कंकड़ उठा लिया और उसे दो-एक बार झुलाकर पटरी पर फेंकता बोला : "यह तो मजबूरी है। यहाँ कहाँ से ये लोग ट्रिप्लिकेन-बीच या चौपाटी लायें!"

"आप को हँसने की बात ही नहीं लगती? देखिए न, यहाँ आकर भी ये लोग भीतर कारों में बन्द बैठे-बैठे रेडियो सुनते रहते हैं। तो फिर घर ही क्या बुरे थे? बहुत हुआ तो मडगार्ड से टिक कर मूड़ी या आइसक्रीम खाली—मानो हुगली पर कोई अहसान कर रहे हों।" हमारी पगडण्डी पर भी घूमने वाले लोग आ-जा रहे थे।

"आप यह क्यों नहीं सोचतीं कि बन्द कारों में सही, लेकिन स्त्रियों

को अपने साथ ले आना इनके लिए बड़ी भारी क्रान्ति है। वर्ना इन्हें निकलना कहाँ नसीब होता है। वहीं अपने बन्द और घुटे वातावरण में रहती हैं, अपने को सबसे अनोखा समझती हैं। चूँकि जिन लोगों से मिलना-जुलना होता है वे या तो रिश्तेदार होते हैं या नौकर-चाकर और सेठजी के कृपा-पात्र लोग, इसलिए लामुहाला अपने को सबसे महान और ऊँचा समझने का कम्प्लैक्स इनमें पैदा हो जाता है। गाड़ी से बाहर निकलकर घूमने लगें तो लोग साधारण आदमी न समझने लगें?"

"हुँह," उन्होंने जिस तरह कहा, उससे उनका बिचकता मुँह मेरी आँखों के आगे नाच गया। वे ज़रा ज़ोर से बोलीं: "दे शुड बी शाट एण्ड चार्ज्ड फ़ार द बुलेट्स! इनसे गोली के पैसे रखवाकर इन्हें गोली मार देनी चाहिए।"

बात सुनकर एक साहब चलते-चलते सिगरेट जलाना भूलकर देखने लगे। यों हर पास से गुज़रती निगाह एक बार उन्हें न देखले, यह सम्भव नहीं था। अपने उस वाक्य पर वे खिलखिला कर हँस पड़ीं। दो बार उन्होंने बाल झटके, हालाँकि आज उन्होंने सारे बाल पीछे की ओर किये हुए थे और दो बड़ी-बड़ी चम्पाकलियों की तरह उनके कान ऊपर दिखाई देते थे। मुझे उनका यह वाक्य बड़ा अप्रत्याशित और असाधारण लगा। हम लोग अब मैन-आफ़-वार-जेटी के सामने से गुज़र रहे थे। सफ़ेद दूधिया रंग का एक ख़ूबसूरत चुस्त जहाज़ बल्बों की आड़ी-तिरछी मालाएँ डाले खड़ा था। ढालू पुल से प्लेट-फ़ार्म पर लोग आ जा रहे थे। मछली खरीदने और बेचनेवालों के अपनी ओर मुड़े मुग्ध चेहरों के बीच बेंत से साड़ी बचाती मिसेज़ तेजपाल झुके सिर पर जिस लापरवाही से बालों को लटकने दे रही थीं उससे यह बात मेरे दिमाग़ में आये बिना न रही कि वे अपने प्रति ही नहीं,

लोगों की निगाहों और निगाहों में तैरती प्रशंसा के प्रति सचेत और लापरवाह, दोनों हैं। बात मुँह पर आते-आते रह गई कि जिन्हें आप गोली मार देना चाहती हैं वे भी तो आपके बार-बार हाथों पर खिसक आते पल्ले और वजह-बेवजह मुस्कराने पर कुछ कह रही होंगी। लेकिन कहा : "आप शायद उनकी तरफ़ से नहीं सोचना चाहती ?"

"देखिए नदी के किनारे आये हैं तो इस तरह बैठकर खुली हवा खानी चाहिए।" कहकर वे किनारे की घास पर बिना किसी पूर्व-सूचना के धम् से बैठ गईं। कुतिया उनके पीछे आ खड़ी हुई। अब मैंने देखा; कितनी बड़ी कुतिया थी। उसकी पीठ इनके सिर से ऊँची निकली हुई थी।

एक क्षण इधर-उधर देखकर मैं भी बैठ गया। भीतर एक अनजान भय था और एक अनाम पुलक थी। पास के पेड़ के नीचे हमारी ओर पीठ किये, कन्धे सटाये एक और बंगाली जोड़ा बैठा था। मुझे बार-बार लगता था जैसे अभी कोई भारी-सा पंजा पीछे से आकर गर्दन पर पड़ेगा : 'क्यों बच्चू, यहाँ बैठे हो।' और मैं मुड़कर देखूँगा कि अरे, ये तो मेजर तेजपाल हैं। शायद यह बीनू का वह वाक्य था जो भय बन कर समा गया था। और इसीलिए मैं उनके सान्निध्य को कभी सम्पूर्णता से ग्रहण नहीं कर पाया था। लेकिन मिसेज़ तेजपाल की निश्चिंतता देखकर बड़ी सांत्वना मिल रही थी।

वे अपलक आँखों से जहाज़ को देखती रहीं—छोटे-छोटे केबिन; रेलिंग, गैलरियाँ, बारजे और चिमनियाँ और भोंपे। किनारे पर दो सुन्दर-सी नावें खिलौनों की तरह लटकी थीं। दोनों पंजे छाती पर रक्खे खलासी लोग इधर से उधर दौड़ रहे थे। ऊपर कप्तान के केबिन के सामने मेज़ और कुर्सियाँ डाले कुछ लोग कपों में कुछ पी रहे थे। एक कुर्सी खाली पड़ी थी। जहाज़ की बत्तियाँ मिसेज़ तेजपाल की आँखों में झलमला रही थीं : "जाने क्यों इन जहाज़ों को देख-देखकर

बड़ी अजीब-अजीब बातें मेरे दिमाग़ में आती हैं।" वे अस्फुट-से स्वर में बोलीं : "जाने कहाँ-कहाँ घूमते होंगे ये। इस पर रहनेवालों को कैसा लगता होगा जाने....वैसे भी नदी के किनारे घास पर बैठने का मुझे नशा है। बचपन से ही बहते पानी को देखकर अजब-सा मन हो जाता है। मुझे याद है जब हम छोटे थे, हमारे घर के पीछे ही एक खूब चौड़ी नहर थी। मुझे जब भी मौका मिल जाता, वहीं भाग जाती। बैठी-बैठी घण्टों पानी को देखा करती। पानी में बादल तैरते रहते....मेरा मन होता मैं भी इन बादलों में से एक पर बैठकर तैरती हुई समुद्र में चली जाऊँ—खूब दूर चली जाऊँ....उधर कहीं से कोई तूफ़ान में भटका, दिशा-भूला जहाज़ जा रहा हो....मैं दोनों हाथों को भोंपू-सा बनाकर खूब ज़ोर-ज़ोर से जहाज़ वालों को आवाज़ दूँ...मेरे गले की नसें उभर आयें....लेकिन जहाज़ चला ही जाये....सूनी-सूनी आँखों से मैं उसे क्षितिज में खोता हुआ देखती रहूँ....देखती रहूँ और फिर फूट-फूटकर रो पड़ूँ...."

मैंने देखा, वे सहसा फिर भावुक हो उठी हैं। कितनी जल्दी वे अपने बाल झटकने के साथ ही मूड बदल लेती हैं—मैं तो इतनी जल्दी अपने को नहीं बदल पाता। पीछे खड़ी मोटरों की कतारें, आइसक्रीम, मूँगफली और मूड़ी चना जोर गरम या चीना-बदाम बेचने वालों, ज़न्नाटे से गुज़रती बसों, हमें रहस्यमय कुतूहल से देखते ठीक पास से गुज़रते सैलानियों की रेंगती निगाहों और सामने नावों, स्टीमरों और कार्गो-लाँचों की छायाएँ मेरी चेतना में कुछ इस तरह कुलबुला रही थीं कि सहसा बादलों और चीलों के साथ तैरने की बात मैं नहीं सोच सकता था। लेकिन इस सबकी शायद उन्हें चिन्ता भी नहीं थी। आज सोचता हूँ तो लगता है कि वे शायद ये सारी बातें मुझे सुना भी रही थीं, इसमें शक है। वे तो अपनी मुखर मानसिक-स्थिति का एक गवाह

चाहती थीं और संयोगवश वह मैं था।

"अब देखिए, इस किनारे पर देखिए।" वे अपनी कुतिया की गर्दन पर हाथ रखकर कह रही थीं : "पानी कैसा लहरें मार रहा है। शायद ज्वार का समय है। अच्छा, आप ही बताइए, रोशनी की परछाइयाँ ऐसी नहीं लगतीं जैसे चमकदार सुनहले-सुनहले साँप पानी में तड़प रहे हों और फिसलन भरे किनारे पर चढ़ने की कोशिश कर के रह जाते हों....नावों के भीतर मसाला पीसते, खाना बनाते लोग....वह देखिए, हाय वह माउथ-ऑर्गन पर कैसी अच्छी धुन निकाल रहा है—हमें तो शामे ग़म में काटनी है ज़िन्दगी अपनी...." और वे धीरे-धीरे माउथ-ऑर्गन के साथ स्वर मिलाकर गाती रहीं। फिर सहसा आनन्द की एक फुरहरी लेकर उन्होंने साड़ी को कमर के पास बग़ल में खींच लिया। उनकी चुस्त-ब्लाउज़ में कसी पीठ और सुडौल कन्धे—दोनों तो पूरे खुल ही गये, कमर का भी काफ़ी हिस्सा दिखाई देने लगा। इस ओर से बेखबर वे बोलीं : "उफ़, मेरा तो मन कर रहा है, उछलकर खड़ी हो जाऊँ और कुलाचें भरती हुई इधर से उधर भागूँ।" उन्होंने आवेश में आकर बैठी हुई कुतिया के दोनों कान अपनी अँगुलियों से इस तरह प्यार से झटक दिये मानो किसी बच्चे के बाल बिखरा रही हों : "आज जाने क्यों मेरा मन बड़ा खुश है। बड़ा फ्री है। अच्छा एक गाना गाऊँ ?"

"नहीं भई, कुछ तो ध्यान कीजिए आस-पास का।" मैंने सहसा चौंक कर कहा और कनखियों से इधर-उधर देखकर धीरे से हँस पड़ा। इतनी बड़ी होकर भी मानो हर लड़की कहीं न कहीं छोटी बच्ची है जो अभी ठुनक कर कह उठेगी : "उहुँ, हम तो सुनाएँगे।"

"नहीं, बस एक। भई, आप तो गुस्सा बहुत जल्दी हो जाते हैं। मेरी बात को याद मत रक्खा कीजिए। मैं तो यों ही, जो मन में आता

है कह देती हूँ। बहुत धीरे-धीरे गाऊँगी। आप भी कहेंगे, कैसी बदतमीज़ है, लेकिन गाऊँगी ज़रूर।"

उनके स्वर में एक ऐसी अजब और अप्रत्याशित आत्मीयता थी कि मैं चौंक पड़ा, जैसे वह एक ऐसा धक्का था जिसे एक दम सँभाल पाना मेरे लिए संभव नहीं था। पिछली धारणा उनके बारे में कुछ इस तरह की बन गई थी कि यह सब बड़ा विरोधाभास-सा लगा।

और वे अपने उठे हुए घुटनों के निकट ठोड़ी लाकर धीरे-धीरे गाने भी लगी थीं। माउथ-ऑर्गन के साथ अभी तक वे गुनगुना रही थीं और वह भी बड़ा अस्पष्ट और अस्फुट। स्वर चूँकि काफ़ी धीमा था इसलिए मैं सिर पास लाकर सामने देखते हुए सुनने लगा....वे मजाज़ की गज़ल गा रही थीं—"ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ...."

ज़रा-सा गला साफ़ करके स्वभाव के अनुसार उन्होंने बाल झटके तो, एक गुच्छा मेरे कानों से आ टकराया....तब पहली बार मेरा सारा शरीर ऊपर से नीचे तक झनझना उठा। मुझे जैसे नये सिरे से अपनी उपस्थिति का बोध हुआ। मैंने हथेली कान पर फेरकर उस सुरसुराहट को झाड़ने की कोशिश की....लेकिन एक अजब-मादक, स्वप्निल मीठी-मीठी गंध का कुहासा मुझे अपने चारों ओर गाढ़ा-गाढ़ा उभरता-सा लगने लगा....जैसे विस्मृति के सागर की लहरें संगमरमर की चट्टानों पर पछाड़ खाती हों और उनकी फुहारों से मेरा तन-मन भीगा जा रहा हो....

"मुन्तज़िर है इक तूफ़ाने बला मेरे लिए
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा मेरे लिए
पर मुसीबत है मेरा अहदे-वफ़ा मेरे लिए
ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ ?....

दिल में इक शोला भड़क उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
ज़ख़्म सीने का महक उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ ?...."

जिस समय मिसेज़ तेजपाल विभोर होकर ये लाइनें गा रही थीं, मैं जैसे अपने पास से उठकर कहीं और चला गया था। जैसे उनसे, आसपास के वातावरण से कहीं दूर....किन्हीं अनजाने बर्फ़ानी चोटियों के पार....मुझे लगा जैसे मैं सितम्बर या मार्च की चाँदनी के सन्नाटे में किसी सूने-सूने लॉन पर सिर के नीचे हथेलियाँ रक्खे चित लेटा कुहरिल आसमान को देख रहा हूँ और आस-पास की क्यारियों के गुलाब, बेले और चमेली की लहरों के बीच भँवर की तरह खिलखिला उठे हैं.... जैसे कभी-कभी आधी रात तक ताजमहल के लॉन में लेटा रहा करता था और किसी उदास बुजुर्ग की तरह घुटनों में सिर दिये ताजमहल चुपचाप बैठा चाँदनी में भागता, किन्हीं अतीत की दूरियों में खोया रहता था। एक क्षण को मुझे लगा जैसे सचमुच मैं उसी क्षण में लौट गया हूँ और अधमुँदी आँखों से आसमान को थाहे जा रहा हूँ और ताज की सीढ़ियों पर, हथेली पर ठोड़ी रक्खे कोई उदास बैठा जाने क्या सोच रहा है, इस बात की छाया का अहसास मेरी पलकों में रह-रह कर मँडरा जाता है....तभी किसी स्टीमर ने भोंपू की लम्बी कराह के साथ सामने की जगह पार की तो मैं फिर साश्चर्य अपने में लौट आया। कहाँ चला गया था मैं अभी-अभी ?....

"जी में आता है ये मुर्दा चाँद तारे नोच लूँ
इस किनारे नोच लूँ, और उस किनारे नोच लूँ
एक दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूँ
ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ ?...."

उनके गाते-गाते मुझे लगा जैसे बीच में उनके गाने का प्रवाह कहीं रुका और उन्होंने कुछ रुक कर ज़ोर से दाँत पीसे....मानो सचमुच चाँद-तारों को नोचने का जोश उनके भीतर उफन रहा है....मुझे लगा जैसे जादू का ज्वार धीरे-धीरे उतरने लगा हो....उनका वह मूड, उनकी पुरानी तस्वीर और यह अवसाद....जैसे कहीं दोनों में कोई साम्य या संगति न हो....और इस चेतना ने फिर से हुगली के किनारे पर पहुँचा दिया....

वे सामने बैठी खोई-खोई गाती रहीं और मुझे उनकी अपनी ओर वाली मखमली बाँह, रेशमी बाल, और कनपटी पर चाँद, किटी का चौकन्ना चेहरा—सभी कुछ एक कुहासे के पार खोता हुआ लगने लगता और फिर मैं होश में आकर देखता कि वे अपने हाथों की पतली-सी बेंत को धीरे-धीरे अपने उठे हुए पंजों पर मार रही थीं। जैसे उनकी यह हरकत, हिलते हुए ओंठ और कुहनी पर बँधी सफ़ेद पट्टी मुझे खींच कर फिर धरती पर ले आती और कॉस्मेटिक्स की भीनी-भीनी महक फिर ऊपर हवाओं पर उछाल देती, फूल-सा हल्का बना देती थी। अपने सिर के पास ही उनके सिर का होना मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था और मन कहता था—कोई हम दोनों को इस प्रकार देखकर क्या कहता होगा ! मैं उस समय उनके स्वर में, उनकी उपस्थिति के जादू और उल्लसित-मूड के प्रवाह में बेबस होकर बह ज़रूर जाता था लेकिन एक हल्की-सी टीस भी उठती थी कि शायद मैं किसी के बदले यहाँ बैठा हूँ....पता नहीं वह कौन है ! अकेले पहाड़ी झरने के एकान्त किनारों और घाटियों की हरियल सलवटों की अँगड़ाई लेती भूल-भुलैयों से लौटकर ही मुझे यह भी लगता कि ये अपना सिर मेरे सिर के इतने पास क्यों ले आती हैं ? बग़ल में बैठे ये लोग कहीं इस गीत को सुनकर यह न सोच लें कि जाने कौन बाज़ारू औरत साथ है....

और यह मैं भी जानता था कि वे हल्की चाहे जितनी हों, चाहे जितनी उन्मुक्त और स्वच्छंद होकर व्यवहार करें या गायें, लेकिन उनकी हर बात में एक ऐसी संयत ऊँचाई का भाव है, ऐसा कुछ ग्रेस है कि सहसा उनके बारे में कोई ऐसी-वैसी बात नहीं सोच सकता। मुझे याद है—उस समय एक बार जाने कैसे मुझे लगा कि जैसे मिसेज़-तेजपाल के बाल बहुत-लम्बे-लम्बे हैं और उन्होंने खूब गोल-सा जूड़ा बाँध रक्खा है। इच्छा हुई कहीं से रजनी-गंधा की कलियों का एक अर्धचन्द्राकार जूड़ा लेकर उनके केशों में लगा दूँ और जाने किस आवेशवश मेरे हाथ उनकी पीठ सहलाने के लिए तड़प उठे, एक बार तो शायद उठ भी गये, लेकिन मैंने सिर्फ़ अँगड़ाई लेकर उस इच्छा को दबा लिया....सारी रोमाण्टिक भावनाओं के बावजूद मुझे गर्व था कि वे मुझे अपने इन एकान्त-क्षणों का यों गवाह बना रही हैं....यों निकट आने दे रही हैं....मैं जताना चाहता था कि ऐसी अप-टु-डेट अभिजात सौन्दर्यशालिनी नारी मुझे यह गौरव दे रही है और मैं यों उसके मूड में हिस्सा ले रहा हूँ....

गाना ख़त्म करते ही बिना मुझे कुछ कहने का अवसर दिये वे बोलीं: "कितनी दुखभरी ग़ज़ल है। है न ! जाने क्यों, जब मेरा मन खूब-खूब खुश होता है तो यों ही कोई बड़ी दुखभरी चीज़ गाने को मन करता है। गाते-गाते इच्छा होती है, एक-एक लाइन को कई-कई बार गाऊँ और खूब-खूब रोऊँ। अच्छा, एक बात आपको पता है, मुझसे दुखान्त फ़िल्में नहीं देखी जातीं—मैं जाती ही नहीं। कई दिनों तक मन बहुत ख़राब रहता है...." पीछे से जाती माल लदी ट्रक का कोई पुर्ज़ा इतनी ज़ोर से आवाज़ करता हुआ चला गया कि उनकी बात टूट गई....

उन्हें मानो मेरी ओर से कुछ सुनने की ज़रूरत ही नहीं थी। लेकिन

मुझसे अब नहीं रहा जा रहा था। बार-बार उनके कन्धे पर हाथ रखने की इच्छा फड़क कर रह जाती थी और रह-रहकर लगता था जैसे कहीं उनकी ज़िन्दगी में कोई बहुत बड़ी ट्रेजेडी है, कोई गड़बड़ है और उस गड़बड़ को उनकी बलबलाती हुई जीवनी-शक्ति स्वीकार नहीं कर पा रही है। मैं स्पष्ट ही अपने हृदय से उठकर अँगुलियों की पोरों तक आती कोई लहर जैसी चीज़ महसूस करता और यह लहर शब्दों का रूप लेकर मेरे मन में गूँज उठती थी। तब कल्पना में मैं उनकी कनपटी पर हथेली रखकर उनके सिर को अपने कन्धे से लगा लेता और कहता—'बहुत दुखी हो मिसेज़ तेजपाल तुम। मैं जानता हूँ। गोलियों के फूल की छाया में तुम्हारी यह कुहुक कौन सुनता होगा....' साथ ही यह भी जानता था कि इस सहानुभूति और दया को उनका आत्म-सम्मान कभी स्वीकार नहीं करेगा। मैंने झिझकते से स्वर में कहा : "एक बात पूछूँ मिसेज़ तेजपाल ?"

"पूछिए।" वे सहसा चिहुँक उठीं। नदी किनारे बैठे अपने आप में अकेले युवक-युवती में से जब एक ऐसा सवाल पूछता हो तो उसका अर्थ क्या होता है, मानो यह बात सहसा उन्हें याद हो आई।

उनकी आशंका समझकर मैंने हँसकर कहा : "नहीं, कोई ऐसी ख़ास बात नहीं है। मैं तो यों ही पूछना चाहता था कि आपका नाम क्या है?"

उन्होंने मुक्ति की साँस ली और खिलखिलाकर हँस पड़ीं : "बस ! अरे, मेरा नाम मिसेज़ तेजपाल है, और क्या होता ?"

"नहीं, यह नहीं। यह तो बाद में ही हुआ होगा न शादी के। पहले भी तो होगा कुछ।" मैंने हठ करके पूछा : "कई बार यह बात मन में आई। पहले सोचा बीनू से पूछूँगा। अब आपसे ही पूछे लेता हूँ।"

वे उसी तरह हँसती रहीं और मेरा मन होता रहा कि रोशनी होती

तो मैं उनके खिलते दाँत देखता। वे बोलीं : "बहुत अच्छी लग गई हूँ क्या ? बड़े इण्टरेस्टेड हैं मुझ में ? कहीं मुझसे मुहब्बत-उहब्बत तो नहीं करने लगे ? भाई आप पुरुष लोगों का क्या ठीक है ?" वे सीधी मुड़कर मेरी ओर देख रही थीं।

मैं सकपका कर स्तब्ध रह गया। वे तड़ाक से यह बात कह बैठेंगी, यह बात मेरी कल्पना से एकदम बाहर थी। लगा जैसे वे मुझे बच्चे की तरह खिला रही हैं। यह भी जानता था कि वे मज़ाक़ कर रही हैं, लेकिन जाने क्यों मुझे इस बात में सुरुचि का अभाव लगा। नारीत्व को संकोच और शालीनता के साथ मिलाकर देखना, हो सकता है मेरे संस्कार हों, मगर मुझे उनकी बात से ऐसा लगा जैसे किसी ने एक झटके के साथ सारा माया-जाल खींच कर अलग फेंक दिया है और मैं अनावृत निरीह-सा खड़ा रह गया हूँ। स्वर समेट कर बोला: "अच्छी तो वाक़ई आप हैं, इसमें क्या शक है ! लेकिन नाम पूछने का यह सब अर्थ कहाँ हैं ?" और मैं सीधा बैठ गया।

उन्होंने कुछ नहीं कहा। एक गहरी साँस ली और बोलीं : "मिसेज़ तेजपाल नाम खास बुरा तो नहीं है ? नाम ही क्या, पहले जाने कितनी चीज़ें थीं जो मिसेज़ तेजपाल होने के बाद छूट गईं....नाम ही क्यों रहता...."

"मसलन...." मैंने समझा इस प्रश्न के द्वारा मैं उनके नाम के साथ-साथ पिछले जीवन की और कुछ बातें भी जान सकूँगा।

"मसलन मैं पहले किसी की बेटी थी, किसी की बहन थी, बाद में सिर्फ़ पत्नी हो गई। शादी के समय सिर्फ़ लैफ्टिनैण्ट की बीवी थी और आज मेजर की हूँ, दो-तीन साल बाद कर्नल की हो जाऊँगी।"

"यह तो आप सवाल को टाल रही हैं।"

"टाल कहाँ रही हूँ ? इतना साफ़ तो कह रही हूँ कि मैं पिछला कुछ

भी नहीं लाई अपने साथ। अपने शौक़, अपने सम्पर्क, अपना नाम—सब पीछे छोड़ आई हूँ।" मेरे अविश्वास को पढ़कर वे बोलीं : "अच्छा मान लीजिए, मेरा नाम....मेरा नाम...." उन्होंने इधर-उधर सहारे के लिए देखा : "मेरा नाम हुगली था, नाथ या....यह किट्टी था, क्या फ़र्क़ पड़ता है इससे ? अब मिसेज़ तेजपाल हूँ बस।"

और मैं सहसा बुझ गया। या तो यह स्त्री जान-बूझकर अपने आस-पास एक रहस्य का जाला ताने रखना चाहती है या मुझे बहला और टाल रही है। लगा उनमें मेरी सारी दिलचस्पी समाप्त हो गई है। याद आया, आज कुछ ज़रूरी कागज भी तो टाइप करने हैं, वर्ना कल मुसीबत हो जायेगी। लेकिन उठने का प्रस्ताव करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मैं जहाज़ पर घूमते सफ़ेद और नीली वर्दी पहने अफ़सरों और खलासियों को देखता रहा। जहाज़ के सिरे पर रोमन अक्षरों में लिखा था—'हैलेन' शायद कोई ब्रिटिश जहाज़ है, तभी तो ऐसा चुस्त-दुरुस्त है। नीचे जहाज़ से पानी की मोटी धार एकरस धड़-धड़ गिरे जा रही थी।

"विश्वास नहीं हुआ ?" उन्होंने हल्के मुस्कराते स्वर में पूछा।

"नहीं, ठीक ही है।"

"अपने कालेज में सबसे मस्त लड़की थी। हर चीज़ में हिस्सा लेती थी, दिन भर हँसती-खिलखिलाती घूमा करती थी, इसलिए लड़के-लड़कियों ने मेरा नाम क्या रख दिया था, जानते हैं ?" वे फिर अपने में डूबकर बोलीं : "ठुकि झूमि-झूमि मुस्काति जाति !" फिर अपने इतने लम्बे नाम पर खुद ही हँस पड़ीं।

"काफ़ी अच्छा नाम है।" मैंने फिर बिना किसी विशेष दिलचस्पी के कह दिया।

मेरे स्वर के ठण्डेपन को उन्होंने पकड़ा या नहीं, लेकिन सहसा

बाल झटककर बोलीं : "अच्छा एक बात बताऊँ ? मैं भारतीय नहीं हूँ।"

"तो ?" मैं सचमुच अपनी जगह से उछल पड़ा। यह तो नई बात थी। मैंने एकदम उनके चेहरे की ओर ग़ौर से देखा। उनके फ़ीचर्स अँधेरे में दिखाई नहीं दिये।

"पन्द्रह साल की उम्र में मैंने बर्मा छोड़ा था। तब मैं जूनियर कैम्ब्रिज में पढ़ती थी। बाम्बिंग हुई तो हम लोग इधर चले आये।"

"ओः" मैंने सन्तोष की साँस ली। सोचा था, 'जाने किस देश की होंगी। पूछा : "बर्मा में कहाँ ?"

"पेगू। पेगू का नाम सुना है ? वहाँ हमारे पिताजी फॉरेस्ट-आफ़ीसर थे। माँ बर्मी थीं और पिताजी पंजाबी।" वे फिर दूर खो गईं : "हमें याद है जब भगदड़ मची थी तो आने में कैसी मुसीबत हुई थी। हम लोग रंगून आये। जिस जहाज़ में हम लोग भेड़-बकरियों की तरह भरकर आये उस पर जापानियों ने बम गिराया। नावों में जितने लोग आ सकते थे, आये। जब तक दूसरा जहाज़ आया तब तक जाने कितने डूब चुके थे। माँ तो उसी भाग-दौड़ में कहीं छूट गईं। हम लोग किसी तरह दिल्ली पहुँचे...."

अब मुझे फिर मिसेज़ तेजपाल पर दया-आने लगी। हमदर्दी से पूछा : "कितने भाई-बहन हैं आप लोग ?"

"मैं बीच की हूँ। एक भाई मुझसे बड़ा है, एक छोटा। वहाँ से आकर फ़ादर देहरादून में रेन्जर हो गये। बड़े भाई मिलिट्री-कालेज में तेजपाल के साथ पढ़ते थे। मैं दिल्ली में हॉस्टल में थी। छुट्टियों में जाती थी, तभी एकाधबार भाई के साथ इन्हें देखा...."

"अब कहाँ हैं वे लोग...." मैंने पूछा।

"पता नहीं। इस बात को भी तो आठ-नौ साल हो गये।" वे

निहायत तटस्थ अरुचि से बोलीं : "अभी बताया न, पिछले सम्पर्क-शौक वग़ैरा सभी कुछ...."

"तो भी जब मेजर तेजपाल कैम्प वग़ैरा चले जाते हैं तो कहाँ रहती हैं ?"

"क्यों ? क्वार्टर है न। बस वहीं रहना और दिन भर रेंकना...." वे लापरवाही से बोलीं : "पिछला सब खत्म....किसी ज़माने में टॉल्सटाय के उपन्यास, शॉ के नाटक, चैखव की कहानियाँ पढ़ने का शौक था.... कीट्स और वर्ड्सवर्थ पर जान देती थी और बँगला कविताएँ गाती थी। भरत-नाट्यम नाचती थी—अब तो सब खत्म। अब तो....रॉक-एन-रोल देखते हैं और जॉज़ सुनते हैं। फिल्म-फेयर और फ़िल्म-इण्डिया, अगाथाक्रिस्टी और स्टेनली पार्डनर को घोंटते हैं और दिन भर जो जी में आता है सो रेंकते हैं। मुहब्बत में ऐसे क़दम डगमगाये, ज़माना ये समझा कि हम पी के आये !" वे सहसा बहुत ही हल्की हो आईं। फिर एकाएक उठ खड़ी हुईं : "चलिए, अब उठें। क्या बज गया ?" फिर रोशनी की ओर कलाई घुमाकर घड़ी देखी तो मुँह खुला रह गया : "हाय, आठ। चलिए....चलिए।"

खड़े होकर ज़रा झुके-झुके चप्पलों में पाँव डालते हुए वे एक दम डगमगा उठीं तो झट मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया : "उफ़, मेरे तो दोनों पाँव सो गये।" उनकी कमर की ऊँचाई तक आने वाली कुतिया ने बड़ा-सा मुँह फाड़ कर जँभाई ली : "क्याँऽऽ !" उसके सफ़ेद दाँतों और आँखों में जहाज़ की परछाईं कौंध गई।

मेरा सारा शरीर रोमांचित हो उठा।

डरते-डरते-से उनके कन्धे को छूकर सहारा देने का भाव दिखाया, और इधर-उधर देखा। मुझे लगा जैसे उस क्षण उनकी कुहनी भी रोमांचित हो आई थी। थोड़ी देर पाँव घिसटा-घिसटाकर चलने के बाद

वे ठीक हो गईं। मेरे कन्धे पर उनकी अँगुलियों की पकड़ अब भी सिहर रही थी।

रात को सोते समय बहुत देर तक मुझे हुगली के किनारे की बातें याद आती रही थीं। और वह एक मधुर चित्र बनकर मेरे मन में सुरक्षित रह गया था। आशंका भी थी, कहीं मिसेज़ तेजपाल मुझसे मज़ाक न कर रहीं हों। जिस ढंग से उन्होंने अपने ऊपर मोहित हो जाने की बात पूछी थी उससे यह नामुमकिन भी नहीं था कि वे यों ही एक चुहल कर डालें। मुझे लगा, ज़रूर कोई ऐसी बात उन्होंने मेरे व्यवहार में देखी होगी जो 'फाँसी' की बात उन्होंने कही और चलते-चलते सीढ़ी पर कहा गया वाक्य तो ऐसे किसी भी भाव के लिए जगह ही नहीं छोड़ता। फिर भी उन चित्रों में कुछ था कि सोते समय मैं मन में कई बार उन्हें दुहराता रहा था।

लौटते समय हम लोग किले कि तरफ़ वाली पटरी से लौट रहे थे। वे कह रही थीं : "आज तो बहुत गप्पें लड़ाईं। आप तो बहुत बोर हुए। ये मेरी बड़ी बुरी आदत है। बोलने पर आती हूँ तो बस, बकर-बकर बोले ही जाती हूँ, कोई सुने या न सुने। ममी बहुत डाँटती थी कि लड़कियों का बहुत बोलना अच्छा नहीं होता, लेकिन सुनता कौन था। एक बात थी, घर में मेरा बड़ा रोब था....ममी, फ़ादर, भाई—सभी डरते थे। क्या मजाल जो मैं कोई बात कह दूँ और वह न हो.... एक बार की बात है...." वे कह कर सहसा चुप हो गईं। फिर सिर झटक कर बोलीं : "अच्छा कुछ नहीं।"

मैंने इधर-उधर देखा। कोई नहीं था : "क्यों, चुप क्यों हो गईं आप ?"

"नहीं, कुछ नहीं। यों ही एक बेवकूफ़ी की बात थी।" वे टालकर बोलीं : "पर उन लोगों ने मेरा बड़ा नुकसान कर दिया। अब अगर

मेरी कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो मन होता है गोली मार लूँ....” अनजाने ही उन्होंने फीते लिपटे हाथ से दूसरी कुहनी सहलाई।

“लेकिन आपके शौक़ तो बहुत अच्छे थे। आपने उन्हें छोड़ क्यों दिया?” मैंने उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए कहा।

“छोड़ न देती तो उन्हें लेकर घुटती?” वे तलखी से बोलीं : “आप देखते नहीं यहाँ कौन से शौक़ पनपते हैं? आदमियों को क्लब, कैबरे, रेस और ब्रिज से फ़ुर्सत नहीं है या फिर दिन भर अपने अफ़सरों की बातें—फ़लाने की फ़लाने से झड़प हो गई....फ़लाने के प्रमोशन में क्या गड़बड़ी पैदा हो गई। एटीकैट, मैनर्स और कल्चर पर रिमार्क या इसका ट्रान्सफ़र उस डिवीज़न में हुआ, उसका वहाँ। या फिर वही एक दूसरे के यहाँ डिनर, रिटर्न-विज़िट्स, और चाय पार्टी, बर्थ-डे पार्टी के बाद वही घिसे-पिटे मज़ाक़। एक दूसरे के बारे में उल्टी-सीधी बातें और पोज़ीशन की होड़। दिन को वही खड़-खड़ करती खाकी काहिया यूनीफ़ॉर्म, वही तनी हुई रीढ़ें और अकड़ी हुई गर्दनें। रोज़-रोज़ वही फीतों और स्टारों की पालिश और शाम को काले-काले सूट। आइ'म सिक आफ् देम। नपी-तुली चाल, नपी-तुली हँसी, नपा-तुला मनोरंजन। आप लगातार एक दूसरे के यहाँ चार साल जाइए, वही पहले दिन वाली फॉर्मेलिटी, वही तकल्लुफ़, वही औपचारिकता। लगता ही नहीं जैसे आदमी मिल रहे हों! कठपुतलों की ज़िन्दगी....जिनकी हर हरकत पहले से तय हो...”

“हाँ, है तो यही बात।” मैंने समर्थन किया : “मैं तो और लोगों से भी काफ़ी मिलता-जुलता हूँ फिर भी यही सब देखते-देखते बोर हो जाता हूँ। तब आप लोगों को तो सचमुच कभी-कभी बड़ी ऊब होती होगी।”

“और यहाँ की औरतें! उफ़, हद है।” वे उत्साह से बोलीं :

"खाना और कपड़ा, बस इसके सिवा वे कोई बात ही नहीं कर सकतीं। चौबीस घण्टे बस वही बातें। सबके यहाँ दैनिक अख़बार आते हैं लेकिन उसे खोलती उसी दिन हैं जिस दिन सिनेमा जाना होता है। यों होने को क्लबों में जाती हैं, पार्टियाँ अटैण्ड करती हैं; मुस्कराती हैं, लोगों को अपने यहाँ खाने पर निमन्त्रित करती हैं, लेकिन इतनी आर्थोडाक्स हैं कि क्या बताऊँ? एक हैं जिन्होंने अपने हर दरवाज़े पर सथिए बना रक्खे हैं। ज़्यादातर सातवें-आठवें या दसवें-बारहवें तक पढ़ी हैं, बस। बैरों ने मेमसाहब कह दिया तो बहुत खुश। बीनू को छोड़कर मुझे तो यहाँ एक भी बात करने लायक़ नहीं लगती। अगर उनके ये पति फ़ौज के ऊँचे अफ़सर न हों तो सचमुच वे एकदम फूहड़ और गँवार हैं। दुनिया की किसी बात से इन्हें जैसे कोई मतलब ही नहीं। दूर रहते थे तो बहुत सोचा करते थे कि मिलिटरी में यों स्वतन्त्रता है....यों छूट है....लेकिन सब दूर से दीखता है।" कुछ देर चुपचाप चलने के बाद वे धीरे से हँसीं: "पहले मैं लेटी-लेटी रातों सोचा करती थी कि जिसने अन्ना-केरेनिना लिखा होगा, उसके दिल में कितना दर्द होगा....क्या-क्या बातें उसके मन में न आया करती होंगी! अब तो वह सब याद भी नहीं आता। किसी और जन्म की बातें लगती हैं, किसी बहुत पुराने ज़माने की...."

"ख़ैर, यहाँ वाले आपसे भी तो खुश नहीं हैं।" मैंने ज़रा और कुरेदने के लिए कहा।

"मैं तो कभी इसकी चिन्ता ही नहीं करती!" वे उद्धत स्वर में बोलीं: "अपने बारे में वह सब मैं भी सुन चुकी हूँ। यह शोर तो उन दिनों सुनते जब मैं आई-आई थी। यहाँ तो लोग रेडियो भी सुनते हैं तो कमरा बन्द करके ताकि बाहरवाला कोई न सुनले। मैंने पूरा गला फाड़ कर गाना शुरू कर दिया तो बड़ी चर्चा! कोई कहता—मैनर्स नहीं

आते, कोई कहता भले आदमियों में नहीं रही, किसी के हिसाब से मुझे कपड़े पहनने का सलीका नहीं था, साड़ी कहीं जाती थी पल्ला कहीं, और किसी के लिए मैं ग्रामोफ़ोन थी, किसी लिए रेडियोग्राम। चलने-फिरने की तमीज़ नहीं है। फ़्लर्ट है, फ़िल्म-ऐक्ट्रेस है! मेजर बेनवाल जाने किस गानेवाली को पकड़ लाये हैं। और तो और, एक दिन मैंने अपने बारे में यह सुना कि मैं किसी 'बार' में नाचा-गाया करती थी और वहीं मैंने मेजर बेनवाल को फाँस लिया तो बड़ी हँसी आई। ऐसे रिमार्क सुनना तो अब आदत बन गई। मैं भी कहती हूँ, कुढ़ो! कितना कुढ़ती हो, मैं उतना ही कुढ़ाऊँगी। मेरा क्या जाता है। और अब हालत यह है कि किसी दिन अगर ऊपर सन्नाटा रहे तो मिसेज़ मकोजा का आर्डली आकर पूछता है—मिसेज़ बेनवाल की तबियत तो ठीक है, मेम साब ने पूछा है।"

"लेकिन ये सब चीज़ें तो चलती ही रहती हैं। कोई चाहे तो अपना शौक चलाये रख सकता है।" मैंने कोमल सान्त्वना के शब्दों में कहा।

"जी हाँ, चलाये रख सकता है।" उन्होंने मुँह बिचका दिया: "पहले हमारे यहाँ एक लड़का आया करता था। वह भी भाई का क्लास-फ़ेलो था और फिर बाद में कुछ दिनों हम लोग एक जगह साथ-साथ भी रहे। ऐसा अच्छा वॉयलिन बजाता था कि क्या बताऊँ? मन होता था कि बस बैठे-बैठे उसका वॉयलिन ही सुनते रहो। वह फ़ोर्ट के भीतर ही बेचलर्स-क्वार्टर्स में रहता था और अक्सर आ जाया करता था। मैं कोई भी काम करती तो मुझे ऐसा लगता जैसे कहीं दूर वह वॉयलिन बजा रहा हो। और कन्धे और बाँह पर वॉयलिन थामकर झुका-झुका सिर, काँपती अँगुलियाँ और खिंचता गज़—सभी कुछ हर समय आँखों के आगे नाचा करता। मैं खाना खाती रहती और अचानक लगता

नीचे किसी के फ़्लैट में वह वॉयलिन बजा रहा है। मैं चौंक कर रुक जाती। ये पूछते क्या हुआ? मेरे मुँह से निकल जाता—यह कैसी आवाज़ है? ये बोलते—कुछ भी नहीं, पानी सनसना रहा है किचिन में, या ऊपर पानी की टंकी भरने की मशीन चल रही है। मैं झेंपकर चुप हो जाती। कभी-कभी तो सोते-सोते चौंक कर जाग उठती...."

"फिर?"

"फिर क्या? उन दिनों जो-जो कुछ सुनने को मिला उसे भूल सकती हूँ! उसी को लेकर इनकी उससे कुछ अनबन हो गई। बाद में उसका ट्रान्सफ़र हो गया...." पता नहीं यह मेरा भ्रम था कि मुझे लगा, जैसे उनका गला रुँध आया है। हम लोगों के ब्लॉक अब शुरू हो गये थे। हमारा ब्लॉक अभी आड़ में पड़ता था। वे बोलीं: "अब मैं आपके साथ चल रही हूँ। किसी ने देखा होगा तो कल ही सुन लीजिए, क्या-क्या उड़ायेगा। उड़ाये, मुझे किसी की कोई चिन्ता नहीं...."

"मिसेज़ तेजपाल, मैं आपके बारे में इतनी बातें नहीं जानता था।" गहरी साँस लेकर मैंने उनसे कहा। मुझे उन पर तरस आने लगा और समय-समय पर आनेवाली झुँझलाहट पर खेद हुआ।

हठात् वे खिलखिलाकर हँस पड़ीं: "अरे आप तो भावुक हो उठे। ये तो रोज़ होने वाली बातें हैं। मैंने कुछ ऐसी-वैसी बात कह दी हो तो बुरा मत मानिए। मैं बड़ी सनकी हूँ। जो भी धुन आ जाये बस अकेले-अकेले ही बोले जाती हूँ। कोई गाना सुबह-सुबह ज़बान पर चढ़ जाय, बस समझ लीजिए, उसे गा-गाकर ढेर कर दूँगी।" फिर जाने क्यों रूमाल से आँखें और मुँह पोंछकर बोलीं: "और कायदे से मुझे आपसे माफ़ी-वाफ़ी माँगनी भी नहीं चाहिए। जैसे आप बीनू के लिए, वैसे ही मेरे लिए...."

"नहीं....नहीं, ऐसी कोई बात नहीं...." मैंने जल्दी से कहा।

और अब हम लोग सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तो उन्होंने कई बार मेरी ओर फिर मोड़ते हुए बालों को झटका और आत्मीयता और स्नेह की गंगा-जमुनी मुस्कराहट उनके गालों के भँवरों में वर्तुलाकार थिरक उठी। जब किटी उन्हें खींचती ऊपर ले गई तो मैं सोचता रहा, कितनी स्मार्ट हैं वे.... जाने क्यों दिल के भीतर एक गहरी साँस निकल गई। ऊपर मोड़ से उन्होंने हाथ हिलाया—टा-टा....।

टा-टा! आज सड़क पर यों ही चहल-क़दमी करते हुए एक-एक चित्र मेरे सामने उभर-उभर कर आ रहा था। फिर तो किटी को घुमाते, आते-जाते, सीढ़ियाँ चढ़ते या बीनू के यहाँ से विदा लेते समय वे बड़े दोस्ताना ढंग से हाथ उठाकर टा-टा करतीं, ठीक जैसे बच्चे करते हैं और एकाध-बार जब वे गुड्डी के साथ थीं तो उन्होंने टा-टा करने के बाद अँगुलियों को भी होंठों से लगा लिया था। जाने किन गहराइयों के कुनकुने पानी में मुझे डुबाकर निकाल लिया था कि उन्हें देखते ही एक अजब स्फूर्ति और करुण सहानुभूति के भाव साथ-साथ मुझे छा लेते थे। और रात को मैं देर तक उनके बारे में सोचा करता था। वे किस समय कहाँ हैं, इसकी खबर रखता था। एकाध बार रणबीर ने मज़ाक़ में कहा: "आजकल हमारे साले से बड़ी दोस्ती हो रही है, गॉड की....बड़ा खतरनाक खेल है। मेजर जैसवाल गोली मार देगा, याद रखना!" बीनू उसे डपट देती: "आपके दिमाग़ में तो हमेशा बस ये ही बातें आती हैं। दूसरों पर कीचड़ उछालते हैं, कुछ अपनी कहिए न!" हजामत बनाना छोड़कर रणबीर कहता: "अपना भाई चाहे क़त्ल कर आये, लेकिन तुम उसकी तरफ़दारी ज़रूर करना!" फिर ज़बरदस्ती संजीदा मुँह बनाकर कहता: "देखो भाई, समझाना हमारा काम है। बाक़ी तुम जानो....यों डिप्टी गॉड को हम क्या खाकर समझाएँगे!"

मुझे नहीं मालूम, मैं उन दिनों खतरनाक खेल खेल रहा था या नहीं, लेकिन यह सच है कि जब-जब मैं उन्हें देखता, तेजपाल की सूरत आँखों के आगे आ खड़ी होती। टाइप करते-करते कभी बालों को झटकारता मिसेज़ तेजपाल का चेहरा आजाता तो कभी मेजर-तेजपाल का बड़ी-बड़ी मूँछोंवाला। इस बात को दिल के भीतर मैं भी जानता था कि वे उन लोगों में से हैं जो गोली मार सकते हैं....और जब उसके बाद पिकनिक वाली घटना होगई तब तो यह बात और भी साफ़ होगई। मैं कसमसा कर रह गया....

रणधीर ने झुँझलाकर मुझसे कहा : "बुलाओ न उन्हें, क्या हो रहा है?" फिर तेजपाल की ओर देखकर बोला : "इन लेडीज़ का निकलना भी बस....

बीनू मिसेज़ तेजपाल को लाने गई तो वहीं की हो रही। पिक-अप आगई थी और अर्दली पिकनिक का सारा सामान रख चुके थे। दो बार हार्न भी दिया। रणधीर, तेजपाल और रुद्रा नीचे खड़े होगये थे। मिसेज़ रुद्रा और उनकी गुड्डी पहले ही पिक-अप में चढ़कर बैठ गई थीं। गुड्डी लाल पतलून पहने पिक-अप की रेलिंग पर झूलती सामने के दूसरे तल्ले के फ़्लैट से झाँकते शेखर से बातें कर रही थी, पीछे से मिसेज़ रुद्रा ने उसे पकड़ लिया था। ऊपर जाते हुए मैंने देखा, तेजपाल एक खाली सिगरेट के डिब्बे को ठोकर मारते हुए कुछ कह रहे थे।

"बीनू!" मैंने पुकारते हुए तेजपाल के फ़्लैट में क़दम रक्खा। बैरा पिक-अप पर सामान ले जारहा था, इसलिए दरवाज़ा खुला था। मैं ड्राइंगरूम में झाँकता हुआ सीधा बग़लवाले कमरे में—'मिसेज़ तेजपाल, आप भी तैयार होने में....' कहता हुआ जा पहुँचा।

मेरी बात आधी रह गई।

"भीतर तो आ !" बीनू खिलखिलाने के बीच में रुक कर बोली। और जैसे ही मैंने पर्दा उठाया कि पहली बार तो स्तब्ध रह गया, फिर सहसा गला फाड़कर हँस पड़ा।

बीनू पलंग पर बैठी बुरी तरह हँस रही थी और ड्रेसिंग-टेबिल के सामने मिसेज़ तेजपाल पैंट और शार्ट-ब्लाउज़ में खड़ी हुई झुकी-झुकी होंठों पर लिपस्टिक लगा रही थीं : "हल्लो ऽऽ !" वे निहायत ही बेतकल्लुफ़ी से शीशे में यों ही व्यस्ततापूर्वक अपना चेहरा देखती बोलीं।

"यह क्या तमाशा है ? नीचे वे लोग शोर मचा रहे हैं और..." मैंने प्रशंसात्मक दृष्टि से मिसेज़ तेजपाल को देखा और बनावटी झुँझलाहट से कहा। इन कपड़ों में भी वे बड़ी आकर्षक लग रही थीं। लगता था, जैसे मैंने इन कपड़ों के सिवा उन्हें कभी और कपड़ों में देखा ही नहीं है।

"चलते हैं भाई, यहाँ हमारी जान मत खाओ !" वे इत्मीनान से शीशे में देखकर बिन्दी लगाती रहीं। फिर खुद ही जैसे अपने पर रीझ गईं। "ये हार्न नीचे से तो बज ही रहा था ऊपर भी आ गया !" उन्होंने मिलिट्री अफ़सरों की टोपी लगा ली। बिन्दी के साथ बड़ा अजब मेल था। पीछे बाल निकल आये थे।

"लेकिन, आखिर यह सब तमाशा क्या है ? चलते-चलते मूड खराब करेंगी ?" मैंने देखा, नये कपड़ों की चढ़ती मौज से उनका चेहरा झलमला आया था। पूछा : "यों चलेंगी ?"

"क्यों ? अच्छी नहीं लगती क्या ?" उन्होंने सीधे मेरी ओर मुँह करके पूछा।

"बिल्कुल बेकार लगती हैं आप !"

"बस !" वे बनावटी निराशा से बोलीं : "सिर्फ़ बेकार ! कम से

कम यह तो कहा होता कि ऑड्रे हैबर्न लगती हूँ।"

"ऑड्रे हैबर्न!" मैंने चिढ़ाया: "लोगों को भी अपने बारे में बड़े-बड़े भ्रम होते हैं। लोगों को पता नहीं था वर्ना 'भवानी जंक्शन' में रीता हेवर्थ की जगह आपको ही ले लिया जाता!"

"लगती तो वाक़ई बहुत अच्छी हैं।" नीचे फिर हार्न सुना तो लाचारी और झुँझलाहट से बोला: "अच्छा साहब, जैसे चलना हो चलिए। पर निकलिए तो सही!"

"थैंक्यू।" उन्होंने बादवाली बात ह नहीं सुनी।

बीनू ने बताया: "असल में कल ये कहीं मेजर तेजपाल के साथ मैदान से लौट रही थीं। रास्ते में कुछ योरोपियन औरतें ज़ीन और फ्लाइंग-शर्ट पहने गोल्फ खेलने जा रही होंगी, उन्हें देखकर मेजर तेजपाल बोले: 'देखो, ये औरतें कैसी बेशर्म लगती हैं। अगर बीच से कमर इन्होंने न कस रखी होती और चाल में ज़नाना नख़रा और मटक न होती तो पीछे से लड़के और लड़की में फ़र्क करना मुश्किल हो जाता।' ये बोलीं: 'इसमें बेशर्मी की क्या बात है? ये तो अपने-अपने कपड़े हैं। ऐसी खुली रहती हैं, तभी तो ऐसी स्वस्थ हैं।" और बस, तभी से मेरे पीछे लगी थीं कि मैं भी ज़रा ज़ीन पहन कर देखूँगी। अब वह नहीं तो पैण्ट ही सही।"

"मजाक़ नहीं, आप जो कुछ भी पहन लें, उसी में अच्छी लगती हैं।" बिन्दी और होठों की लाली के साथ टोपी सचमुच इतनी अच्छी लग रही थी कि अगर बीनू न होती तो परिणाम की चिन्ता किये बिना मैं उनकी ठोड़ी अपनी ओर घुमाकर ज़रूर कुछ क्षण एकटक देखता रहता, तब उनकी पलकें किस प्रकार झँप कर नीचे झुकी रहतीं, इस कल्पना ने मन को एक अद्भुत रोमांच से भर दिया।

"अच्छा मिसेज़ तेजपाल, अब चलिए, नहीं तो वाक़ई ये लोग

नाराज़ हो जायेंगे।"

बाद में वे फिर कपड़े बदलने चली गयी थीं। उन्हें गुड्डी के साथ देखकर जो बात मेरे मन में आई थी कि वे बड़ी गुड्डी हैं, इस समय भी वही बात शब्द-हीन रूप में प्रत्याभासित हुई।

"क्या हुआ?" रणधीर ने शायद इसलिए झल्लाकर पूछा कि कहीं तेजपाल ज़ोर से न भड़क उठें।

"आरही हैं। आलमारी की चाबी कहीं रखदी थी।" मैं डर रहा था कि इन लोगों के नीचे आते ही तेजपाल ज़ोर से दहाड़ेंगे।

तभी देखा, सारी सीढ़ियों को सैण्डिलों की खटर-पटर से गुँजाती हुई, हँसती खिलखिलाती दोनों उतर रही थीं। सीढ़ियों की काँचवाली खिड़की से देखा—मिसेज़ तेजपाल दो-तीन रंग-बिरंगे गुब्बारे लिये हुए थीं। आसमानी नाइलोन की साड़ी और ब्लाउज़ पहने थीं; उसे पहनने में लाभ क्या है, यह मेरी समझ में अभी तक नहीं आया। साटन का पेटीकोट और ब्रेसरी अनेक पटलियों और तहों के बावजूद ज्यों की त्यों दिखाई दे रही थी। मिसेज़ तेजपाल के इस रूप को देखकर हम सभी को धक्का लगा और जैसे सभी ने नज़रें चुरा लीं। बोला कोई कुछ नहीं। छिपी नज़रों से देखा तो लगा तेजपाल कुछ बोलते-बोलते रुक गये। उनके कान एकबार लाल हुए और वे निचला होंठ दबाकर रह गये। शान्त स्वर में बोले : "किटी के लिए बोल दिया है बैरा से?"

"जी।" वे बोलीं और गुड्डी के पास आकर उससे बातें करते हुए दोनों गुब्बारे उसे दे दिये तो वह किलक उठी। पिक-अप का पिछला हिस्सा पकड़कर वे व्यस्तता से चढ़ने लगीं तो उनकी पिंडली घुटनों तक खुल गई। सभी उनको प्रशंसा-मुग्ध साथ-साथ तुच्छताभरी छिपी-छिपी निगाहों से देख रहे हैं, इस बात के प्रति वे एकदम लापरवाह थीं। और कोई समय होता तो मैं भी शायद उन्हें यों ही देखता

लेकिन उनके इस रूप से शर्म मुझे लग रही थी। सीट पर बैठते ही उन्होंने फिर बाल झटके और गुड्डी को दोनों बाँहों में भींचकर बोलीं: "आण्टी की गोद में नहीं बैठेगी? देखो हमने तुम्हें गुब्बारे दिये हैं।"

सब लोग बैठ गये तो ड्राइवर ने पल्ला चढ़ा दिया। बैरा सामने ड्राइवर की बगल में बैठ गया। गाड़ी गेट से निकलकर हावड़ा की तरफ़ दौड़ चली। हमलोग आमने-सामने बैठे थे। महिलाएँ सब एक सीट पर थीं। उनके कान के आसमानी शेडवाले बड़े-से नग को गुड्डी मुग्धभाव से छूती हुई घुसुर-घुसुर जाने क्या-क्या बातें कर रही थी और उसके दोनों गुब्बारे इधर-उधर इस तरह उड़ रहे थे कि वह नन्हीं परी जैसी लगती थी। शायद सुन्दरता के प्रति बच्चे भी काफ़ी प्रबुद्ध होते हैं। आश्चर्य मुझे इस बात का था कि तेजपाल ने देरी को लेकर कुछ भी नहीं कहा। जिस ढंग से वे सिगरेट के खाली डिब्बे को ठोकर मार रहे थे, उससे तो ऐसा लगता था कि वे उन्हें देखते ही बुरी-तरह फुफकार उठेंगे।....इस समय वे अपने घुटनों की क्रीज़ उठा-उठाकर ठीक कर रहे थे। रणधीर ने कार्डराय की गहरी कत्थई पतलून और खुले कालर की सफ़ेद कमीज़ पहन रक्खी थी और उसका कालर बार-बार उड़कर कनपटी पर बज रहा था। गाड़ी तेज़ चलने लगी थी और मिसेज़ तेजपाल को बार-बार अपने कानों पर अँगुलियाँ फेरकर बाल ठीक करने पड़ते थे। मिसेज़ रुद्रा छाती के ऊपर गर्दन तक पूरा पंजा फैलाकर उड़ती सलेटी बंगलौरी साड़ी को दबाये थीं। बीनू ने सलवार के साथ का दुपट्टा सिर पर घुमाकर दाँतों से दबा लिया था। वहाँ तो बीनू में कोई ऐसी बात नहीं दिखाई दी थी लेकिन अब लगता था, मिसेज़ तेजपाल की ओर उपेक्षा का भाव धारण करने में दोनों महिलाओं ने मूक समझौता कर लिया था।

"मेजर अइयर से नहीं कहा?" रुद्रा ने कनपटी पर लहरें पैदा करते

हुए जेब से इलायची निकालकर फैली हथेली पर सबको ऑफ़र की। पहिले महिलाओं को फिर पुरुषों को। मिसेज़ तेजपाल ने मुस्कराकर थैंक्स कहा और मना कर दिया। उन्होंने पर्स से निकाल-निकाल कर सबको टाफ़ियाँ दीं और बाहर ऐसी व्यस्तता से देखने लगीं जैसे कोई बहुत ही ज़रूरी काम कर रही हों।

"कहा था, लेकिन आज डान्स टीचर को बुलाया था उन्होंने।" रणधीर ने बताया।

"वॉट ! डान्स-टीचर ?" दाँतों से दबाकर इलायची के दाने छीलते हुए तेजपाल ने माथा सिकोड़ कर पूछा : "तभी आजकल उसके फ़्लैट से तबला-वबला बहुत सुनाई देता है।"

"तबला नहीं, मृदंगम्।" रुद्रा ने अपने उसी मज़ाकिया चेहरे से कहा : "तुम्हें नहीं मालूम, आजकल मेम और साहब दोनों को डांस सीखने का बड़ा शौक लगा है, जब देखो तब नाचते रहते हैं।"

"हुँह, इन साउथ-इण्डियन्स का भी दिमाग़ खराब होता है।" सिर झटककर तेजपाल बोले: "परेड करना छोड़कर अब उदयशंकर बनने की धुन लगी है।"

"उदयशंकर बनने की क्या है जी, अपनी-अपनी हॉबी है।" गुड्डी के कान में कू करना छोड़कर एकदम मिसेज़ तेजपाल बोल पड़ीं : "अगर अंग्रेज़ी डांस की प्रैक्टिस करना बुरा नहीं है तो अपने डांस की प्रैक्टिस करना क्या बुरा है। ये तो अपनी-अपनी हॉबी है।"

"अरे डैम हॉबी," तेजपाल ने हाथ झटके :"ये औरतों की तरह हाथ-पाँव मटकाना अच्छी हॉबी है ! अरे, कोई और काम नहीं हो तो टेबिल-टेनिस खेलो। सच बात है, इनका खाना, रहना-सहना कभी मेरी समझ में नहीं आया। हाउ दीज़ पीपुल लिव! उस दिन हमें लंच पर बुलाया, रसं....भातं—जाने क्या-क्या दिया। मेरी तो सारी भूख

देखते ही हवा होगयी। आई सैड, चैप तुम हमें ऐग-पौरिज और दो स्लाइस मँगा दो, यह सब हमसे नहीं चलेगा। ये तो बैठी-बैठी शौक़ से खाती रहीं। इनको कुछ दे दीजिए, आप सब खा जाती हैं।"

"मान लीजिए, अच्छा न भी लगे, लेकिन होस्ट के मुँह पर यह सब कहा जाता है?" मिसेज़ तेजपाल ने मानो तड़प कर कहा: "बेचारों ने इतने शौक़ से तो तैयारी की..."

यों मैं बहुत प्रसन्न नहीं था लेकिन न जाने मुझे उनका यह पक्ष लेना और अपनी पतली कलाई उठाकर ज़ोर देकर बात कहना, सब कुछ बड़ा बनावटी-सा लगा। मुझे कभी-कभी स्वयं आश्चर्य होता कि कैसे इस दिखावटी-स्त्री के प्रति मेरा दिल इतनी हमदर्दी से भर गया था और कैसा इसका वह सम्मोहन था कि उस सन्ध्या के बाद मैं जाने-अनजाने, हर क्षण उसी के बारे में सोचा करता था। शायद उस दिन की छाप मन की तहों में कुछ ऐसी गहरी समा गई थी कि मुझे लगता गुलाबी सर्दी की दोपहर में मैं मिसेज़ तेजपाल के साथ झील की किसी एकान्त बेंच पर बैठा हूँ और सामने नाव चलाना सीखनेवाले अपनी सफ़ेद बनियाइन-जाँघिये की ड्रैस में पतली-सी नाव पर तीर की तरह गुज़र जाते हैं। एक साथ चप्पू कातर के पाँवों की तरह उठते हैं और हथेली में पानी उछालते आगे झपट पड़ते हैं—बाँहों की मछलियाँ तड़प-तड़प कर रह जाती हैं। धूप में चिलकते पानी से मिसेज़ तेजपाल की आँखें चौंधिया रही हैं, इसलिए उन्होंने भौंहों पर हाथ लगा कर आड़ कर ली है और हमलोग चुपचाप बैठे हैं, कभी लगता, पहाड़ पर घाटी के किनारे बने बरामदे में खिड़की के बन्द शीशों के पास हमलोग बैठे-बैठे चाय पी रहे हैं और वे जाने क्या-क्या लगातार बोले चली जारही हैं। सारी घाटी गहरे-घने सुरमई कोहरे से छाई हुई है और शीशों को छू-छूकर वह कुहरा बूँद-बूँद में पिघल उठनेवाली भाप की

तरह जम गया है, बड़ा अजब अवास्तविक-सा वातावरण है। और भी इसी तरह की जाने कितनी तस्वीरें थीं जो उन दिनों हर समय नाचा करती थीं। मैं जानता था कि वे तस्वीरें सच नहीं हैं लेकिन उन सपनों को मैंने इतनी बार मन में दुहरा-दुहरा कर बसा लिया था कि लगता था वे सब बीती हुई सच घटनाओं का पुनरावलोकन ही हैं।

इस समय मिसेज़ रुद्रा की टेढ़ी-टेढ़ी, शायद हल्की घृणा से भरी निगाहों को, जिनसे एक साथ वे पुरुषों की मिसेज़ तेजपाल के प्रति भावनाओं को भी तौल रही थीं, देख-देखकर स्वयं आश्चर्य होता था कि क्या सचमुच मैंने वे सारी बातें इन्हें ही लेकर सोची थीं। उनका सारा पल्ला बाँह पर पड़ा था। कोई मज़ाक की बात कहने के लिए रुद्रा की बटरफ्लाई मूँछें बार-बार फड़क कर रह जाती थीं। वे बोले : "खैर मिसेज़ तेजपाल, आपको क्या है। आप तो भारतीय हैं नहीं, आपका भरत-नाट्यम् से क्या लेना देना! आप चाहें तो थोड़ी-बहुत मनीपुरी की तारीफ़ कीजिए। और इस वक्त तो सबसे बड़ी बात यह है कि हमलोग ग्रामोफोन जान-बूझकर नहीं लाये हैं।"

और फिर सब लोग हँस पड़े। उनके गालों के गड्ढे गहरे हुए और वे गुड्डी की कलाइयों को अपने हाथ में लेकर उनकी नन्हीं-नन्हीं हथेलियों से ताली बजाती हुई बोलीं : "आप कुछ कहिए, हमारी गुड्डी कहेगी तभी गाएँगे। है न गुड्डी? देख गुड्डी, वे पुल...."

हुगली के दोनों किनारों पर पाँव रक्खे सामने पुल खड़ा था। इस बात को हम भी जानते थे कि गुड्डी को खिलाने के बहाने वे जान बूझकर अपने कपड़े अस्त-व्यस्त हो जाने देती हैं। जब वे बाहर की ओर मुड़कर गुड्डी को कोई चीज़ दिखातीं तो उनकी बीच की नाली के दोनों ओर उभरी केले के चौड़े पत्ते-सी पीठ एक अजब आकर्षक मरोड़ खाकर हमारी ओर आजाती और उस समय मेजर तेजपाल दाँतों

से नाख़ून कुतरते हुए बाहर देखने लगते। बड़ी बेचैनी हम सभी लोग महसूस करते....अचानक अब वे वहीं धीरे-धीरे गुड्डी को गाना सुनाने लगी थीं।

उनकी इस बेशर्मी को महिलाओं ने किस रूप में लिया, यह बीनू से सुनने को मिला; थोड़ी देर बाद।

सारी महिलाओं ने जब एक-स्वर से ब्रिज की खिलाफ़त की तो झुँझलाकर तेजपाल और रुद्रा शतरंज खेलने बैठ गये। आज पिकनिक का विशेष कार्य-क्रम यह था कि रणधीर छोटी बंदूक से महिलाओं को निशाना लगाना सिखायेगा। सभी जानते थे कि अगर ये लोग ब्रिज पर बैठ गये तो शाम तक न तो खाने का नम्बर आयेगा न निशानेबाज़ी का। बीनू से रणधीर को पहले ही पक्का कर लिया था। यही सोचकर रणधीर ने भी ख़ास उत्साह नहीं दिखाया। वहीं पास ही ईंटों का सफ़री चूल्हा बना लेने के बाद गोमेज़ चूल्हा और स्टोव साथ-साथ जलाकर अपनी दूकान फैलाकर बैठ गया। तेजपाल सीधी टाँगें फैलाये अधलेटे थे और गट-गट पानी पी रहे थे। और रुद्रा उभरती खुशी को अँगुली से मूँछों के ऊपर खुजाकर छिपाये हुए थे। इससे साफ़ था कि बाज़ी कड़ी पड़ गई है।

इसके बाद वह घटना होगई कि सारी पिकनिक ने दूसरा ही रूप धारण कर लिया।

हम सब लोग वहाँ से हटकर ऐसी जगह आगये थे जहाँ सामने एक टूटी-फूटी बाउण्ड्री की मोटी-सी दीवार थी। बीच में घास बिछा छोटा-सा मैदान था, जो थोड़ी दूर जाकर एक ओर ढालू हो गया था। नीचे जहाँ यह ढलान ख़त्म होता था वहाँ से काफ़ी लम्बा-चौड़ा ताल था और उसके काई लदे किनारों पर घास-सिवार के बीच-बीच में

छोटे-छोटे ढेरसे कमल खिले थे ! ताल के दूसरी ओर कुछ औरतें और बच्चे कमर-कमर पानी में डूबे, जाल मढ़े ढप जैसे लिये हुए मछलियाँ पकड़ रहे थे। उन्होंने छोटे-छोटे बर्तन या घड़े इधर-उधर तैरा दिये थे और पकड़ी हुई मछलियाँ उनमें डालते जाते थे। गुड्डी ने फूल लेने की ज़िद की तो मिसेज़ तेजपाल उसका हाथ पकड़कर उसे वहाँ भगा ले गई थीं। दोनों के हाथों में रंग-बिरंगे गुब्बारे थे और दोनों किनारे पर खड़ी बड़े मुग्ध भाव से मछलियों का पकड़ना देखती रहीं। गुड्डी कुछ पूछ रही थी और वे बताती जाती थीं। ऐसा लगता था जैसे गुड्डी का ही 'एनलार्ज्ड फोटो' साथ खड़ा कर दिया गया हो।

निशानेबाज़ी का क्लास शुरू करने के लिए रणधीर ने किटबैग से टारगेट, गोलियों का डिब्बा और फ़ीता निकाल लिया था। सबसे पहले उसे समझाना था बन्दूक के हिस्से और मशीन की बनावट। मूँगफली खाती हुई मिसेज़ रुद्रा और बीनू इधर-उधर उत्सुक विद्यार्थियों की तरह आकर बैठ गई थीं। मिसेज़ तेजपाल को बुलाना था, वर्ना उन्हें दुबारा समझाना पड़ेगा। बीनू ने दोनों हाथों का भोंपा-सा बनाकर पूरी दम से पुकारा : "मिसेज़ तेजपाल ! गुड्डी !" और इसी में उसके गले की सारी नसें उभर आईं। झेंप मिटाने को बोली : "उनको तो गुड्डी ऐसी भा गई है जैसे दोनों न जाने कब की सहेली हों। जाने आपस में क्या-क्या बातें किया करती हैं।"

"गुड्डी भी तो उनके लिए जान छोड़ती है।" अपने बड़े-बड़े दाँतों को ढँकने की चिन्ता किए बिना ही, खिलकर मिसेज़ रुद्रा बोलीं : "नीचे ज़रा-ज़रा-सी देर बाद कहेगी, ममी आण्टी के यहाँ चलो। जहाँ मैंने कहा, वहाँ मेजर तेजपाल हैं, बस वहीं सहमकर चुप। उनसे और किटी से अभी इसकी दोस्ती नहीं हुई है।"

"हैं ही डरावने।" बीनू ने रणधीर की ओर सहमी निगाहों से

देखते हुए मुस्कराकर कहा। वह टारगेट की झण्डी हाथ में लिये लगातार तालाब की ओर देखे जा रहा था।

देखा, गुड्डी को दौड़ाती हुई मिसेज़ तेजपाल दौड़ी चली आरही हैं। रणधीर मुग्ध आँखों से उधर देखता रहा। फिर जैसे अनायास ही उसके मुँह से निकला : "कुछ भी कहो, कम्बख्त का एक-एक अंग साँचे में ढला है !" इधर भाग कर आते हुए उनकी साड़ी शरीर से चिपककर पीछे उड़ने लगी थी और एक विचित्र अतीन्द्रिय-स्पर्श उनके शरीर को दिये दे रही थी। पीछे उड़ती साड़ी से दोनों पाँवों, कमर, धड़—सबकी बनावट और गठन अधिक स्पष्ट रूप में इस तरह उभरकर धूप में दिखाई दे रही थी जैसे खिले गुलाब की क्यारियों पर कुहरे का झीना नीला-नीला जाला हिलोरें ले रहा हो। बात सबके मन में यही थी, लेकिन रणधीर ने उसे खुलकर शब्द दे दिये थे : "हिरनी की तरह कुलाँचें भरती घूमती है !"

अगले ही क्षण मिसेज़ रुद्रा की निगाह बीनू के खिसियाए चेहरे पर जा पड़ी। वे बोलीं : "कुछ कहिए मेजर धीर, बुरी तो बीनू भी नहीं है। यह तो बेशर्मी है। ऐसे कपड़े पहनने से फ़ायदा ही आखिर क्या है !"

तब शायद रणधीर को ध्यान आया कि उन्होंने मिसेज़ रुद्रा और बीनू के सामने ऐसी बात कह दी है जो शायद अनुचित और अशिष्ट है। वह अपनी सकपकाहट सँभालता प्यार से बीनू के कन्धे पर हाथ रखकर बोला : "हमारी बीनू लाखों में एक है।"

"हटाइए हाथ।" बीनू ने लज्जा और अपमान से उसका हाथ झटक दिया। जैसे घुटकर बोली : "घर की मुर्गी दाल बराबर। इधर-उधर न ताकें तो आदमी ही किस बात के !" उसकी आँखें झलझला आईं।

हालाँकि बीनू को मैंने डाँटा : "बीनू, ये क्या बेवकूफ़ी है। मज़ाक नहीं समझती।" लेकिन उसकी बात मुझे भीतर छू गई। उसकी बात

में मिसेज़ रुद्रा जैसी न तो सालती ईर्ष्या थी, न आक्रोश। आत्महीनता की एक ऐसी घुटती कचोट थी जो मेरे मन को चीरती चली गई। मिसेज़-तेजपाल की 'लापरवाह स्वच्छंदता' ने दोनों महिलाओं को कितने भीतर तक मथ डाला है, इसका अहसास मुझे उस क्षण हुआ तो बड़ी दया आई। पता नहीं यह मेरे मन का पक्षपात था या कमज़ोरी; मुझे उनपर कतई क्रोध नहीं आ रहा था और साथ ही रणधीर का ढीलापन भी अच्छा नहीं लग रहा था।

कभी वे दौड़ने में आगे निकल आतीं तो चाल धीमी करके गुड्डी को बराबर आ जाने देतीं। गुड्डी के पाँव आड़े-तिरछे पड़ रहे थे। अँगुली पकड़ाये वह लुढ़कती-सी दौड़ी आ रही थी। जाने क्यों मुझे लगा—किटी के साथ मिसेज़ तेजपाल का दौड़ना कहीं अदृश्य-सूत्र से अन्तर्ग्रथित है। यों देखने में वह दृश्य ठीक उलटा था। किटी उन्हें इस तरह खींचकर जहाँ चाहे ले जाती थी जैसे वे सिर्फ़ उसकी इच्छा से चल रही हों और यहाँ वह गुड्डी के साथ बच्ची बनीं उसके साथ चली आ रही थीं। उस समय मैंने नहीं सोचा था कि यह दृश्य मन में इतनी गहराई से अंकित हो जायेगा और मिसेज़ तेजपाल के नाम के साथ वही चित्र उभरा करेगा।

"ममी आण्टी ने हमें दौड़ाया।" गुड्डी अपनी माँ से जा चिपकी। "ये फूल दिये।" उसके एक हाथ में दो-तीन फूल थे। पता लगा कि उन लड़कों से गुब्बारों के बदले यह सौदा स्वयं गुड्डी ने किया था।

"हम तो तुम्हारे लिए कमल-गट्टे तुड़वा रहे थे। बुलवा क्यों लिया हमें ?" हाँफती हुई मिसेज़ तेजपाल आसमान से उतरी परी की तरह एक हाथ से बाल सँवारती सामने खड़ी थीं। आँखें झपकाकर मैंने देखा और देर तक मन-ही-मन सोचता रहा—सचमुच, कैसे कोई इन पर क्रोध कर सकता है !

"आइए, पहले यह काम खत्म कर लें। फिर वे लोग खाने को बुलाएँगें।" रणधीर को बात शायद चुभ गई थी। अपराधी की तरह आँखें नीची किये वह रूमाल से बन्दूक का 'बट' (पीछे का हिस्सा) साफ़ करता रहा।

इसके बाद अपने चारों ओर हमें बैठाकर जितनी देर रणधीर ने बन्दूक के पुर्जों, बन्दूक चलाने के क़ायदों के बारे में समझाया, शायद ही उन्होंने आँख उठाकर देखा हो। फ़ीते से दूरी नाप कर टारगेट फ़्लैग गाड़े गये। ग़लती से कोई आने-जानेवाला उधर से न आ निकले, इसलिए एक आदमी को दीवार के पीछे भेजना था। "मैं जाऊँगी। आओ गुड्डी, हम चलें।" मिसेज़ तेजपाल बोलीं तो गुड्डी फिर उनकी टाँगों से जा चिपकी। "ममी से टा-टा बोलो।" मुझे फिर अपने को विदा देती उनकी मूर्ति दिखाई दी।

"ममी टा-टा!" गुड्डी ने कहा और वे दोनों लुढ़कती-पुढ़कती-सी सामने दौड़ चलीं—जैसे किसी विशाल रेतीले किनारे पर दूर चली जा रही हों।

"अरे मिसेज़ तेजपाल, इतना मत खिलाओ भाई। बाद में रोती है।" बड़े अनुनय-भरे स्वर में पीछे से मिसेज़ रुद्रा बोलीं। और जब बिल्कुल लम्बे, दण्डवत की मुद्रा में, लेटकर कुहनियाँ धरती पर और बट कन्धे पर टिकाकर रणधीर ने निशाना लेना दिखाने के लिए कहा—'रेडी' तो दीवार के पीछे से लहराता-सा स्वर उठा: 'मेरा तन डोले, मेरा मन डोले, मेरे दिल का गया क़रार, यह कौन बजाये बाँसुरिया....'

हम लोग एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कराये। मुझसे फिर हँसे बिना नहीं रहा गया: "सचमुच, बड़ी मस्त हैं।" तभी आँखों के आगे सहसा गोलियों का फूल कौंधा। किसी ने भीतर सुधारा—"मस्त नहीं, हिम्मतवाली!"

महिलाओं के लिए तो बन्दूक हाथ में लेकर निशाना साधना ही एक अभूत-पूर्व रोमांचकारी अनुभव था। हरेक को तीन-तीन गोलियाँ चलानी थीं। मिसेज़ रुद्रा और बीनू की छः गोलियों में से मुश्किल से दो बाहरी वृत्त के कोने पर लगी थीं। लेकिन दोनों ऐसे उल्लास से भरी काँप रही थीं मानो किसी बड़ी भारी दौड़ में सफल आई हों। मिसेज़ तेजपाल का नम्बर आया तो आवाज़ देकर उन्हें बुलाया गया। वे उसी अलमस्त और अल्हड़ चाल से टॉफ़ी कुतरती आईं और निस्संकोच लेट गईं। गुड्डी को उधर ही छोड़ आई थीं। इस बार मिसेज़ रुद्रा के साथ 'मैं भी चलती हूँ' कहकर बीनू भी चली गई। रणधीर ने उनकी कुहनियों को ढंग से धरती पर टिकाया, बन्दूक दी, और निशाना साधने के लिए उनके सिर से सिर मिलाकर, उनके स्पर्श को अधिक से अधिक बचाते हुए उन पर झुक गया। बन्दूक उसने उनके पंजों के ऊपर से खुद भी पकड़ ली थी। "देखिए, मिसेज़ तेजपाल, काँपिए मत। आप बहुत ज़्यादा 'एक्साइटेड' हो रही हैं।" एक आँख टारगेट पर टिकाकर रणधीर बोला। हालाँकि खुद उसके नथुने फड़कने लगे थे। कान की लवें लाल हो आई थीं। फिर भी वह आश्चर्यजनक रूप से संयत दिखाई दे रहा था। इस दृश्य को देखना बड़ा दिलचस्प था। मेरे भीतर कहीं बहुत गहरे में इच्छा हुई, काश ! मैं भी यों इन्हें गोली चलाना सिखा पाता। आश्चर्य की बात यह कि उस समय मैं यद्यपि काफ़ी पीछे था और रणधीर की ठोड़ी उनके सिर पर रक्खी-सी थी, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी ठोड़ी वहाँ रक्खी है और उनके बालों की भीनी-भीनी गंध मेरे मस्तिष्क में समाई जा रही है और उनके नाइलोनी कपड़ों के सजीव पारदर्शी-स्पर्श ने मुझे रोमांचित कर डाला है। उनके शरीर की गन्ध का जादू मेरे चारों ओर लहरा उठा है। मैं साँस रोके उस अनुपमेय अनुभूति को पीता रहा।

"मिसेज़ तेजपाल, आप बेकार देर लगा रही हैं।" मुझे सहसा रणधीर का झुँझलाया स्वर सुनाई दिया। देखा, रणधीर ने सिर घुमाकर एक उड़ती-सी नज़र उस ओर डाली जहाँ धरती के उठाव के पार पेड़ों की आड़ में तेजपाल और रुद्रा शतरंज खेल रहे थे।

"कैसे पकड़ें, बताइए न।" नाक के स्वर में वे बोलीं।

और जैसे ही अँगुली पर अपनी अँगुली रखकर रणधीर ने घोड़ा दबाया कि उन्होंने बन्दूक-बन्दूक छोड़कर हथेलियाँ कानों पर रख लीं : "उई !" वे चीख उठीं।

"धाँय !" के साथ देखा—सामने एक तेरह-चौदह साल का लड़का हक्का-बक्का खड़ा है।

"हाय।" सबके मुँह खुले रह गये। अभी एक क्षण में ग़जब हो सकता था। यह सभी के सामने बिजली की तरह कौंध गया।

रणधीर झटके से उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी बन्दूक एक ओर फेंक दी।

"यह क्या मिसेज़ तेजपाल ? अभी ग़जब हो जाता न। आपको हर वक्त बचपना....सारी पिकनिक रक्खी रह जाती।" दाँत पीसकर झुँझलाया वह आगे झपटा और सारा गुस्सा उस लड़के पर उतार डाला। अन्धाधुन्ध तीन-चार झापड़ जड़ दिये : "यहाँ क्यों आया ? आवाज़ देनी चाहिए थी। तुझे भेजा किसने यहाँ ?"

लड़का खुद भौंचक्का होकर स्तब्ध-सा रह गया था। हकला-हकलाकर टूटे-फूटे स्वर में उसने कहा कि 'मेमसा'ब लोगों ने कहा, सा'ब को खाने को भेज दो।'

"कहाँ हैं मेमसा'ब ? साले खुद मर जाते और हमें मुसीबत में डाल जाते।" और उसकी कुहनी पकड़कर घसीटता रणधीर उसे दीवार के पीछे ले गया। मुड़कर मुझसे कहता गया : "गन और कार्टिजेज़ लेते आना।"

अभी-अभी अगर दुर्घटना हो गई होती ? इस बात की कल्पना अनेक भयंकर रूपों में सामने आ रही थी। मिसेज़ तेजपाल पहले तो आँखें फाड़े बुद्धू की तरह रणधीर को देखती रहीं और फिर घुटनों में सिर गड़ाकर सिसकने लगीं। इस समय मुझे उनपर कोई दया नहीं आई थी—उनके ज़रा-से खिलवाड़ में एक जान जा सकती थी। लेकिन इस लड़के को भी आखिर यहाँ आ मरने की क्या ज़रूरत थी ? बीनू वगैरा ने आखिर इसे वहाँ रोका क्यों नहीं ? मैंने सहमते हाथों से बन्दूक इस तरह उठाली जैसे इस सारे सम्भावित-भयंकर कांड की ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर हो, और कहीं मूल रूप से अपराधी मैं हूँ। बन्दूक से डर लगता था कि कहीं चल न जाय। आदमी ने अपने आपको मारने के लिए भी कैसे-कैसे हथियार बना लिये हैं। नोक की इंच भर गोली और पिछला और अगला सारा इतिहास एक क्षण में समाप्त ! कैसी आसानी से लोग पलक मारते ही दूसरे का अस्तित्व समाप्त कर डालते हैं; कभी नहीं सोचते कि हर जीवन के साथ उनके अपने जीवन की तरह ही इतिहास, भावनाएँ, सम्पर्क और सम्बन्ध होते हैं। सब सामान उठाकर मैंने कहा : "खैर जो हुआ सो हुआ, मिसेज़ तेजपाल...."

वे कुछ नहीं बोलीं। उनके बाल उनकी बाँहों पर बिखरे रहे। सिर दो-एक बार काँपा।

"अब छोड़िए, लेकिन आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था।" मैं उनके बिल्कुल पास आ खड़ा हुआ। झुककर कुहनी पकड़कर उठाते हुए संकोच से बोला।

उन्होंने घुटे स्वर में रुँधे गले से कहा : "तुम चलो।" और सिर उठाकर कुछ ऐसी निरीह-कातर निगाहों से देखा कि मैं उन्हें सँभलने को छोड़कर इस तरह चला आया जैसे मैं ही किसी को मार कर आ रहा हूँ। धूप चुभने लगी थी। इस समय मुझे उनसे पहले जैसी

कोई हमदर्दी नहीं थी। लेकिन मुझे लगा जैसे यह षड्यंत्र बीनू और मिसेज़ रुद्रा का बनाया है।

देखा, मेजर तेजपाल और रुद्रा की शतरंज चालू थी। रुद्रा बार-बार बैठक बदल रहे थे और उनके जबड़े की हड्डी कनपटियों पर तेज़ी से चल रही थी। तेजपाल सिगरेट के टिन पर ताल दे रहे थे। बीनू और मिसेज़ रुद्रा स्नैप्स लेने में मशगूल थीं। गोमेज़ सबके घरों से आये टिफ़िन कैरियरों को खोल-खोलकर प्लेटें लगा रहा था। रणधीर लड़के का कान पकड़े खड़ा बुरी तरह उन्हें डाँट रहा था: "आप लोगों को वहाँ से जाने की ज़रूरत क्या थी? कम से कम आवाज़ देकर आतीं। ज़ुबान तो थी। ज़रा-सी देर नहीं बैठा जाता था। अभी यह साला मर जाता तो? कोई काम कितना सीरियस है, तुम लोगों को कभी समझ में नहीं आयेगा।"

लेकिन मैंने देखा जैसे रणधीर का स्वर कहीं दब रहा था। बीनू थोड़े उद्धतभाव से गाल फुलाये कैमरा बंद कर रही थी। पता चला गोमेज़ ने बर्तन वग़ैरा धोने के लिए उस लड़के को यहीं से पकड़ लिया था। जब सब तैयार हो गया तो उनसे कह आने के लिए उसे भेजा कि 'सा'ब बुलाता है।' इन लोगों ने सोचा कि ज़रा-सी देर में इधर कौन आता है। ये उठकर चली आईं। उस कम्बख़्त को भी पहले वे ही मिलीं। उन्होंने लड़के से कहा कि यहाँ बैठ जाओ, जब तीन गोलियाँ चल जायें तो बुला लाना, दीवार के उस पार से सा'ब को। शायद बात उसने पूरी समझी नहीं, थोड़ी देर बैठा और फिर बुलाने को दौड़ पड़ा।

"होये, की होंदा पयां यारां!" मस्ती में आकर तेजपाल बोले। उनका वज़ीर दुश्मन के व्यूह में घुस गया था और सफलतापूर्वक कई मुहरे मारकर ऊँट के ज़ोर में शह देने की तैयारी कर रहा था। वे शराबियों

की तरह हाथ फैलाकर बोले : "मरा तो नहीं ? अब छोड़ो, उन बेचारियों की जान क्यों आफ़त में किये हो। और अगर मर ही जाता तो कौन साली दुनिया सूनी हो जाती।"

मैं बन्दूक इत्यादि वहीं रखकर बैठ गया और शतरंज देखने लगा। मन में खटक लग रही थी कि मैंने मिसेज़ तेजपाल को न लाकर ग़लती की। कम से कम एकाध बार और मुझे उनसे अनुरोध करना चाहिए था। वे बेचारी वहाँ बैठी रो रही हैं। रणधीर बोला : "बात मरने की नहीं है, यह तो इनकी लापरवाही की बात है। एक काम दिया सो वह भी ठीक से नहीं किया गया।"

"यार धीर, तू तो एक बात के पीछे पड़ जाता है। अब जो नहीं हुआ उसे लेकर क्यों जान खाये जा रहा है ?" तेजपाल झुँझला उठे : "हमने सैकड़ों मार दिये। कोई साला पूछनेवाला था !"

"लेकिन लड़ाई की बात और है न ?" गम्भीर स्वर में रुद्रा ने हथेली पर धीरे-धीरे ठोड़ी ठोंक-ठोंक कर कहा। उनकी कनपटियों की हड्डियाँ जिस तरह चलती थीं, उससे जाने क्यों खयाल होता था कि उन्हें शराब पीने की आदत है।

"लड़ाई में नहीं जी, एकाध तो यों ही निशाना देखने को खत्म कर दिया।" तेजपाल उत्साह से बोले। उनके चेहरे और आँखों में बड़े क्रूर क़िस्म की लपक चमक उठी थी। "जिन दिनों हम लोग चानमारी किया करते थे उन्हीं दिनों की बात है। किसानों से हमने खेत ले रक्खे थे, उनके चारों तरफ़ अपने हिस्से में कँटीले तार खींचकर बाउण्ड्री बनाली थी।" वे मुझे सबसे अधिक दिलचस्पी लेते हुए देखकर मुझे ही सुनाने लगे : "वह हमारी राइफ़िलों का रेंज था। उनके भीतर आने की लोगों को मनाही थी। क्योंकि अगर उसके भीतर गोली लग जाती तो कोई ज़िम्मेदारी किसी की नहीं थी। यों ही एक

दिन चानमारी कर रहे थे कि देखा एक बुड्ढे की भेड़ें दूर कँटीले तारों में घुस आईं। अपने हाथ के डण्डे से कँटीले तार उठाकर बुड्ढा भी उनके पीछे-पीछे उन्हें घेरता हुआ घुस आया। मैं देखता रहा, देखता रहा। जब भेड़ें हाँक कर वह बाहर निकल गया और तारों में फँसे डण्डे को निकालने लगा तो मेरे मन में आया देखें तो सही, राइफ़िल का रेंज उसके बाहर तक है भी या नहीं। आइ सैड, लैट्स हैव ए फ़न। एक सचमुच की डमी ही सही। मैंने राइफ़िल सीधी की और धाँय से निशाना दाग़ दिया।"

"फिर?" मेरा मुँह खुला रह गया।

"फिर क्या? साला टें बोल गया। गोली पसली के पार होगई। ट्वेल्व बोर की गोली खाकर साँस ले सकता था कहीं? कद्दू की तरह लुढ़क गया।" वे अपने गाल फुलाकर दोनों हथेलियों को आपस में इस तरह मसलते रहे जैसे पानी में हाथ धो रहे हों।

"फिर कुछ नहीं हुआ?"

"होता क्या? साले की टाँग खींचकर भीतर तारों में कर लिया। कह दिया, भीतर घुस आया था और वहाँ पूछता कौन है?" रुद्रा ने चाल चलदी थी, अतः अत्यन्त इत्मीनान से तेजपाल अँगुलियाँ नचाते हुए अगली चाल तय कर रहे थे। बोले : "यार, सब दीख रहे हैं। हमारी बीबी नहीं दीख रही। किधर गई?"

"उधर बैठी अफ़सोस कर रही हैं।" रणधीर कड़वाहट से बोला।

जो आदमी सिर्फ़ मज़ाक के लिए किसी की जान ले सकता है, उसे मैं फटी-फटी आँखों से देखता रहा। जी बहुत खराब हो आया था और मन होता था कि पास पड़ी बंदूक उठाकर मैं भी एक 'फ़न' देखलूँ कि इनके उठे-उठे बालों के गुच्छे वाले कान गोली लगने पर कैसे लगते हैं। बन्दूक का बट उनके टेंटुए पर रखकर दबाने की

तड़पन भीतर मचल-मचल कर रह जाती थी। मैं बैठा-बैठा सुनता रहा लेकिन वे निहायत निरुद्विग्न भाव से खेलते रहे। मुझे उनकी आँखों और नाक की जगह बन्दूक की गोलियाँ रक्खी दिखाई दीं। और चेहरा जैसे लाल फैल्ट का टुकड़ा हो....गोलियों का फूल....जिसके दोनों ओर पत्थर की आँखों वाले मुर्दा बारहसिंघे के सिर लगे हों।

"यार, उस कमबख़्त के नाज़ुक दिल के मारे हम परेशान हैं। जो बात नहीं हुई, अब उसके लिए घण्टों रोयेगी। इतना समझाता हूँ कि तू आख़िर मेजर की बीवी है! कुछ तो दिल कड़ा कर, लेकिन समझ में ही नहीं आता।"

मैंने देखा उनका चेहरा आश्चर्यजनक रूप से कोमल हो उठा। वे हथेली टेककर उठे और फिर दोनों हथेलियाँ झाड़कर बोले: "भई, एक मिनट में आता हूँ। ज़रा बीर देखना; ये मुँहरे इधर-उधर न कर दें। है किधर वो?"

रणधीर ने अँगुली उठाकर इशारा कर दिया, और वे झूमते-झामते वर्दी खड़खड़ाते उधर चले गये। देखा तो थोड़ी देर बाद ही मिसेज़ तेजपाल की बाँह को अपनी बाँह में दाबे, वे उन्हें लिये चले आ रहे हैं; उनकी घड़ी का डायल धूप में चमक रहा है। रूठे बच्चे की तरह वे जैसे अनिच्छा-पूर्वक झेंप से मुस्कराती खिंची चली आ रही हैं। उनकी आँखें लाल थीं और वे बार-बार नाक सुड़क रही थीं। बिन्दी बिगड़ गई थी। दूसरे हाथ से कभी-कभी कान के ऊपर बाल ठीक कर लेती थीं। तेजपाल का चेहरा खिला था। तब मैंने जाना, तेजपाल कहीं भीतर गहराई में उन्हें बहुत प्यार भी करते हैं।

लेकिन उस क्षण गहरी ख़ाकिया वर्दी में रंग-बिरंगे रिबन लगाये मेजर तेजपाल और आसमानी कपड़ों में फूटे पड़ते निष्कलुष सौन्दर्य की आभा को देखकर किसी ने मन ही में बहुत ज़ोर से दुहराया....

ब्यूटी एएड द बीस्ट !....

पिकनिक फिर कैसी हुई, मुझे पता नहीं। मेजर तेजपाल का चेहरा देखकर मुझे उबकाई-सी आती थी। उनकी कनपटियों पर सफ़ेद होते बाल बड़े भद्दे लगते थे और बालों से भरी कलाई पर घड़ी का चौड़ा-सा डायल हाथ घुमाते ही झलमला उठता था और जिसमें अंकों की जगह सुनहरी बिन्दियाँ रखी थीं और सेन्टर सेकिएड की लाल सुई निरन्तर घूमती रहती थी....मैंने जब-जब उसे देखा तो लगा जैसे कोई परिचित चीज़ याद आ रही है ...जैसे इस घड़ी के सुनहरे बिन्दियों वाले डायल और लाल सुई का किसी चीज़ से निकट सम्बन्ध है....तभी एकाएक वह गोलियों का फूल स्मृति में कौंध गया....घड़ी के सुनहरे अंक गोलियों के पीतल के शरीर की याद दिला गये थे.... फिर न जाने क्यों ऐसा लगा जैसे सैकिएड की लाल सुई ऐसी जलती तीली है जो एक-एक अंक को जलाती हुई निकल जाती है !....और गोलियों का फूल आतिशबाज़ी की चरखी की तरह जलता हुआ घूमने लगता था....और हर बार कोई कहता था—यह आदमी अपने मनोरंजन के लिए एक हत्या को स्वीकार कर चुका है....जाने कितनी और की होंगी .. और....

आज मैं सोचता हूँ कि रणधीर ने ठीक कहा था। वह आदमी ज़रा सी बात में बेझिझक मुझे गोली मार सकता था। सच बात तो यह है कि उस दिन से मैं उनसे मन ही-मन दहशत खाने लगा था। लेकिन मैं क्या सचमुच मिसेज़ तेजपाल को लेकर कोई खतरनाक खेल खेल रहा था ? जहाँ तक स्मृति को कुरेद कर देखता हूँ लगता है, ऐसा तो नहीं है। वे मुझे अच्छी लगती थीं, क्योंकि उनकी सुन्दरता और सजीवता के जादू से मैं अपने आपको मुक्त नहीं कर पाता था। इस

बात को वे भी जानती थीं और निगाहें मिलते ही हम दोनों इस तरह मुस्करा उठते थे जैसे किसी व्यक्तिगत और साझे के रहस्य के दोनों हिस्सेदार हैं। उनके कुछ कमज़ोर और भावुक क्षणों में मैंने उन्हें देखा था। और यही हमारी आत्मीयता थी। मुझे तेजपाल पर क्रोध आता है। मिसेज़ तेजपाल पर—जिनका नाम मैं आज तक नहीं जान सका, दया आती थी, उनके प्रति हमदर्दी होती थी....आज भी ऐसा लगता है जैसे जाने-अनजाने पोज़ों में उनका चेहरा, वह बाल झटकारने का ख़ास अन्दाज़, सभी कुछ मेरे सामने साकार हो उठे हों। मुझे मन ही मन इस पर भी गर्व था कि उनके और मेरे बीच में कहीं कोई नाज़ुक, गहरा और शायद मधुर समझौता है। हम लोग मित्र हैं, लेकिन बस इसके आगे और कोई बात मेरे दिमाग़ में नहीं आती। मैं मानता हूँ कि उनका शरीर-सौन्दर्य आँखों को बाँध लेता था और उनमें वह चीज़ कूट-कूट कर भरी थी जिसे अंग्रेज़ी में सैक्स-अपील कहते हैं। लेकिन उनके शरीर-सौन्दर्य में कुछ था जो जाने किन स्वप्नों के रहस्य-लोकों में मन को पहुँचा देता था। उनकी बच्चों जैसी हरकतें बिल्कुल बनावटी हैं, यह जानकर भी मन में उन पर क्रोध नहीं आता था। ख़ैर जो भी हो, तेजपाल से मैं कतराता था और उनकी उपस्थिति में प्रायः मुझे बड़ी बेचैनी अनुभव होती थी। अब इसे समय का प्रभाव कहिए या कुछ और कि जैसे ही मैं उनके सामने से हटा कि मन पर पड़ी उनकी छाप बदलती गई। बाद में जब भी एकाध बार उनका ज़िक्र आया तो 'अरे वो हमारे तेजपाल' कह कर ही उनका नाम याद आता। मन-ही-मन मैं उन्हें दोस्त समझने लगा था, क्यों कि आगे उस रूप में मिलने की कभी उम्मीद नहीं थी। लेकिन आज उन्होंने मुझे पहचाना तक नहीं, कॉफ़ी-हाउस में अगर वे पहचान लेते तो मैं ही उन्हें जी भर कर कॉफ़ी पिलाता और इतने पुराने परिचित के

मिलने पर खुश होता। लेकिन आज तो उन्होंने जैसे अनजाने, पर खुले रूप में शत्रु ही घोषित कर दिया....मगर बीनू कहती है कि वे बेचारे तो अपने होश में नहीं थे! वे तो राँची से छूटकर आये हैं.... जाने क्यों पागल हो गये? मिसेज़ तेजपाल जाने कहाँ होंगी....कैसी होंगी जाने....

और मेरा मन घूमने में क़तई नहीं लगा। मैं यों ही सिगरेटें फूँकता लौट आया। क्वार्टरों में अँधेरा हो चुका था और गेट का दरबान ताला बन्द कर चुका था। बगल के रास्ते मैं ऊपर आया। अपने कमरे में सीधा जाकर लेटा ही था कि स्लीपिंग-गाउन चढ़ाये बीनू हाथ में लम्बे-से कप में ओवल्टीन लिये आ गई : "ग़लती से बैरा ने यह हमारे ही कमरे में रख दी थी। बहुत देर लगा दी। हम लोग तो तभी नौ बजे आ गये थे।...."

मैंने पाँव एक ओर खिसकाकर कहा : "बीनू, मेरा मन नहीं लग रहा भाई। बता न मेजर तेजपाल कैसे पागल हो गये? अच्छा मिसेज़ तेजपाल कहाँ हैं आजकल?"

बीनू ने मेज़ पर दूध रक्खा और होंठ सिकोड़कर अँगुलियाँ नचाईं : "क्या मालूम!" वह रज़ाई का पल्ला ज़रा-सा घुटनों पर लेकर बैठ तो गई, लेकिन एक बार बड़े रहस्यमय ढंग से मुस्करा कर जँभाई ली। उस मुस्कराने का अर्थ जहाँ एक ओर जाने की जल्दी बताना था वहाँ यह जताना भी था कि तुम्हारी बेचैनी मैं समझ ही नहीं रही, उसका मज़ा भी ले रही हूँ। उसकी हर मुद्रा मानो कह रही हो—मिसेज़ तेजपाल की बात सुनकर रहा नहीं जा रहा न। आखिर उसने कह ही दिया : "अरे तुम्हें तो खत लिखती होंगी न, तेरी तो दोस्त थीं। द मोस्ट इण्टीमेट फ्रैण्ड।"

मुझे ऐसी झुँझलाहट आ रही थी कि इसके बाल नोच लूँ। इस

वक्त भी यह मज़ाक़ करने से बाज़ नहीं आ रही। मैंने आजिज़ी से कहा : "वीनू तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ। इस समय मज़ाक़ मत करो। अगर नहीं बताना चाहती तो कोई बात नहीं। जाकर सो जाओ।"

वीनू सहसा गम्भीर हो गई, दो क्षण मेरी आँखों में देखती रही फिर कहीं खोकर बोली : "ज़्यादा तो मुझे खुद नहीं पता। जो जानती हूँ सो सब इन्हीं से सुना था...."

और जो कुछ उसने सुनाया वह यों है : "मेजर तेजपाल दो महीने को कैम्प पर चले गये। पहले उन्होंने मिसेज़ को अपने घर भेजना चाहा, लेकिन वह नहीं मानी। बोली, यहीं रहूँगी। खैर, वहीं रहने लगी। वही दिन-दिन भर गाना और कभी गुड्डी को और कभी कुतिया को लिये हुए इधर से उधर घूमना। दो-एक दिन तो हमारे यहाँ अड्डा जमाये रक्खा, लेकिन फिर हम सभी लोगों ने ध्यान दिया— धीरे-धीरे उसका गाना कम होने लगा। इसके साथ-साथ औरों के यहाँ आना-जाना भी कम हुआ। हमने सोचा कि बेचारी अकेली हैं। परदेश में हमीं लोग तो उनके अपने हैं सो मैं अक्सर उन्हें देखने जाने लगी। लेकिन उनके व्यवहार में एक अजब क़िस्म की निर्जीवता आने लगी। ये अक्सर बैठी-बैठी मोटी-मोटी किताबें पढ़तीं। ये मुझे समझाते कि 'तुम चली जाया करो। अकेली है। उसका मन कैसे लगता होगा। आख़िर मेजर तेजपाल ने हमारे ही ऊपर तो उन्हें छोड़ा है। आज अगर मैं कैम्प चला जाऊँ तो पड़ोसवालों के भरोसे तो छोड़ूँगा ही।' अक्सर जब भी इनसे मुलाक़ात हो जाती तो ये कहते 'मिसेज़ तेजपाल, आपकी तबियत-वबियत तो ख़राब नहीं रहती। वैसे तो आप ख़ुद ही इतनी फ़्री हैं कि कुछ सोचेंगी नहीं, लेकिन हमारे लायक़ कोई काम हो तो बिना किसी संकोच के बताइए। आपका यों

सुस्त रहना सारी जुबली-लाइन्स को अखर रहा है। हमें तो बिना गाना सुने खाना हज़म होना बन्द हो गया है। इस बीनू के साथ पहले आप मार्केटिंग, क्लब-सिनेमा वग़ैरा तब भी चली जाती थीं, दिन-भर कुछ-न-कुछ करती रहती थीं, वह भी आपने बन्द कर दिया।' एकाध बार तो इन्होंने मज़ाक में कह भी दिया : 'मेजर तेजपाल को बहुत मिस कर रही हैं क्या ? अगले हफ़्ते मुझे कैम्प जाना है, मिले तो कह दूँगा।' वे 'थैंक्स' कहकर चुप हो गईं और सुस्त-सी हँसी हँसकर बोलीं : 'नहीं, कोई ऐसी बात नहीं है, ख़ास।' किटी को सुबह-शाम ज़रूर घुमाने ले जातीं, वर्ना दिन भर कभी इस बरामदे में कभी उस बरामदे में रेलिंग के सहारे खड़ी, कुहनियाँ टिकाये होठों को नोचा करतीं....मैंने उन्हें तीन-तीन चार-चार घण्टे यों खड़े देखा है। जाने क्या देखा करती थीं, सूनी-सूनी आँखों से। यह हम जानते थे कि हस्बैण्ड और वाइफ़ में बहुत ज़्यादा प्यार हो, ऐसा नहीं है। बल्कि जहाँ तक मेजर तेजपाल की बात है, वे तो भीतर ही भीतर उन्हें बहुत चाहते भी थे लेकिन ये हमेशा खिची रहीं। फिर भी हमने सोचा, टीज़ करने को ही सही, सारे दिन गाती-खिलखिलाती तो रहती थीं, एक रौनक बनी थी। चर्चा के लिए कुछ चीज़ थी। अब कुछ भी नहीं था। बस कभी 'वार एण्ड पीस' पढ़ रही हैं तो कभी 'ज़्यां क्रिस्तोफ़'। हम घण्टों जाकर चुपचाप बैठे रहते। हार कर पूछते : 'मिसेज़ तेज़पाल, आपका मन कैसे लगता है इन किताबों में ?' बस जवाब में खोई-खोई-सी मुस्करा देतीं....मानो वह धीरे-धीरे दूसरी दुनिया में खो गई हों....हम सभी इस बात को महसूस करने लगे थे....इसके बाद इनके भी आर्डर्स तेजपाल के साथ कैम्प पर जाने को आ गये। मेरे दो-एक हफ़्ते इनकी तैयारी और बाद की सँभाल में चले गये....मुझे तो इस बीच दिल्ली भी जाना था....

"इसके बाद फिर एक और परिवर्तन की ओर हमारा ध्यान गया। दिन में दो-तीन बार मिसेज़ तेजपाल हमारे यहाँ पूछने आने लगीं कि 'पोस्टमैन आ गया क्या?' जैसे ही पोस्टमैन आता वे दूर से ही अपना दरवाज़ा खोल कर खड़ी हो जातीं, और जब वह नीचे से ही चला जाता तो उनका चेहरा देखने लायक़ हो जाता। वे हमारे यहाँ आतीं : 'ग़लती से हमारा कोई खत तो पोस्टमैन यहाँ नहीं डाल गया।' अक्सर किटी को घुमाती हुई पोस्ट-आफ़िस जा पहुँचतीं....या गेट पर खड़ी रहतीं। खत पाने के लिए जैसे वे दिन भर पागल रहती थीं....उनका रोम-रोम मानो साकार प्रतीक्षा बन गया था।....उनका खत तो हमारे यहाँ नहीं आया लेकिन एक दिन जाने वे किस काम से आईं कि उनके खत का एक पन्ना हमारे यहाँ छूट गया। मैंने तो इन्हें भी दिखाया। मेरी तो समझ में कुछ आया नहीं। उन्हें लौटाने के लिए मैंने वह एक किताब में रख दिया, फिर उसे ऐसी भूल गई कि बहुत खोजने पर भी नहीं मिला। इसीलिए जान-बूझ कर उनसे ज़िक्र भी नहीं किया कि वे माँगेंगी। ये मुझसे लड़ते रहे कि अगर ऐसी ही याद पाई है तो मेज़ पर रख देतीं, कम-से-कम उन्हें लौटा ही देते। अभी थोड़े दिन पहले किसी काम से ये एक किताब पलट रहे थे कि खत उसमें मिल गया...."

"अभी है वह?" मैंने बात काटकर पूछा।

"है तो सही। उसी किताब के अन्दर रक्खा है।" बीनू ने बताया।

"हमें दिखादे न?" मैंने खुशामद से कहा। मैं उस खत से उनकी मानसिक-स्थिति समझना चाहता था।

"अब उठेंगे तो लायेंगे।" उसने बदन तोड़ कर कहा : "हाँ तो, हम लोग दिन भर आश्चर्य करते कि आखिर मिसेज़ तेजपाल को हो

को इतना मिस करेंगी। हम तो सोचा करते थे कि वे उन लोगों में से हैं जिन्हें कुएँ में भी डाल दो तो भी गाती रहें....इन दिनों गाना तो उनका खो गया था....

"एक दिन सुना उनके फ्लैट से वॉयलिन की आवाज़ आरही है। उन्हें वॉयलिन सीखने की धुन लग गई थी। एक काला-सा आदमी उन्होंने लगा लिया था जो रोज़ आकर उन्हें वॉयलिन सिखाया करता था। जब जाओ तब वॉयलिन बजा रही हैं....उसी के बारे में बातें.... बाज़ार जाओ तो उन्हीं के बारे मे बातें. उन्हीं की दूकानों के चक्कर। हम लोग जान गये थे कि ये सनकी हैं और जो भी इनके दिमाग़ में चढ़ जाता है बस उसी के पीछे हाथ धोकर पड़ जाती हैं। फिर उन्हें न खाने का होश रहता न सोने का। बस, एक काम वे नियमित रूप से करती थीं—वह था किटी को घुमाना। कलाई में फीता लपेटे वे रोज़ दोनों वक्त उसे घुमाने ले जातीं। लेकिन उसके पीछे दौड़ती हुई जैसे वे मस्त होकर गुनगुनाया-गाया करती थीं, वह सब एकदम समाप्त हो गया—अब तो जैसे बीमार और मजबूर-सी उसके पीछे घिसटा करतीं।.... हम लोगों को बड़ा तरस आता ...फिर एक दिन देखा, सामान-बामान बाँधकर उन्होंने सीट रिज़र्व कराई और बोलीं, 'मैं घर जारही हूँ।' हम लोग क्या करते? छोड़ आये स्टेशन तक जाकर। बस, इसके बाद से उनका पता नहीं चला कि कहाँ गईं....कहीं मरीं या अभी भी ज़िन्दा हैं....।

"इधर मेजर तेजपाल का यह बताते हैं....रिज़र्व्ड तो वे शुरू से ही थे सो मूड में हुए तो बोल लिये, नहीं तो कम ही बोलते-चालते थे। एक दिन शाम के वक्त लालटेन जलाकर ये दोनों ख़ाली वक्त में कोई काग़ज देख रहे थे। मेज़ पर दोनों दो ओर बैठे थे। तभी अर्दली ने डाक लाकर दी। उन्होंने लिफ़ाफ़ा खोला, ख़त निकाल कर पढ़ा और

फिर रख दिया। थोड़ी देर चुप रहे। इन्होंने पूछा : 'कोई खास बात ?' बोले : 'नहीं ?' फिर काम करते रहे। थोड़ी देर बाद फिर लिफ़ाफ़ा उठाया, पढ़ा और फिर रख दिया। इन्होंने देखा, मेजर तेजपाल का मन काम में नहीं लग रहा है तो डिनर पर मिलने को कहकर ये भी उठ आये। खाने पर तेजपाल नहीं पहुँचे तो बुलवाया। अर्दली से पता चला कि 'साहब तो बन्दूक लेकर गया है। कह गया है, हम शिकार पर जाता है।' इनको कुछ अजब लगा। दूसरे दिन पता लगा कि उस दिन रात को वे पास की पहाड़ी पर चले गये थे और वहाँ उन्होंने अन्धाधुन्ध आसमान की ओर फ़ायर किये थे। सुबह जब अर्दली ने बेड-टी दी तो धक्का मार कर उसे दूर फेंक दिया। परेड पर आये तो अजब हाल, वही रात के कपड़े, हजामत बढ़ी हुई, संजीदा चेहरा ! जब उनका ध्यान इस ओर खींचा गया तो अचानक पागलों की तरह एक तरफ़ भागे। पहले तो ये लोग भी हक्के-बक्के देखते रह गये, फिर उनके पीछे भागे। झाड़ी, पत्थर, गड्ढे, काँटे-कंकड़ कुछ भी नहीं देखा—जाने कहाँ-कहाँ भागते फिरे। सारे कपड़े फट गये। बदन में खरोंचे पड़ गये। सारा बदन लोहू-लुहान हो गया। लोगों ने उन्हें पकड़ा तो लगे लोगों को लात-घूँसों से मारने ! ये हर बार कहते : 'मेजर तेजपाल, ये आप क्या कर रहे हैं। कुछ तो सोचिए ? आपको हो क्या गया है ?' बस, बुरी-बुरी गालियाँ देते और कहते : 'मैं गोली मार दूँगा।' किसी की कुछ नहीं सुनी, यह तो कहो, उनके दिमाग़ में नहीं आया वर्ना कहीं अगर इन लोगों को ईंट-पत्थर मारने की बात दिमाग़ में आ जाती तो दो-एक को घायल कर डालते। पकड़ना भी मुश्किल हो जाता। ख़ैर, जब उन्हें पकड़कर कैम्प में लाये तो उनका बुख़ार उतर गया था। वे अच्छे-भले आदमी की तरह व्यवहार करने लगे। बहुत माफ़ी-वाफ़ी माँगते रहे। बोले : 'पता नहीं मुझे क्या हो गया था।' इन्होंने भी

समझा—शायद कोई लहर आई हो, अब गुज़र गई। दो आदमी पहरे पर रखकर उन्हें छोड़ दिया गया। वे दिन भर कम्बल ओढ़े पड़े रहे। कैप्टेन मक़ीजा ने आकर देखा, बिल्कुल नॉर्मल आदमी थे। हाँ, वह खत उन्होंने फाड़-फूड़ दिया, और बहुत पूछने पर भी उसके बारे में कुछ नहीं बताया। कहा, यह एकदम व्यक्तिगत मामला है। दिन भर कुछ नहीं खाया-पिया। सारा बदन अंगारों की तरह तपता रहा, एक पल को आँख नहीं लगी। किसी से कुछ नहीं बोले....

"दूसरे दिन सन्ध्या को बोले : 'मैं ज़रा टहलूँगा।' इन लोगों ने भी सोचा—भले आदमी की तरह छत्तीस-घण्टे हो चुके हैं। अब बुखार उतर गया होगा। उनके अर्दली को साथ करके टहलने भेज दिया। झुटपुटे का समय था। वे आगे-आगे थे, अर्दली कुछ दूरी पर चल रहा था। रास्ते भर दोनों चुप रहे लेकिन आते समय उन्हें एक औरत मिल गई। वह अपने खेत से पोटली सिर पर लादे घर जा रही थी। बस, उसे देखते ही उनका दिमाग़ फिर ख़राब हो गया। एक ही छलाँग में उसके सिर पर सवार हो गये। पूछा न ताछा, औरत को उठाकर धरती पर दे पटका, उसके कपड़े-वपड़े फाड़ डाले और जब तक उसकी चीख़-पुकार सुनकर, अर्दली की आवाज़ पर लोग दौड़ें-दौड़ें तब तक उन्होंने उसके बदन पर एक इंच-भर कपड़ा नहीं रहने दिया था। गाँव वालों की मदद से उन्हें पकड़कर कैम्प लाया गया। रात भर खाट से बाँधे रक्खा। वे रात भर चीखते-चिल्लाते रहे—'मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो।' दूसरे दिन कैप्टेन मक़ीज़ा ने रिपोर्ट दे दी कि इनका दिमाग़ ख़राब हो गया है। मक़ीजा के साथ उनकी नर्स भी आई तो उसे देख-देख कर ये जैसी चेष्टाएँ करते थे और जिस अश्लील और बीभत्स-भाषा में कहनी-अनकहनी सुना रहे थे, उसे देखकर नर्स को वहाँ से हटा देना पड़ा। इससे एक बात यह साफ़ हो गई कि औरत की सूरत देखते ही उनका

पागलपन भड़क उठता है। उसके बाद उन्हें राँची ले जाया गया।.... मैं तो उन बेचारों की बात आज भी सोचता हूँ तो बड़ा दुख होता है.... अब तू कहता है कि उन्हें कॉफ़ी-हाउस में देखा। शायद ठीक होकर आ गये हों। शुरू के दिनों की पागलख़ाने की रिपोर्ट भी बड़ी अजब थी कि खम्भा, पेड़, किवाड़—उनके सामने जो भी पड़ जाता उससे लिपट जाते, उसके साथ अश्लील चेष्टाएँ करते और खुद अपने आप को लोहू-लुहान कर लेते!" बीनू की आँखों में आँसू आगये।

"वो खत किसका था?" बात साफ़ थी कि सारा पागलपन उसी खत को लेकर था।

"खत तो मिसेज़ तेजपाल का ही था लेकिन लिखा क्या था, यह पता ही नहीं लगा।" बीनू का गला रुँधा हुआ था।

"अच्छा वे चिल्लाने में भी तो कुछ कहते होंगे?" मैंने निश्चित स्वर में पूछा।

बीनू थोड़ी देर झिझकी। उसका चेहरा लाल हो आया, फिर गर्दन मोड़कर दूसरी ओर देखती बोली: "यही चिल्लाते थे कि मैं आदमी हूँ। मैं अभी दिखा दूँगा मैं मर्द हूँ। लाओ, औरत लाओ मेरे सामने, मैं अभी दिखाता हूँ।"

और झक् से मेरे सामने जैसे सारी चीज़ स्पष्ट हो गई। उछलकर मैं सीधा बैठ गया, बौखला कर पूछा: "तो....तो क्या वे...." बीनू के सामने शब्द मुँह पर नहीं आया।

"मुझे क्या मालूम?" बीनू ने एकदम गर्दन झुका ली।

"इसका मतलब तो साफ़ है न?" मैं उत्साह और उत्तेजना से बोला: "तब तो मिसेज़ तेजपाल ने ठीक ही किया।"

"नहीं, तेजपाल वो नहीं थे।" कुछ सोच कर इस बार बीनू ने दृढ़ता से कहा। आँखें उसकी अब भी नहीं उठीं।

"तू क्या जाने !" मैं उसके इस पक्षपात पर झुँझला उठा : "उनकी बीवी इस बात को ज़्यादा जानती है या...."

बीनू एक क्षण चुप रही, फिर जैसे साहस करके बोली : "ये कोई छुपनेवाली बात है ? यह छिप ही नहीं सकती। मिसेज़ रुद्रा ने, औरों ने उनके साथ बीसियों बार डान्स किया है।"

"बीनू...." बात मेरे गले में आकर अटक गई। वह बिना कुछ बोले चुपचाप उठी और कमरे से बाहर चली गई।

मुझे लगा जैसे मेरे दिमाग़ में कुछ नहीं है। सिर्फ़ कोई चीज़ सीसे की तरह ठोस होकर भर गई है। मैं चुपचाप आँखें फाड़े यों ही लेटा रहा।

होश आया तब, जब एक किताब हाथ में लिये हुए बीनू ने हरा-सा एक काग़ज मेरे ऊपर लाकर फेंक दिया : "यह उनकी चिट्ठी का काग़ज है।" इसके बाद वह उलटे पाँवों लौट गई। मैंने काग़ज उठा लिया और बड़ी देर हाथ में लिये सूनी-सूनी आँखों से देखता रहा। बहुत देर तक तो मेरी समझ में ही नहीं आया कि उसका मैं क्या करूँ। फिर याद आया कि बीनू ने इसका ज़िक्र किया था। देखा, काग़ज किसी बड़े खत के बीच का हिस्सा था। एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा, तब कहीं बड़ी मुश्किल से समझ में आया कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। खत एकदम यों शुरू होता था :

"....तनाव टूट जाने की स्थिति तक आ पहुँचा है। सारे दिन अकेली बैठी पढ़ा करती हूँ लेकिन कुछ भी नहीं पढ़ पाती। किताबें खुली रहती हैं, पन्ने पलटे जाते हैं, आँखें अक्षरों और लाइनों पर घूमा करती हैं और लगता है दिमाग़ के बोझे से जैसे पलकें बन्द हो-हो जाती हैं। पता ही नहीं रहता कि चारों तरफ़ क्या होता रहता है।

जाने क्या हो गया है यह मुझे। सारे दिन सर्दी लगती रहती है और बदन पसीने से तर-ब-तर रहता है। नींद पूरी तरह आती ही नहीं। जाने क्या-क्या घूमा करता है दिमाग़ में।

....याद है एक बार तुमने लिखा था : 'हम लोग एक दूसरे को सँभालने, सँवारने, और बनाने में मदद दें, दुख और कमज़ोरी के क्षणों में उसे बाँटकर एक दूसरे को हल्का कर सकें, बल दे सकें....' कुछ कर सकते हो बोलो? मेरे दिमाग़ से यह बोझ उतार सकोगे? इस तनाव से पीछा छुड़ा सकते हो....? मानोगे, मैं आजिज़ आ गई हूँ....

....सुनो, एक हफ़्ते भर को आ जाओ न....मैं तुम्हें क़तई परेशान नहीं करूँगी सारा दिन....कुछ देर बातें करेंगे बस, फिर तुम बैठे वॉयलिन बजाया करना....

....साहिर की लाइनें बार-बार तुम्हें लिखने को मन करता है :

कहीं ऐसा न हो कि मेरे पाँव थर्रा जायें
और तेरी मरमरी बाँहों का सहारा न मिले
अश्क बहते रहें, खामोश सियह रातों में....
और तेरे रेशमी आँचल का किनारा न मिले....''

....बस, खत यहीं समाप्त हो गया था। जाने क्या लिखा होगा अगले पन्नों में, बड़ी देर मैं सोचता रहा। जानता था यह पत्र मेरे लिए नहीं हो सकता....फिर भी एक ठण्डी साँस दिल को चीर गई—काश, यह खत मेरे लिए लिखा होता....

और रात भर मुझे अजब-अजब सपने आते रहे। मैं मन ही मन अपने-आपसे बातें करता रहा। मैं अवचेतन रूप से रात भर मिसेज़ तेजपाल ही की बातें सोचता रहा....कुछ तस्वीरें बार-बार आँखों के आगे आती रहीं....मैं चाँदनी रात में ताजमहल के पास घास के लॉन

में हथेलियों पर सिर रक्खे चित लेटा आसमान को ताके जा रहा हूँ....कोई सीढ़ियों पर घुटनों में सिर गड़ाये चुपचाप बैठा है, यह छाया मेरी चेतना पर अंकित हो गई है....मेजर तेजपाल मिसेज़ तेजपाल की पीठ में बन्दूक की नली अड़ाये उन्हें जाने किन ऊबड़-खाबड़ रास्तों से धकेले लिये जा रहे हैं। गुड्डी के हाथ में ढेर से कमल के फूल देकर वे खुद गुब्बारे उड़ाती हरियाले मैदान के ढाल पर मेरी ओर दौड़ी चली आ रही हैं....दौड़ते-दौड़ते देखता हूँ कि मिसेज़ तेजपाल का कहीं पता नहीं है सिर्फ़ गुड्डी ही दौड़ी चली आ रही है अकेली....भयानक आँखों वाली अलसेशियन कुतिया—कमर से ऊँची और तगड़ी—उन्हें सीढ़ियों पर, सड़क पर और न जाने कहाँ-कहाँ घसीटे लिये जा रही है....कलाई में चमड़े का फीता लपेटे, कुहनी पर सफ़ेद पट्टी बाँधे गाती हुई वे खिंची चली जा रही हैं....खिंची चली जा रही हैं....कमान बनीं....अचानक देखता हूँ कि कुतिया के पीछे मिसेज़ तेजपाज नहीं बल्कि गुड्डी खिंची जा रही है....आवाज़ मेरे गले तक आकर रह जाती है—'गुड्डी ! कलाई से फीता छुड़ा लो, उसे छोड़ दो....वह कुतिया बड़ी भयानक है....तुम्हें जाने कहाँ गड्ढे में गिरा देगी....' और फिर सारी तस्वीरें गोलियों के फूल में बदल जाती हैं जो अँधेरे में आतिशबाज़ी की चरखी की तरह फूटता हुआ सारे आसमान को ढँक लेता है....

सुबह एक गहरी-सी छाप मन पर थी : पता नहीं वह तगड़ी अलसेशियन कुतिया उन्हें कहाँ खींच ले गई....